

॥ श्री ॥

॥ इस गुणविलास छपाणे में प्रयत्नकर्त्ता तथा सहायकर्त्ता
सेठ श्रीमान् मोहनलालजी पूनमचंद गोलछा.

(अर्पण पत्रिका)

मीनामरुतस्तव्य, बांठिया सेठजी, श्रीहजारी मलजी ऐसैं उदार
दिलवांछे, जिनोनें २२ समुदायवालोंमें, ज्ञानशुद्धिवाले,
सहस्रो मुद्रायें खर्चकिया, अपने समुदाई दीनदीनोका
उदार करने में भी हरवस्तु कटिबद्धये, प्रार्थना
सफल करणा तो उनोंका परमशीलया, इस
ग्रंथके छपाणेमें भी अधिकांश सहायक
श्रीमान् हींछे, अब परलोकसिद्धाये, ऐसैं
नररत्नको शांतिमिलो, उन श्रीमान्के
पात्र श्रीबहादुरमलजीभी अपने
पितामहकीतरे दिनोदिन धर्ममें
दानशूरता दिखायगें, कारण
वीरोंके वीरही होते हैं.

[अथ ऋषभदेवजीकी लावणी ।]

॥ श्रीसनमाकै कसूरे चीनती, चरणकमलमें चितलाउं
 हे जीरेचर० ऋषभ देव महाराज, करो सिद्धकाज, आज
 मैं जसगाऊं, [टेर,] अबल हकीमत कहूँरे आपकी सरवा-
 र्थसिद्धी चचिया, माता कूखै आया, यहोन सुखपाया
 उदर मैं वासलिया, चबदै सुपना आपारे मातानें मा-
 ताका हुलसा जोहिया, गई पतीकै पास, अर्थ दैवो भास,
 सुनो तुम भेरा पिया, [उढावणी] हे अय कहता राजा
 सुपना भला तो है आया, एहां आया, तुम यहोत
 खुसीसँ रहो हुसी जिनराया, एहां राया, माता मनमें
 हरख पांमियो जायके मंगल गवाडं, ऋ० १, सुभ धेला
 मैं जनम लियो प्रभु, इंद्रादिक मिलकर आये, मेरू पर-
 यतपर, जाय, देव सय आय, महोच्छव करवाये, आठ-
 जानकै कलस मंगाकै, सुगंधजलसँ भरवाये, प्रभुजीका
 जसगावै, चमर ढोलावै, प्रभुजीकूं नवाये, [उढावणी]
 हे इंद्राण्यां मिलकै भगतीसँ मंगल गावै, एहां गावै,
 अठाई महोच्छव करकै पीछा जावै, एहां जावै, इंद्र
 प्रभुजीसँ करै चीनती स्वर्ग लोकमें मैं जाऊं, ऋ० २,
 कंचन वरणी देह प्रभुकी वृषभ लंछन है सुखदाई, धनुष
 पांचसँ है काया मेरे मन भाया यही है अधिकारी, जुगला
 धर्म निचारै प्रभुजी कला यहोसर सिखलाई, वरसी दांन
 प्रभु दिया, जगमें जसलिया, फेर दीक्षा पाई, [उढावणी]
 हे सय देवी देवता दीक्षा महोच्छवमें आये, एहां आये,
 हे प्रभुजीके चरणमें लुल २ सीस नमाये, एहां नमाये,
 च्यार सहससँ लीनी है दीक्षा जिनकूं मैं निन उठ घ्या-
 ऊं, ऋ० ३, एख चौरासी पूरय आयू थीस लाख रखा

फर पदे, पूरे लाभ दीक्षा पाली, गान्धर्वमें गाली, एवं
 भगवंत वदे. महम वरम छदमनरगा प्रमुखाकी रक्षा
 केवली गाली. मौर्य पाप्मानार, मनी दित्तार, मोक्ष
 नगरी पाली. [उदायणी] हे कहे आर्य मद्रागमा प्रमु-
 र्जीका जसमाने, एहां माने, हे देवो आयागमम निवार
 पही हम माने, एहां माने, मुनमंजन आपो मेरेहें
 आपका दरशाग में पाऊं, अ० ४, इतिवर्द ॥

[नेमनायजीकी लावणी]

॥ कहती है राजननार लांगी मद्रियां हे इसरो इतने
 लारो दिलजानी. नेम गो गिरनार मालीरी नर मर
 मोरी नहीं मानी. [हेर.] मिममें जान यणाप नें मनी
 हे जूनेगड प्रभू आपे हैं, उपन बोट जाइवके मोर मेर
 जान मजाकर लागे हैं, इन्द्रादिक सब नर हगे म
 मरिपन मंगल गाये हैं, तरेतरेका बल बल मुन
 कर राहु हरगाये हैं, [उदायणी] हे कर हने मंगल
 सारीरे, लारो पनरो फूल हजारी. नर नर
 हरभारीरे, जिनकी शोभा लगनी लगे नर नर
 ल उंडे सारीसदियां हे, घूम गन बलबल
 लगे लकी पुकार लारीस...
 लगे लगे पसुं भोजन...
 लगे लगे लगे लगे...

समझावै, नेम गयो तो जावोवाईजी और यींद तोहे
 परणावै, जुगमें यींद अनेक ह्यारी स० जोधारे चितमें
 चावै, परसनकर मनोगमवरलो यूसखियां सय बतलावै,
 [उडायणी] हे जय राजुलयूं फुरमाईरे, ह्यारे और पुरुष
 सबमाई, हे मैं किसीकूं परणूं नाईरे, ह्यारे एक यींद जाडु-
 राई सुण राजुलकी बान ह्यारी स० सखी लगी सय पि-
 छताने ने० ३. सय सखियां लेलार ह्यारी स० चाली रा-
 जुलगद गिरनारे, उठी घटा घनघोर मारगमें मेहवरस्यो
 मुसलधारे, सय सखियां गई बिछड ह्यारी स० न्यारी
 २, हुपगईसारे, चीर सुकायण काज सती जय गईहै
 गुफाकै मझारे [उडायणी] हे सनी रहनेमी समझापोरे,
 उनकूं धर्मको राह बनायो, हे जय रहनेमी सरमापोरे,
 सनीकूं बारंवार खमायो, आवड महात्मा गावै ह्यारीस०
 पिऊसे पहली गई निरयानी, ने० ४, इतिपदं ॥

॥ प्रभु जाय चढे गिरनारीरे, पानैं छोटी है राजुल-
 नारी, सुनी पशु पुकारी दयाचिनधारी बारी ममनाकूं
 मारी विसारी, [टिर,] जलचरी खेचरी मरतांउवारी बानैं
 मिरगाकी सुनी पुकारी, पशुबांको छोडदीना, प्रभुजा० १,
 महमारी बनमें संजमलीनो पंचमहाव्रतधारी, ऋद्धिना
 त्यागकीना, प्र० २, चौनीस अनिशय पैनीसवानी, प्रभु
 भये हैं केवल ज्ञानी, आवडनैं छंद कीना, प्रभु जा० ३
 इतिपदं ॥

[निवेदन]

॥ पूज्य श्री श्री लालजी ऋषिराज अच्छे सुशील क्षमा दया निष्ठुहता इंद्रीदमनादि व्यवहार क्रियासँ विराजित साधु आर्यायें भाये वायोंसँ सेवितचरण, आर्यावर्त्तमें प्रसिद्ध एक महापुरुष है, किसी गृहस्थ गृहस्थणीसँ पद्म-व्यवहार नहीं करते घातुकी नाडीका चम्माभी इनका साधु कोई नहीं लगाता, कपडा रंगने नहीं, न साबुन धोते हैं, रातपडे पाद सूर्य उदयतक धर्म ध्यानके यास्ते भी यह और इनके साधु स्त्रीकों अपनेपाम नहीं आणे देने, साधुओंके यास्ते जो भकान गृहस्थनँ वणघाया उसमें नहीं उतरेते हैं, गृहस्थका घातु वगैरे पाद्य काममें नहीं लाते हैं, कठोर ओर मर्मभेदक शब्द नहीं बोलते हैं, महान्पूर्वाचार्य श्रीजिनदत्तामूरिः प्रमुखका पडा उप-गार जैनधर्मपर मानते हैं, पूर्वाचार्यरचित आगम प्रकीर्ण पंचांगीयुक्त मानते हैं, पाथीम अभक्षका खाणा पीणा बुरा समझते हैं, व्याकरण पठण अच्छा करमाते हैं, जिनमंदिरकी भक्ती करणेवालोंकी बुराई नहीं करते हैं, बलके श्रावकका कुलाचार धर्म करमाते हैं, अपने संग-ग्रहस्थ दूरदिमावर बोह्याणे चलेनो मना करते हैं, निश्चाकृत आहार नहीं लेते हैं, गृहस्थकों कहकर गृथा-दिक नहीं लिखाते हैं, मीषा लिखा हुआ मिलै जरूरी होय तो बहरते हैं, चिनपटिले है पुस्तकादिक अपनेपाम नहीं रखते हैं, न दिशावरोंमें पुस्तकोंकी पारसलें संदूक मंगवाते हैं, पापग्राना आदिकमें परागत यह और इनके साधु नहीं जाने हैं, ग्रहस्थोंमें पगचंपो आदिये पायब नहीं कराते हैं, तपमी पडा भारी यह और इनके पापीलोक करने हैं लिफाफा काट माचू पहरने नहीं

नपास रखते हैं और ऐसे काम करनेवालेको साधू नहीं समझते हैं इत्यादि अनेक व्यवहारोंसे अपने साधुवेषको शोभारहे है, इत्यादि गुणोंके विलाससे इस ग्रंथका नाम गुणविलास धरा गया है निश्चयसम्पत्तको केवल बिगर कोन कह सकना है, लेकिन अच्छा व्यवहार हमसे इस लोकपरलोक में लाभदायक है अटार्ई छीपके पनरे कर्म भूमी में रजोहरण पात्र और गुच्छके धारणेवाले जिना-ज्ञामुजय पंचमहाव्रत पालणेवाले अठारै हजारशीलांग रथ धारणेवाले अखंड आचार चारित्र पालणेवाले गुंसें सर्व साधुओंको सिरसें मनसें यंदन करनाहं, इस ग्रंथको छपाते प्रथम ब्राह्मक वणकर-

(सहायता देनेवाले श्रीमंतोंके नाम) ३०

श्रीयुत जोरावर मल हिम्मतमल माछू	५३।)
श्रीयुत अगरचंद भैरूदान सेठी	७५।।।)
श्रीयुत चांदमलजी डागा	१८।।।)
श्रीयुत हस्तमल लिखमीचंद डागा	१८।।।)
श्रीयुत सतीदासजी तातेड	११।)
श्रीयुत शिवदासजी कावडिया	११।)
श्रीमानसेठ पेमराज हजारीमल बांठियां	३००।।।।)
श्रीयुत गणेशीलाल डालचंद माछू	१८।।।)
श्रीयुत लाभचंदजी श्रीमाल	१५।।।)
श्रीयुत अगरचंदजी पूगलिषा	११।)
श्रीयुत मोहनलाल पूनमचंद गोलछा	१५।।)

[ये पुस्तक बिगरमूल्य विकानेर पास भीनासरमें सेठ पेमराज हजारी मल्लकेपास मिलेगी, मूल्यसें विद्या-शालामें-

अथानुक्रमणिका.



मंगलाचरण श्रीश्रींसी	१
शृंगारानर्जाहत सबइया १३ पर्यायोक्त उत्तर	२
भारताविज्ञान मरदरा ३१ सा	१९
पाच खादियोंकी चरचा सबइया ३१ सा	२९
मन्मथगड २४ तीर्थकरोंका सबइया ३१ सा	३५
साधुगर्भन सबइया ३१ सा	४१
कुत्रियाशिक्षा ३	४९
बोहमजाड मुपनकी, सिंहाय	४९
जैजिनमोंकार, पद	४९
प्रभु नेननाय त्रिमुवनतात, लावणी	५०
पानविन एसा, लावणी,	५१
प्रभु नेननाय नजगयेसाथ, लावणी,	५२
माहाविदेहमे चोथो आरो, मीमंथरसायन,	५३
सीमंथरम्याम इकचिनतंदू होवेकर जोडने,	५४
राजगृहीनावासिपार्जी, जवूतिसाय	५५
चंदनवाडार्पने लावणी, सनानीक ओरदधि०	५७
देस्तत भूरी ह्याड तमासा, लावणी,	६६
कारम न चावि अंहीनार्च, लावणी	६८
श्रीजिनवरदीशार्जी ये उपदेशक	७०
सात विमनन्तसेरो कोई, लावणी	७६
कयो मान बजाजी, लावणी	७७
मदामोप मूत्र ल्यो प्याग १३ पधियोक्त निश्चा	७७
धून् भद्रजी कियो चोनासो, लावणी	७९
पूजग्रीगन्दीरी लावणी, श्री श्रीमदाराज पूजजी	८०

श्रीहृकममुनि महाराज० पूज श्रीलालजी लावणी	८२
मन वचकायलाय प्रभूसें, कवनायजीकी लावणी	८६
करलै पूजचर्णका ध्यान० उदयचंदजीरी लावणी	८७
हृकम मुनि दीपै जगमाही, लावणी	८७
मुन्नालाल मुनि महातपधारी, लावणी	८८
किरपा रामजीकी लावणी	९०
गैनचंदजी गुनचान, लावणी	९२
हरचंदजीठत सवइया ३	९४
शरणमें आया तुमारीरे, कर्मचंदजीकी लावणी १	९४
मुनिकर्मचंदजी सहरवीकाणे आया, लावणी २	९६
पटकायाके पीर मुनीमर कर्मचंदजीकी लावणी ३	९७
कर्मचंदजी महाराज जाउं बलिगरीरे लावणी ४	९८
लावणी शोभालालजीकी	९९
मिरदारोजीकी लावणी	१०२
कायामे ज्ञान कर धरा ध्यान लावणी	१०३
ध्यान नित धरना नेरारे पार्श्व प्रभु लावणी	१०४
मुगलिरे मारग दोहिलो	१०५
श्रावक करणी सिन्हाय, ॥ श्रावक किम उतरेपागे,	१०७
ओ मारग नग साधरो, मिहाय	१०८
मुणो २ अगरेज बहादुर गऊ अरजी करली	११०
मप्रह करणेकी प्रशान्ति	१११
कर्मभदेवजीकी लावणी मीमिनपाके करू वीनली	१
करती है राजकुमार मोरी महिया है	२
प्रभु जाय चंडे गिरनारी बानें छोटी है राजकुमारी	३

(जाहिर खबर.)

॥ श्रीजिनायननः विद्याशाला, बीकानेर, राजपूताना, उपाध्याय श्रीराम-
लालजी गणिकी सर्कसे इतने पुस्तक छपकें प्रसिद्ध हुये हैं नगदी निग्र-
बलसे मिलता है, परदेशी ग्राहकोंको । बी । पी । से भेजा जाता है वरंग-
पत्र नहीं लेंगें, जो परदेशी ग्राहक प्रथम पुस्तक । बी । पी । से मंगाकर
फेर नहीं लेंगा वह धोखावाज अपने २ इष्टधर्मको गुनहवार वे मुख रह-
रेगा पुष्ट विक्रमे कागज भारतवर्षके नामी निर्णयसागर प्रेसके अक्षर शुद्ध
छपाई मसहूर है, महाराज उपाध्याय श्रीजीके जैनसिद्धांतानुसार प्रबल
उक्तियुक्तिकेभी अमृतरसके पानकरणाभिलाषी हमेश इन ग्रंथोंके रसिक
बन रहे हैं पढ़िये २, छीजिये २, विलंब न कीजिये, सारतत्व देखके
धन्यवाद दीजिये, छाँकीकसे बाकबहोप अध्यापनरस पीजिये—

(छपे हुये ग्रंथोंके नाम.)

॥ करुणावल्लीसी दादासाहिबके गुणानुवाद प्रणक्ष दरसाव देणका

मंत्रयुक्त पूजा ॥

मिहमूर्ति भाग प्रथम ॥

मिहमूर्ति भाग द्वितीय ॥

आधक लोकोंका राजगारी ग्रंथ, धर्म, धन, राजनीति, अनेक दृष्टांतयुक्त १)

६ आणान्धक्य अर्थ, कार्य सिद्ध देणगेकू शकुनावली, जीणा,

मरणा, कान्, मुखाळ, जीन, हार, इत्यादि अनेक वान

जाणनेकू जैन स्वरोदय ॥

जिन पूजामहोदधी, इसमें ३७ गायन पूजा मंत्रयुक्त संवैविधि २॥

रत्नसागर नूतन, इसमें जैनधर्मजाटोंका सर्व धर्म कर्तव्य, बडेस्नवन,

छोटेलवन, निशायें, चो दानिये, तपस्यावैवि, १२ मासपर्या-

यिकार, लावणी याँ जैनधर्मजाटोंके रखगे योज है ५)

वैद्य दीपक, ये ग्रंथ सबगृहस्थोंके रखने योग्य हैं रोगपासभी नहीं आ सके ऐसे खानपानका वर्त्ताव धरा गयाहै, पढ़नेसे मालूम होगा, तारीफ क्या लिखें, मनुष्य, स्त्री, बालक, जानवर, और सब तरेके जहरोंका इलाज, देशी, अंग्रेजी, होमियोपथी, और यूनानी, पथ्य, कुपथ्य, सब दवाभोधन, और बणायेकी विधि, दवाधर्मशालोंके पासही रचागयाहै, इसग्रन्थमें सर्वज्ञधर्मका नमूना है; ५)

शकुनशास्त्र, श्रीजिनदत्तसूरि रचित इसमें शकुन चिह्नी, फंदा, कुत्ता, स्याल, हिरण, इत्यादि जानवरोंकी चेष्टासे आगे होगेयाला फल, सब मनुष्योंकी चेष्टासे शुभानुभ फल, अंगदुरक्षणका फल, गिलेरी गिरनेका फल, मेघ कब होगा, काल होगा, या सुकाळ, इस वर्षमें फोन पस्तु तेज रहेगी, कोनमी भंडी बिकेगी, मरान करणे जर्मनके धूलके रंगका शुभानुभफल इत्यादि जाननेको ये ग्रंथ साक्षात् केवल ज्ञानकी मान दिली है ॥)

महाजनवंशमुक्तावली, इसमें सब ओमश्लोके अलग २ गोत्रोकी उत्पत्ती मद्देशगी, अप्रवाल, धावगी, नरमिष्णुरे; गोरारे, दृवडं, पोरवाल श्रीमाल, उत्पत्ती दमावीमा होगेका वषा ८४ गछोत्पत्ती, श्रीभोजगदत्पत्ती, धावकोंको, आचार, विचार, शिक्षा ॥)

छरतर बृहद्रथका पंचप्रतिक्रमण अर्धयुक्त इसमें, शतस्मरण, भक्त्यमर, कल्याणमंदिर, छोटी शक्ति, बृहच्छक्ति, ऋषिमंडल, त्रिनयनर, निरयनरुत्त, दोसाग्रहार, जगद्गुरु, नवग्रह शान्तिमंत्र तथा पूजाविधि, प्रतिक्रमण पांचोंकी करनेकी विधि, पोमहविधि इत्यादि सब अर्धयुक्त.... ३)

(इन सब पुस्तकोंके मिलनेका ठिकाणा.)

॥ श्रीकानेर, मारवाड, उपाध्याय श्रीरामलालजीगणिः, विद्याशाला, मुंई, विचला मोईवाडा, श्रीचिंतामणिजीका मंदिर, वा । श्रीजीवणमलजीगणिः, बैद्यपास, नाटपेट पत्र नहीं लेंगे, ये पुस्तकें सब सरकारके ऐन मुजब रजीटर कराई हुयी हैं छापेगा सो सजा पार होगा, पुस्तक मंगाकर फेर लोटायेगा वह अपने इष्टधर्मसे हरामी करेगा.

॥ स्वप्नसामुद्रक छप रहा है, इसमें स्वप्नका फल, सामुद्रक, स्त्री, पुरुषोंके, शिरसे परतक, अच्छे और बुरे चिन्होंके सब फल प्रगट किया है भाषा कविता बंध है मूलग्रंथ रचयीता भद्रबाहु स्वामी है, छंद रचयिता । श्रीरामलालजीगणिः है, इसमें कामशास्त्रका कुलसार दरमाया है, शानोंको तो बैराग्यका मूल है, कामी पुरुषोंको कोक दरमेगा, ग्रंथनिर्दोष है, रचनेवाले मूल. सर्वज्ञपीत-रागकी बार्णाके अनुसार है, किमीको आरमी; किमीको तवा मूझेगा,

चावीस समुदाय.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय ।
: तारो, (मन्त्रालय)

॥ श्रीधर्मशीलसद्गुरुभ्यो नमः शाश्वतशाश्वत् सिद्धा-
यतनस्य सिद्धेभ्यो नमः इति मंगलं ॥

अथानेक पदानि लिख्यते ।

अथ चौबीस तीर्थं करोंकी लावणी, बालपणिहारी,
चौबीस जिन सय देव हैं, मुगतीकै दाना: सदा मैं तेरा
जस गानाजी, देर, कपम अजिन महाराज, निरणकी जि-
हाज बड़ी भारी, संभवकी घाणी सुखकारीजी, अभि-
नंदन गुणधार मुमनकी जाउं बलिहारी, पद्मप्रभुकी सु-
रत पियारीजी, उद्यावणी, जनममहोद्यकरवाभणी,
इंद्रादिक सहु आय, मेरुगिरिलै जायकै, मंगल कलस
ढोलाय, नेकचार जो करणा है सो करकै सय जाता,
सदा मैं तेरा जस गानाजी, १, श्रीमुपारसनाथ जगत वि-
क्षान प्रभुचंदा, सुविधि शीलल सुखकंदाजी, श्रेयांसवास-
पुज्य, सेवा करता मुरनर इंदा, सेवकका काटो भयकं-
दाजी, उद्यावणी, देवलोकानिक आयकै, प्रतिषोष्या जि-
नराय, तारो तारो जगभणी, गृह्या सयद सुणाय, तत्-
क्षण प्रभु संजम लेकर तोहै जगनाता, सदामें ते० २,
विमल अनंत धरमनाथ सोलमा शानि जिन जाणो,
जिनोंका ध्यान हियै आणोजी, कुंथुनाथ अरनाथ बहु-
गुणपात्र पिछाणो, पद्म झूठी कुमनि ताणोजी, उद्यावणी,
च्यार कर्मधन घानिया, कीनाछै जिन दूर तपजप करणी
खपकरी. पाम्या ज्ञान पट्टर, चार तीरथसो थाप आप

फिर करता कहलाता, मदा में ने० ३, महिमुनिसुवत
 रीममा जाणो तुम भाई नेमी है मवकं मुखदाईजी,
 रिठनेमी पागम प्रभुकी मज्जमा हद छाई वीरप्रभु सासन
 चरनाईजी, उडावणी, अष्टकर्मदल चुरक, पोहचा है निर-
 याण, अदल मुखों में जायक कीया आप अमथान, ज-
 नम मरणकी निरुमकाममें केग्यो नहीं आता, सदा में
 ने० ४, चोरीमो महाराज ग्यो अब लाज आज छारी,
 सरणमें आगोहं यांगीजी, प्रभुगुण अनन पावै नहीं अंत
 सुणो पियारे, कर्नगुण इंद्रादिक हांगीजी, उडावणी,
 कनीराम जिनद गुण गाया मन अनि कोड, एक जिह्वा
 मेरे प्रभु, काहा लग गाउं जोड अगम अगोचर तुम अ-
 बिनामी पार कोण पाना मदा में नरा जस गानाजी ५,
 इति पदं ॥

अथ मवइया घनामगी चालरा लिख्यते ।

चोथे आरं कंग वषे तीन सार्दी आठमहिना बाकी रह्या
 जदवीर मुगत पथान्या है पीछे जिन शामनमें मोटा मुनि-
 राज धया आप निन्या ममारथी पणा जीवनान्या है, स-
 म्वत अठारं पनगं सालचेन मुदिनयम मुकवार दिननिहव
 निकाल्या है, छेप करी देव गुरु धर्म नीमं भेद करी मोटो
 मन झाल्यो मटा ज्यानें गुरुधान्या है, मवइयो मवायो
 फीनो घनासरी नाम दीनो कृपा राम कहै खेचो पार दया
 पाल्यां है १, चोवीशमा महारवीर देव ज्यानें चूका कहै
 ज्यांके नांमसेनी माथो भुंडी मांग म्वावे है, गुरुगीनारथ
 दया देवी काट्यो संसार थी ज्यांकी निचाकर सठ ज-
 नम गमावे है, जीवके वचाये मांहे पाप कहै दशआठ

कां करा मेलीनें घोघा लोकानें घेकावे है, देव गुरु धर्म
नीन तीनांमें यतावे भिन्न सिद्ध पाचडेमें कणो न्याय
नर्क जावे है, सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो
कृपाराम कहै दया पुन्यवान पावै है, २, सान निहव
आगे हूया उचाईमें जिन काया आठमो निहव सिद्ध पा-
घटियेमें चाल्यो है, वाणिपेको सुन ग्राम कंटालेको
घासी गुरु गीनारथ दया देखी दुखसुं निकाल्यो है, अ-
विनीन हूयो गुरांकर दियो जुवो मोहकर्म उदय हूयो
सठ खोठो मत झाल्यो है, चूका कहै देव सतगुरांमें
यतावे दोष जीव बचायां पापकेवै योले जिमझाल्यो है,
सबइयो सवायो कीनो घनासीरी नाम दीनो कृपाराम
दयाधर्म पुन्यवान झाल्यो है, ३, जीव दयामुद्रांमांहि ठाम
रुक्ही जिन जीवके बचायां पाप कठेही न जाणी है, दशमें
अंगरे मांह ग्यांनी दीनो फुरमाय सप जीव दयाकाज
कही जिनवाणी है, सूत्र आगम टीकाचूर्णीपपन्ना मांह
जिहां तिहां जोयो जीवदयाही बगवाणी है, दया रुचै
कोई पुन्यवान रे घटमांह निहव कसाइ मांस खावै जिणां
ताणी है, सबइयो सवायो कीनो घनासीरी नाम दीनो
ज्ञानीका वचन सस हिरदेमें आणी है, ४, श्रेणक रा-
जारे सुत हाथी भवदया पाली मृगरथराजा दयाकाज
घान्यो मरणो, धर्मरुचि दयाघार करगया खेवो पार श्रे-
णक पडहो बजायो सुत्रांमें निरणो, नेमजिन दया पाली
छोड दी राजुल नारी मेनारज दया पाली मेड दियो
मरणो, तेवीसमां जिनराय तापसके पास जाय जीवाने
बचाय दियो नवकारको सरणो, सबइयो सवायो कीनो
घनासीरी नाम दीनो जीवदया धर्म पालो जोधे चाहो
निरणो, ५, आज्ञांमें आलस मत करो जिन वैणसुणी

किनरोक रैचणो, सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम
 दीनो पारख्यातो करो यहतेलारे नहीं पैचणो, ९, आव-
 करे तीन करण तीन जोग त्याग हुवा भगवती सूत्र मांहे
 धीरजी बतायो है, अंचइजी आवकरा सातसेही शिष्य
 हारे तीन करण तीन जोग पाप योसरायो है, आवकने
 दशाश्रतस्कंधमें श्रमण भून कछो उपार्हमें जिन सुसाहु
 बुलायो है, ज्ञाताजी सुधमांहे ज्ञानी दीयो कुरमाय आव-
 कनी समाग्रत आवक नाम पायो है, सबइयो सवायो
 कीनो घनासरी नाम दीनो आवकने जहर घटको कहणो
 फटै आयो है, १०, कवाड देहेडी जिनमांहे नहीं साध-
 पणो उत्तराध्ययन अध्ययन पंमीसमों बतावेहै, जिहां नहीं
 कवाड देहेडी पदयो नाम जिहां मनोहर इत्यादिक रत्नां
 दोष थावे है, पृहदकल्पमांहे रहणो साधुनें अभंग द्वार
 आर ज्यानें रहणो जटै पदो पंथावे है, गोचरीकी
 पटीकरो नामले निवेधे ज्याने कहणो गोचरीमें साधु
 आर ज्यांजी जावे है, सबइयो सवायो कीनो घनासरी
 नाम दीनो कवाड निवेधी पदा कपाट्या जमावे है, ११
 भगवती समक पनरमें केरोनाम लेई चोर्थासमा महावीर
 ज्यानें पूका केवे है, अनुकंपा करी जिन आपरो पचापो
 शिक्ष अछता ओगण घोली माथे आल देवे है, समणा-
 समणी कोई नदीमांहे यहता हुवे आशाने उद्दंघ साधु
 आप काटलेवे है, अनुकंपा कीजै जिनपारको मिटायो
 दुग्न उत्तराध्ययन अध्ययन पनरमें जेयहै, सबइयो
 सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ज्यांको गेवो पार
 जिन पचनामें रैय है, १२, कालादिक बारकरो मरण
 बतायो धीर सोमल मरण जिननेमजी पनायो है, निल-
 छोडमांहे निल धीर जीवनायो अर मरण गोसालेकेरो धीर-

जीजनायो है, द्यारकागे राह नेम जिणभाज्योमें सुख ना-
 गर्थीगोदीला निगा जानामांही आयोह, महाशनक श्रावक
 रेवनीको मण कयो गोनमजी मुकी जिन प्रायच्छित्त दि-
 रायो है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो आगम
 धिहारी देख्यो जिम फुरमांयो है १३, पुन्यपाप आज्ञामें नहीं
 आज्ञा बार नहीं छद् शारो कायो नेरे द्वारमें गुं गावै है,
 मनमें तो श्रधा एम लोका आग करे कम आज्ञा मांहे पुन्य
 आज्ञा बाहिर पाप बावै है, उचाटे मुच्रमाजि जानी दीनो
 फुरमाय आज्ञा बाहिर पुन्यय र देखनामें जावै है, गोमा-
 लाजमाली जाण नापमादि नज प्राण देख छुवै आराधक
 पद नहीं पावै है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम
 दीनो आज्ञाका आराधक सुख भुगनाका पावै है, १४,
 साधु आर ज्यारे महाग्रन नववाह मांहे ओछे अधकरो
 पाठ कंठही न आयो है, आर ज्याने पहलो ग्रन भांग
 बांधो राखणेको धानराग देव ऐसो एम न बनायो है,
 आर ज्याने कवाट देखण ग्यांलणेको नाम साधुविना
 न्यारो मठ मुंढेमु उठायो है, कवाट देखण ग्यांलणेको
 नाम आयो जठे साधु आर ज्यारे पाठ नेलोइ बोलायो
 है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो बृहत्क-
 ल्पमें आर ज्याने पडदां बांधायो है, १५, नाप दाप लगावै
 जिणामें नहीं साधपणो कपटमुं बांले मठ ज्याने हम
 केवणो, आठंयरकाज इणभान पच्चक्क्याण देखै दरशन-
 विनाधे आश्रय नहीं सेवणो, केई गांम जावै हम सोगन
 करावै दुपचक्क्याण उपदेश साधूनें नहीं देखणो, दरशण
 आवै केई आरंभ करावै आय भाव नाही भावै यूं साधूनें
 नहीं लेवणो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो
 पारक्षातो करो बहतेलारे नहीं वेवणो, १६, रायप्रसेणीमें

परदेशी राजा मुनीपासे समझ्यानें वन लिया पीछे दान
 दियो है. आरंभसहिन दानादिक प्रभु पूछे सुयगडांग
 मांहे मुनिराज मून लीयोहै, दशमे अंगमें दान देवणो
 निपेधे जेनें बीनरागदेव झूठा बोलो चोर कायो है, दान-
 दया सुत्रांमांहे टांम २ कही जिन दान दया निपेधे जिणा-
 को फटो हीयो है, सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम
 दीनो दान दया रसकेई पुन्यचांन पीयो है; १७, केसी
 समणनें चित्र प्रधान कयो परदेशी धर्म सुण्यां घणीदया
 पालसी, समणभिक्षारी सुग्व डंडकर धोडो लेसी दोपद
 चोपद घणां जीथानें उपारसी, आगम विहारी चित्र
 परधान संती कयो जाके हाथे धर्म आवै चार बोल घा-
 रसो, उपावसुं राजानें प्रधान लायो मुनिपासे घाणी मुणी
 राजा जाण्यो घेही गुरु भारसी, सबइयो सवायो कीनो
 घनासरी नाम दीनो राजनें असार जाण्यो देखी ज्ञान
 आरसी, १८, अनंत चौबीसी सब दान दे संजम लीयो
 देवे देसी अनंती चौबीसी जिन कयो है, दान दियो बीर
 ज्यानें परीसह उपना कहै सठ ज्यानें कहणो दान मल्लि
 जिन दियो है, पहर छदमस्य रही केवल ज्ञान लही आटूंही
 करम दही शिवसुग्व लीयो है, चबंद प्रकार दान पही
 लाभ कयो जिन नवभांन पुन्य न्यारो समुधपमें रयो है,
 सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो निहव गा-
 हर जेम भइपेलार भइयो है, १९, पाठकनी बोलो बोल पांरी
 सुद्ध नहीं जिम निहवनें बेस्या भांड तीन लज्यार हितरे
 भांड बोले विकल बेस्याके नहीं शील शर्म निहव कहे
 घूकादेव गुहमांहे केहतरे, चोरादिक सुतनें सोत्तावै
 धोरी तरवानो जिम निहवाके दयारहित याण देतरे,
 मूंजीपणो कपटपन दयारहित हुबै कुसंग निहवाको

[illegible]

कापाले पुन्यबंध कयो निर्जराको नहीं दामियो, सुपगटांगमें कयो मिथ्या कर माम २ संसारमें गले कपटाईमल्य राखियो, निहव कपटकर घोषां आगे इम कहें मिथ्यात्वी आज्ञाके पार करणीमें नाखियो, मयइयो मयायो कीनो घनामरी नाम दीनो मिथ्यान्वी मिथ्यान एक अनुयो गठारमाखियो २४ मुद्रमिद्वानमार चाहदिरदेमें पार निहवांको मन जाणो झुठकपटाई है, छोटनिहवाको संग ज्ञानरूप लागो रंग दयादान गधि जांकी घटीही पुन्याई है, गुग्गीनारथ भेटी मिथ्यामनदियो भेटी क्षमाका सागर गुग्गुभेदया मुम्बदाई है, छनीकद्विष्टिकाय संज-भरुं मनलाय सुगणामगनमुनि बटा गुरुभाई है, मयइयो मयायोकीनो घनामरी नाम दीनो कृपाराम दया-दान कीरन मयाई है २५ उगणीमें माल पत्तीम मयइया कीना छपीश मुणमनीकीजोरीम तिरदेमें पारजो, पार घोले नरके जाय कयो टाणा अंगमांय ओरही सिद्धान्त सुणदिरदे विचारजो, जीवके बचायामांही ज्ञानी पाप कयो नाहीं अज्ञानीके बचनानें दुराईं निवारजो, अननै चौथीमें तिन धर्म कयो भिन भिन इम नहीं कयो मन-लीषांने उधार जो, मयइयो मयायोकीनो घनामरी नाम दीनो कृपाराम कहें जीव दया निस्त पाद जो २६.

अथ कुंडलिषा लिख्यते ।

गृहस्त्रीके घर स्थापनें, पैटणवर उपो वीर, कारलोय छें-कदा, बपे पावकी सीर ? बपे पावकी मीर, कृष्ट मंज-सुंभाख्यो, दशमी काल अण्यवन, छेने तिनका दान-सुदसंजम आराधनां, पण्डे भवजननां, गृहस्थे

माधनें, बैठणवर ज्यो वीर ? जग रोग नपम्या करी, दुर-
 यल धयो शरीर, निण कारण बैठण नणी. आज्ञादी महा-
 वीर ? आज्ञादी महावीर, मानन जमुत्र देवो; विन कारण
 नहीं कछो, बैठणो मुत्रपेवो, मदवावीसे जिनतणा,
 कल्यानीनगुण धीर, जग रोग नपम्या करी, दुरयल धयो
 शरीर, निण कारण बैठण नणी. आज्ञादी महावीर २ नि-
 न्हवकाही भावना, बोलायांने आय, लीला झोली पातरा,
 लारे चाल्या जाय ३ लारे चाल्या जाय, पठ दो नागी ऊठी
 प्रछयांक है निरदोष, कपटस बोले झटी, रूमनारा गृद्धी-
 धका, जिहां लाय जिहां न्याय, निहवकाही भावना, बोला
 यांने आय ३ दोषवलायपायका, पोने चोर अंधार, रोगान-
 सपेनो हींगल, चित्राम यहोन प्रकार ? चित्राम
 यहोन प्रकार, थाप बोधाभर माय, गुह्यां नहीं देजुआय,
 नहीं मिट्ठान वसाय, बोधागुर चेला मिल्या, नहीं पूछे
 निरधार, दोष वलाय पायका, पोने चोर अंधार ४ गृह-
 स्त्रीकं घर जायनें, निहवकथा सुणाय, बृहन्कल्पमें घर-
 जियां, नीजे उद्देशमांय ? नीजे उद्देशेमांह, एक गाथाको
 भालयो, उहां नहीं विम्लार, बोली कारण सुंदाग्यो, कथा
 भट ज्युं मांहीयो, नहीं मुत्रको न्याय, बडे घरांमें जायनें,
 निहव कथा सुणाय ५ निहव महामत्यां कहे, बैठी राखै
 पास, उत्तराध्ययनमें जिन कछो, होयै शील विनाश १
 होयै शील विनाश, लोकमें अपजस थायै, विन भायां यह
 पास, राखतांलाजन आवै, बोधा गुरुचेला मिल्या, नहीं
 पूछनें पास, निहव कैयै महास त्यां, बैठी राखे पास ६ जिन-
 कल्पीनें घरजिया, चार बोल जिन आप, निहव तीन
 छिपायनें, देवे बाड उथाप, १ देवे बाड उथाप
 कपट बोधाभरमायै, समझ्या करै पिछान, अजाण्या

गोता खावै, निहय करता कपटसं, एक घोल उत्थाप, कल्पीनै चरजिया, चार घोल जिन आप, ७ जंगलम आतापना, नहीं समणी आचार, उपासरेमें रह्यणो, कपट पांघी पार १ कपटो पांघी पार, गृहत्कल्पमें आयो, चमैं उद्देसेमांहि, श्रीमुख आपवतापो, कयाड जडयो कयो, लोहिरदेमें धार, आर ज्यानै रह्यणो, कपटो पांघी पार ८ महासत्यानांम धरायनै, संजाय पटली देव, दोहोल्यां ले हाथमें, घब २ करती घेय १ घब २ करती घेय सीखले भेला जावै, साधुस्वांगयणाय, जिणांको लायो खावै, ध्ययहार सूत्रमें चरजियो, बिनकारण नहीं लेय महासत्यां नाम धरायनै, संजाय पटली देव ९, निहवाकूं पहुंचायपा, गृहस्थी जावै लार, आगे जाय ल्यारी करै भोजन यहोन प्रकार १ भोजन यहोन प्रकार, ल्यारकर भायना भावै, पोलापानै जाय, तुरन पानर ले आवै, रस-नारा गृद्धिथका, जिहां लावै जिहां खाय, निहवाकूं पोहचा यपा, गृहस्थी लारै जाय १०.

भटारक भ्रामरकहै, जती खमासण घोल, निहय कै वै भायना, ये तीनूं समतोल १ ये तीनूं समतोल, बुलायां तीनूं जावै, निहय साथ केयाय, सांग लेई भेग लजावै पोषागुरुचैला मिल्या, नहीं आचारको तोल, भटारक भ्रामरक है, जतीखमासण घोल ११ गोसालानै दिग्विपां अन्यमत यध्या अनेक, जमालीनै कयूं दियो, शानी प्रनक्ष देख १ शानी प्रत्यक्ष देख, तिलांको छोटवतापो, पो-घाने इम कहै, इणीमें स्यो गुणथापो, जिन सोमल ब्राह्मण तणो, मरणो कयो विशेष, जो जो कारण जिन कया आगम शानी देख १२ आहार देवै भावसुं, थानै पास आण, रजी आदिक देखनै, देवै पूंकर अजाण १ देवै पूंकर

गोला गाय, निहय करती कपटसुं, एक सोल उन्हाप, जिन
 कर्पीनें बरजिया, बार सोल जिन आप, ७ जंगलमें मे
 आतापना, जहाँ समणी भाजार, उपागरमें ईयणो, कपटो
 सोपी बार १ कपटो सोपी बार, दृढत्वान्ममें भायो, पां-
 नमें उदेमेमांदि. श्रीमुख आपवतायो, कपाट जटमानां
 करो, मोहिरदेमें बार, बार ज्यानें रहयणो, कपटो सोपी
 बार ८ महामन्यानांम धरायनें, संजाय पटली देय, हां
 शोल्पां ले हाथमें, धय ५ करती धेय १ धय ६ करती धेय
 सीखले भेला जाव, ग्रापुग्यांगयणाय, जिणांको गायो
 गाय, व्ययहार सुत्रमें बरजिया, बिनकारण नही लेय
 महामन्यानांम धरायनें, संजाय पटली देय ९, नित्यायुं
 पहंचायया, शृङ्खली जाय लार, आगे जाय गारी बार
 भोजन बहोत प्रकार १ भोजन बहोत प्रकार, पारपर
 भायना भाय, सोलायानें जाय, मुरत पानर ले आय, रम-
 नारा श्रद्धिधका, जिहां गाय जिहां गाय, निहयाकुं पांदया
 यया, शृङ्खली लार जाय १०.

भहारक धामरकर, जमी ग्यमासण सोल, निहय फे धं
 भायना, ३ तीनुं समलो १ ये तीनुं समलो, युलायां
 तीनुं जाय, निहय साथ केयाय, सांग लेई भेय नजाय
 सोपागुरयेन्दा मिन्या, नही आचारको तोल, भहारक
 धामरक है, जमीग्यमासण सोल ११ गोसालानें दिवियां
 अन्यमत यण्या अनेक, जमालीनें फयूं दियो, ज्ञानी प्रत्यक्ष
 देय १ ज्ञानी प्रत्यक्ष देय, तिलांको छोटयतायो, सो-
 पाने इम कहै, इणीमें स्यो गुणधायो, जिन सोमल ब्राह्मण
 तणो, मरणी कलो विशेष, जो जो कारण जिन कथा
 आगम ज्ञानी देय १२ आहार देय भायरुं, धांनें पारो
 आण, रजी आदिक देमनें, देय फुंक अजाण १ देय फुंक अ-

यनो घरतणो, खोली देखो चीत, लेख करावै हाजरी,
 यानो कूडी रीन १ आनो कूडी रीन, केम परतीत न आवै
 जो होवै परतीन, निस्त कयूं लेख करावै, आगे जिनकीधी
 नहीं, नहीं यताई रीन, करे जायनो घरतणो, खोली देखो
 चीन १० आधाकर्मी आहारको, परनिम्न दीसे दोख,
 हीयाफूट भेला हुवै, पूजै योधा लोक १ पूजै योधा लोक,
 हिषे पर्तीनहीं आणे, निरदोषण जल आहार, किणीतर
 ऐतो जाणे, मीठो पाणी राम्बनो, आहारादिकदै लोक,
 आधाकर्मी आहारको, परतक्ष दीपे दोष २० योधानें भर-
 मायवा, निहव मांडी जार, कह कोटी कह कांकरा, पाटी
 रीगटकार १ पाटी रीगटकार, लेख जंवाहीं बचावै, जो
 देखणनं जाय, रागरंग करी रीसावै, अण समझ्यो भरमी
 पटै, समझू करे बिचार, योधानें भरमायवा, निहव मांडी
 जार २१ विन कारण नहीं सुघपणो, निग्रंथी साथ
 बिहार, तुच्छपलेवण नहीं राम्बणो, नहीं उद्देसादिक
 आहार १ नहीं उद्देसादिक आहार, भलोकर भूडोगेरे
 दोष घडी दिन रयां, उधारादिकनं पटिलेरे, साथ आर
 ज्यां साथ रहे, नहीं निशीत अधिकार, विन कारण नहीं
 सुघपणो, निग्रंथी साथ बिहार २२.

नित लावै जो एकण घरसें, यारामें एक आहारजी, दश-
 मीकालिकनी जेमें कछो, साथु नहीं अणाचारजी १
 गाथा १०, श्री वीरजिनंद अनुकंपा कीधी, फोरी लब्धिगो
 सालो बचायो, छ लेइया छद्रस्यके होती, मोहकर्म बस
 रागज आयो १, जीव उठाय छायां मेले तो, जाय महा-
 व्रत पांचूही भागी, या गाथा १० मी घोल ४९ मां, बहा
 मन जिमायां तमतमा पोहचावै साख उद्याध्ययन १४ में
 संजतीरी येयावच लागियां अणुकंपा साथ करे ३, पहला

है दृष्टा कालीपागजी. २०, निग्रीथ उदेसे शारमांमें घीर
भांगा चार कछा साधु ओर आर ज्यांनं भेला नहीं
लेवणो, व्यवहार उदेसे पांचमांमें साधु एतांशुनिः आर
ज्यांनं पामवपन प्रायश्चित्त नहीं लेवणो, निग्रीथ उदेसे
चोपे साधु संज्ञा क्रियांपिना आरज्यारं उपाम रे प्रपे-
छान बैवणो, साधु आर ज्यांनं एक उपामरे आहारा-
दिकमनें घृहत्कल्पमें उदेसे तीजे बैवणो, सचइयो सचा-
पो कीनो घनासरी नांम दीनो कारणसुं आहारादिक
लेवणो नदेवणो, ३०, निहय कपट कर चोपानें पताये
पाठ साधु आर ज्यांनं भेला भोगणोनं रैवणो, व्यवहार
उदेसे सातमांमें एमो पाठ नांही दीलै कंठ किम चोलो
पाठ देगाथोयूं बैवणो, उत्तराध्ययन मोलमें अध्ययन
तीजे घाटमां है श्री पैठे घरी दोष जिहां नहीं टैवणो,
उत्तराध्ययन निग्रीथ व्यवहार घृहत्कल्प आदि श्रीको
परचो वरज्यो पाठ देन्य लेवणो, सचइयो सचापो कीनो
घनासरी नांम दीनो श्रीको कर परसे ज्यांनं टंडकाई
बैवणो ३१ अधिस द्रव्यादिक सेनी कोई पुन्यवान आप
आपको मो पाप टारे दृजाको टरायो है, अशुभ योग आश्र-
यमांहि लियो कछो शुभयोग संवरमें ईमें किस्पो पापो
है, सनत कुमार तीजे देव लोक ऋद्धि पाई चारोही ती-
रयनें सुम्भ शाता उपजायो है, नेमजिन वागमें विराज्या
निण अघसर किमन साहायदे संजमदिरायो है, सचइयो
सचापो कीनो घनासरी नांम दीनो ज्ञाता अंगहमांहि
एमो पाठ आयो है ३२, अनुकंपा निरवय सावय
कहीनें सठ चोपलांके घट घोचो इठोही फसायो है,
अनुकंपा निरवय सावय हुवांथी सठ धरमइलालीमांहि
पिण फेर थायो है, नंदिपेण वपदेश देहनें दिक्षादिराई

चित्र परदेही केही खांसि समझायो है, कोई मुख्य जयणा करी माग्य बनायो शुद्ध कोई अजयणासुं मारग दिवायो है, मयङ्यो मयायो कीनो घनासरी नाम दीनो मारग सावय निग्वय किम भायो है ३३, भगवती स- तक मोलमें उहेमें छटापांछे गननांकी माला जोडा देख्यो जगन्नाथजी, चोथा मुगनारंगमाहे छोटी बडी कही नहीं झूठी हानां जोड मरु बांघाने वरकानजी, समकिन र- तन आचट्यकमें जिन कथो मग्यक्त रत्न जाना सत्रमाहे घानजी, मग्यक्त रत्न नें दोटे धमे सम कथा वनर- तनाको जो बहोन पम्बपानजी, मयङ्यो मयायो कीनो घनासरी नाम दीनो समकिन पायां निश्च मुगनीमें जा- तजी ३४ अन्नवस्त्रादिक दिगां अन्न संवाड कहे अन्न तो दीधी लीधी भावै नहीं पारकी, निहवांक अद्राणम अन्न अरूपी जीव पावे देव पुद्गलरूपी वान ये दिवा- रकी, भगवती शनक पटले उहेमें नयमेंमें कथो अन्न- तकी क्रिया क्षत्री राजारंक माग्यी, चोरादिक वित्त ग्रह्यो आकुल व्याकुल थयो थोडी क्रिया लाधां पा है पाणी अणगारकी, मयङ्यो मयायो कीनो घनासरी नाम दीनो पारग्वानो करो सठ वयर न पारकी, ३५, मूल दृष्टांत कुण आत्मा जीव अरूपी निरवय भाव द्रव्य गुण पर्यापी है, द्रव्यादि अज्ञान ज्ञान तलावनेमें कियो हिसाप निहयाकी आसुणो कपडाई है, मूल नव नाम कहेय दूजो दृष्टांत देव आश्रयजीव एक जुगल मिलाई है, तलावनें नालो एक उत्तर यूं देणो देव पुद्गल तलाप नालो एक कह्याई है, मयङ्यो मयायो कीनो घनासरी नाम दीनो यूं नाम हवेलीको उत्तर देखाई है ३६ तीन करण तीन योग अठारे पापरा त्याग क्रिया वर्णना गिणती भ-

मयनीमें जाणीयो, नीन कर्ण नीन योग भटारे पापरा ग्याग
 शिया अंरुदजीका बेला उवाह पिछाणीयो, नीन करण
 नीन योग भटारे पापरा ग्यागशिया आनंदादि आनरा
 उपासक दया आणीयो, नीन कर्ण नीन योग भटारा पा-
 परा ग्याग शिया संवादिक् भगवती मांहे जिनघाणीयो,
 मयहयो मयायो कीनो घनासरी नांम दीनो भगवती
 शिरा देलोनेज पयवाणीयो, १७, आयकणे ग्याणो पीणो
 कपडो आदि सयांनं अन्नमं गिणे उगांनं ह्य भांन के-
 वणो, राग्यांपापदियांराप भलो जालेनिर्मपाप नीनां
 मांहे जिनमाधुनें वयांमेषणो, कोहो आगे टांगे प कोहपाही-
 हारामेय हत्यादिपापके पोधानें कलपेन हीरे वणो, भगवती-
 मनकवारमं उदेगे पांनमांमं पापनेपोवरगी कथो पाठदेण-
 मेषणो, मयहयो मयायो कीनो घनासरी नांम दीनो पार-
 क्यानो करो घनेलारे नही घेवणो १८ भगवती मनक-
 वीममं उदेगे आठमांमं आयकने तीर्थमं मीनो पाजिन-
 घाणी है, पालतजी आयकनें महात्मा कथा जिन सीक्ष-
 कथा उग्राध्ययन हवीसमं जांणीहं, धम्मिया धम्माणुपा
 धर्महृष्ट आद देहं शुमीला सुव्यपागुण उवाहं पिछाणीहं,
 सुपगटांगमांहे धर्माधर्म पक्ष दोष तीहां धर्मपक्षमांहे
 सापुभायक दो भाणीहं, मयहयो मयायो कीनो घनासरी
 नांम दीनो माधुनें आवकगुणग्रनामुं वयाणीहं, १९,
 दणभीकालिक छठे अध्ययन आठमी गाथा अठारे धा-
 नक जुदा जुदा शिया जाणजी, सोलमाधानरमांहे गृ-
 ह्मर्षी घर घेठे माफं अनाचार मिध्याग अग्रह्य प्राणहाणजी,
 आचारकी दोष धाय जाचकादी अंतराय त्रोधवधे अ-
 पटी कूडीलमनहाणजी, हत्यादिक् दोष घणा बंठा कथा
 तीनजगा नपमी जरानें रोगादी हसुर ठाणजी, मयहयो

सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो दशमीकालिक देखो
तजपखताणजी ४० बृहत्कल्प कह्यो तीजे उद्देसे अंतर
घरमांहि सतरे योलकरणा वीनराग पालीया, अंतर घरको
ग्योटो अर्थ करीनें निह्व सठ रसोडादिक घरकह घोघानें
यहकालिया, अंतरघरमें तपसीनें जरारोगी याने सतरे योल
करणा कह्यो ईमें आगेचालीया, दशमीकालिक सुपगढां-
गबृहत्कल्प ओर सुध्रामें थरज्यो पिणदेखे नहींवालीया,
सयइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो अज्ञानमें खू-
ताजिणां अज्ञानी सरणालिया, ४१ छटे गुणठाणे मनपर
जय कपाय कुशील छद्मस्य रागसहित करी चूका कैवैहै,
चारित्रनियंठायोग हेतु आदिककेनापावै भयकेनाकरे
संसारमें केना रैवैहै, लारे पांचे तंतो भगवंतमें यतायो
सय इम पूछयां मूढ सफा जुषाय नहीं देवैहै, भगवंत
जीवदया ऊपरें अध्ययन देख परिक्षातो करे नांही यह-
तांलारेवैवैहै, सयइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो
कल्पातीत जिनकी थरायरी लेवैहै ४२ जानु परिमाणे
नदी उत्तरे घर्म कहै पाणी संघट्टासुं आहार देखी टल
जावे है, कमाड निखेपी अने किवाडिया जडावैसठ जि-
नके उपर एसी कुजुगत मिलावै है, लडकी घापकी फेई
गर्भवन्तीको नामलेय पद्मासबध्यां उठ्यां बैठों दोषथा-
वैहै, इमकहे ज्यानें केणो याको परमाण किसो किवाड
किमाडी केता हाथको कह्यावै है, सयइयो सवायो कीनो
घनासरी नांम दीनो निन्हवकपटकरी घोघानें यहका वैहै
४३ इसाभद्र आयकानें आयकां बंदनाकीनी भगवंत अ-
रुपक जिन नहीं पालिया, पोष्कलीजी संखजीरी हवेलीमें
आया जिहां उपलाजी बंदनाकीनी आसणादि दियालिया,
खजीनें पुष्कलीजी पोसामांह बंदनाकीनी कह्यो चालो

आहार करो संखजी नहीं हालिया, भगवतीमें बहुभाव
 ज्ञानी दिया फुर माव बंदना करी लियां पछे अपराध
 खमालिया, सबइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो
 अंघडने सिप्यां बंदनाकीनी उवाईमें चालिया ४४ उत्त-
 राध्ययन अध्ययन छावीसमें छकारणसुं आहार करणो
 कह्यो नाम न्यारा २ धारजी, वेदना बेयावच्च चैल हर
 ज्याने संजमठाये जीतयनें अर्थ छठी धर्मनो बिस्तारजी
 छकारण छौडणा यतायो वीनराग देव ज्यांरा न्यारा २
 नांम करत उधारजी, रोगने परीपह जीवदया ब्रह्मचर्य
 अर्थ तपहेत शरीरत्याग कर दे संधारजी, सबइयो सवा-
 यो कीनो घनासरी नांम दीनो खाणेमें धर्म होतो कपों
 तजे अणगारजी ४५ इति ऋषि कृपारामजीकृत सबइया
 संपूर्णम् ॥

अथ भावनाविलास लिख्यते ।

प्रणमी चरण युग पासजिनराज जूके विघनके पूरण
 पूरण है आसके, दृढ़ दिलमांझि घ्यांनघर श्रुत देयताको
 सेवेनें संपूरत है मनोरथ दासके, ज्ञान दगदाता गुरु बडे
 उपगारी मेरे दिन कर जैसे दीये ज्ञान परकासके, इनके
 प्रशाद कविराज सदासुख साज सवीए बनावत है भा-
 वना विलासके १ प्रथम द्वादश भावना नामानि, प्रथम
 अनित्य भाव दूजो असरण पुन तीजो है संसार चोथो
 एकत्व अत्यंत है, अन्य भाव पांचमो अशुचि भाव
 छठो जांनि सातमो आश्रयसुनिमहादूर दंत है, आठमो
 संघर भाव निर्जरा है नवमो जुदशमो है धर्मभाव मा-
 नत महंत है, लोकको स्वरूप राज इशारमो भाव पुन

मवायो कीनो घनामरी नाम दीनो दशमीकालिक देगो
 मजपवनाणजी ४० बृहन्कल्प कण्ठो तीजे उहेसे अंतर
 घरमांति मन्तरे षोडशरणा बीनराग पालीया, अंतर घरको
 गोदो अर्थ करीनें निहय सठ रमोडादिक घरकह पोयानें
 पट्टकालिया, अंतरघरमें नपमीनें जरारोगी घानें मन्तरे षोड
 कण्ठा कण्ठा ईमें आगेनालीया, दशमीकालिक सुपगडां-
 गपृहन्कल्प ओर सुभ्रांमें घरज्जो पिणदेने नहीयालीया,
 मवायो मवायो कीनो घनामरी नाम दीनो अज्ञानमें मू-
 नाजिणां अज्ञानी सरणादिगा, ४१ छठे गुणठाणें मनपर
 जब कयाय कृशील छद्ममय रागमदित करी सूका कैयैहै,
 पारिध्रनियंदायोग हेतु आदिककेनापायै भयकेनाकरे
 गंमामें केना कैयैहै, लारे पांचे तेनो भगवन्तमें मवायो
 मय इम पृच्छां मूढ सका सुवाय नहीं देखैहै, भगवन्त
 जीवदया उगरे अघ्यजन देन परिश्रानो करे नांही पट्ट-
 नांलारेयैयैहै, मवायो मवायो कीनो घनामरी नाम दीनो
 कल्याणीन तिनकी बराबरी लेयैहै ४२ जानु परिमाणे
 नदी उगरे घमं कट्टे पाणी मंघदागुं आहार देली दल
 जायै है, कमाट निषेधी अने शिवादिगा जहायैमठ जि-
 नके उगर एमी कृत्तुगन मिलायै है, लट्टकी बापकी केह
 गज्जमंयनीको नामलेय पट्टमामवध्यां उग्यां पैठां दोयथा-
 यैहै, इमकह ज्यानें केणो पाको परमाण किमो शिवाड
 किमादी केना हाथको कह्यायै है, मवायो मवायो कीनो
 घनामरी नाम दीनो निन्द्यकपट्करी बोयानें पट्टका यैहै
 ४३ इमामउ आवकानें आवकां बंदनाकीनी भगवन्त अ-
 रपक तिन नहीं पालिया, षोडशरीजी मंघजीरी ह्येरीमें
 आपा तिकां उग्याजी बंदना कीनी आमणादि शिवादिगा,
 मंघजीनें पुजारीजी सोमानांठ बंदनाकीनी कछो बायो

आहार करो संखजी नहीं दालिया, भगवतीमें पहुँचाय
 ज्ञानी दिया फुर भाव बंदना करी लियां पछे अपराध
 खमालिया, सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो
 अंघडने सिण्यां बंदनाकीनी उवाईमें चालिया ४४ उत्त-
 राध्ययन अध्ययन छावीसमें एकारणसुं आहार करणो
 कल्यो नाम न्यारा २ धारजी, बंदना बंधावध चैत्य हर
 ज्याने संजमठाये जीतवनें अर्थ छठी धर्मनो विस्तारजी
 एकारण छोटणा यतायो बीतराग देव ज्यांरा न्यारा २
 नाम करत उधारजी, रोगनें परीपह जीवदया ब्रह्मचर्य
 अर्थ तपहेत शरीरत्याग कर दे संधारजी, सबइयो सवा-
 यो कीनो घनासरी नाम दीनो व्याणमें धर्म होतो फयो
 तजे अणगारजी ४५ इति ऋषि कृपारामजीकृत सबइया
 संपूर्णम् ॥

अथ भावनाविलास लिख्यते ।

प्रणमी चरण युग पासजिनराज जूके विघनके घूरण
 पूरण है आसके, हठ दिलमांझि प्यांनपर श्रुत देवनाको
 सेवेतें संपूरत है मनोरथ दासके, ज्ञान दगदाता गुरु बड़े
 उपगारी मेरे दिन कर जैसे दीपे ज्ञान परकासके, इनके
 प्रशाद कविराज सदासुख साज मयीए बनावत है भा-
 यना बिलासके १ प्रथम द्वादश भावना नामानि, प्रथम
 अनित्य भाव दूजो असरण पुन तीजो है संसार थोथो
 एकत्व अत्यंत है, अन्य भाव पांचमो अशुचि भाव
 छठो जांनि सातमो आश्रयसुनिमहादुर दंत है, आठमो
 संपर भाव निर्जरा है नवमो उदशमो है धर्ममाय मा-
 नत महंत है, सोरुको स्वरूप राज इशारमो भाव पुन

योनि इत्येव भाव चाग्रा मनन के २, अथ प्रथम अनित्य
 भावना कथन ॥ योग्या विवक्षितं गृह्य मन्त्री, उत्तपति
 विगति मृग्यमे विगतिर नवन विन्, अनित्य एवै जैन
 मन मर्ममैकवदगा इकतीमा माशका मा कटिचारे कलि
 योगे इति कथा कथा कथा य इति कटिचिह्न कुमलादे हे,
 इत्येव मन्त्र मन्त्रा एव मन्त्रा नानाभावा एव न भवन्
 अति विनम विनाइ के इति एव गण गणना भोमकी
 कर्णीमी भाग भागदा प्रकाश एव मन्त्रादृष्टे एव
 इति वनागम्य नाम एव मन्त्रादृष्टे मन्त्रादृष्टे इति इति
 मेवमे ममादृष्टे इति मन्त्रादृष्टे मन्त्रादृष्टे इति इति
 भव भववान इति नष्ट इति इति इति इति इति इति
 एव कीन एव नष्ट इति नष्ट इति इति इति इति इति
 भागम मन्त्रादृष्टे इति मन्त्रादृष्टे मन्त्रादृष्टे इति इति
 धाना नष्ट इति इति इति इति इति इति इति इति इति
 कांनवान एवनावा एवनावा इति इति इति इति इति इति
 गद देशगाम इति मन्त्रादृष्टे मन्त्रादृष्टे मन्त्रादृष्टे
 मोमे ज विद्यावन गानवाति मा नष्ट इति नष्ट इति इति
 कुदयको गन्धार गान नष्ट इति मन्त्रादृष्टे मन्त्रादृष्टे
 आयन कटुन माथ इति इति इति इति इति इति इति
 देवत इति भाग मन्त्रादृष्टे इति मन्त्रादृष्टे मन्त्रादृष्टे
 मन्त्रादृष्टे मन्त्रादृष्टे इति मन्त्रादृष्टे मन्त्रादृष्टे मन्त्रादृष्टे
 कथन, १ योग्या, जीयद्रव्य गृह्यमन्त्रा, भाग ४ मन्त्रादृष्टे
 जवली मन्त्रा, धिति पूरण मन्त्रा कटिचिह्न मन्त्रा धादिन
 कोर्नादी हे मन्त्रा ३ मन्त्रादृष्टे ३२, मन्त्र नष्ट मन्त्रा
 एवै रहन एवै एवै कटिचिह्न नष्ट नष्ट मन्त्रादृष्टे
 मन्त्रादृष्टे, दौष्टयाव मन्त्रादृष्टे इति मन्त्रादृष्टे मन्त्रादृष्टे
 — य जान पेन्यो पयमानको, इति इति देवतही मन्त्रादृष्टे

खगकुल पदत अर्चिलो आय दाव ज्यों सींचानको, छार
 सष आर जार राजमाया मोहजार अंतकाल सरण
 भजन भगवानको, ८ पवनके पूतसे प्रभूतजो सपूतपूत
 कहातात तारंगेकी तिन्हों तात तारे हैं, चक्रधर सगरके
 तनय हजारसाठ निमित्तके आये देव पलमें प्रजारेहैं, द-
 रयकी कोडाकोटी अरय खरय जोड़ी नंदराजजूहं कहा
 मौततें नियारेहैं, अजर अमरराज महाराज सुखकाज
 जप्पजगदीश जिन्हें पनिन उधारेहैं ९, हंसगति गामनीजू
 देहदुति दामनीजू कामकीसी कामनीजू निरुपम नागरी-
 नमिराजजूके प्यारी असी घुहजार नारी रूपकी समारी
 एक एकहूं ते आगरी, नियाज्यो न दाप जोर चंदनकी
 कीनी खोर कंकनको सुण्यो सोर उपज्यो बैरागरी, मिथु
 लाको राजछोर मोहकेजू पंथनोर नमें इंदकर जोर अंसो
 धर्मलागरी, १०, अथ तृतीय संसारभावना कथन। दोहा।
 लखचोरासी चोहटा, व्यापारी तहां जीय, लाभ अलाभ
 है शुभ अशुभ, पुरशंसार सदीव ११ सबइया ११ सा-
 जलधल पादप पावक पधमान पुन नर निरि नारक अमर
 अब तारीहैं, बिकलकी कुलजाति जीवकी अनेक भांति
 असी चार लाग्र जोनी विविध विचारी हैं, यामें गनि
 आगनि अनंत बेर करै जीव नांमयूं संसारको अर्थ अनु-
 सारीहैं, भ्रमत करम भाय रहतचरीके न्याय कपहुकरी
 तो जीव कपहुक भारीहैं १२ चार गनि चक्रवार धमत
 नपावै पार जीवकर्मचालमें अनंतकाल गयोहैं, विषपक-
 पाय मदमोह सुरा मतचारो जहनैं नहोत न्यारो जडगुण
 लह्योहैं, कितहन ठहरात अघहैं उरधजात पातज्यूं वधूलाको
 अधिर परिणयो है, याहीतें संसार भाव धरहुचेतनराव
 अपनो सुभावगहि जोति रूप जयो है, २३ कपही उत्तंग

दही घृतगव्य १९ सबइया ३१ सा, पुद्गलजीव काल धर्म
 अधर्म नभ षड्रूपद्रव्यजू अखंडरूप जानीयै, पुद्गलमूर्-
 त्तिक और है अमूर्त्तिक जीव द्रव्य चेतन अजीव पांच
 मानीयै, अपने स्वभाव धरि रहेहै सयेही द्रव्य यद्यपि
 मिले हैं तोऊ न्यारो पहिचानीयै, योंही अन्य भाव जान
 राजजीव न्यारो मान निहचे निगमयां न संसय न आनीयै
 २० न्यारो घन घाम गांमठांम कांम सय मात तात भ्रात
 न्यारा अंतकाल पाइकै, राज अविनासी लख चोरासी-
 को घासी कहं होन न उदामी जगयासी सदभाइकै,
 मिथ्या मन एक्यो बक्यो मिथ्या मेरी २ सय दक्यो है
 विवेकरवि तमो घनठाइकै, याजीकुं संकेलि जैसें याजीगर
 ऊठजात पल एक बलकहं ख्यालसो दिखाइकै २१
 संध्याकालि तरुडार घंठे आय खग कुल रानि यसि प्रात
 ऊठि न्यारे २ जान है, लंतहं वसेरा रातपंथी ज्युं सराह-
 यीच जोरन है प्रीतजोहं होन न प्रभान है, गइयानके
 संग ग्वाल डोलन है सयदिन आवन प्रदोष गेह इकेलो
 दिखान है, असें अन्यभाव मन आनियेतो राजकवि
 ज्ञानके उद्योन होन अज्ञान बिलान है २२ अथ अशुचि
 भावना पष्ठम कथन, ॥ दोहरा ॥ अशुचि मिले यह
 ऊपजै, अशुचिहि पंथ्यो पिंड, जैसी माटी होइहै,
 तैसोही हे मंड २३ सबइया ३१ सा, मांस हाडचा-
 मनस भेदगुदरसबस मज्जा केस शुक्र रेतयहै पिंड
 रच्यो है, शुचिको न अंस परसंस याकी करे कोन
 घामको सामेला घेला मैलहीखं मच्यो है, महाखूठो
 खूठो दूठ छिनमें अपूठ होत लंपट निपट लोभी लाल-
 चमें लच्यो है, ऐसो राजदेह पांशु कीजिये कहा सनेह
 पांशु नेहकर नर कहो कोन बच्यो है, २४ अंतर अनूप

अंग होत है मतंग चंग कवहु पतंग मृंग कीटक अकार
 जू, कयहुक घनी निरघनी सुखी दुखी जीव कयहुक
 वेदविप्र कवहु चमारजू, जेसैं नट एक भेष थटत अनेक
 थाट तेसैं एक जीवके अनेक अवतार जू, घघघनाशालि
 भद्र धूलभद्र जंबू बडा त्यागी जे संसारकेजू अभय कु-
 मार जू १४ अथ चतुर्थ एकत्व भाव कथन ॥ दोहरा ॥
 जडतो करताहे नहीं, करता चेतनराय, जो करता सोइ
 भोगता, यह एकत्व स्वभाव १५ सबइया ३१ सा, कौन तेरे
 माततात कौन तेरे अंगजान कौन भ्रान जात तेरे मय है
 सपारधी, अरथ खटाऊ परलोकके बटाऊहोतघनकूं
 घटाप लेत मिलके धनारधी, नाफी गति कोन बूझे स्वा-
 रथके मोह बूझैं भवमें अरुझे कोऊ नांही परमारधी,
 चेतन विचार चित्त इकेलोमो तूंदेमिस उबड चलत आप
 आप होऊ सारधी १६ एक असहाई आप करत है पुन्य
 पाप करमकूं मेले आप आपही प्रमाधीजू, स्वारथके काज
 सय मिलत समाजराज वेदनीके उपजन न को संग
 साथी जू, अंतकाल आवै जय आखर इकेले सय कहा
 भयो काहुके जू यहुरथहाधी जू, एक भाव मनधर माया
 लोभ परिहर भयेजू वैरागी त्यागी अनिधि अनाधीजू
 १७ तेरोतो न कोऊजीव तूंहिपैनकाको यांहि आपो है
 इकेलो तूं इकेलो फिर जाइवो, काहेकूं विराणेकाज
 निघट कपटराज रहत है आठोंयाम धंधेहीमें
 घाइवो, दुकृत मुकृत दोऊं साथिहोहे तेरो सोऊ और
 केनकोऊ पुन्यपाप फल पाइवो, करेहैं हरेहैं आप इकेलोही
 पुन्यपाप जीय असहाई एक बहै ध्यान ध्याइवो १८,
 प्रथ पंचम अन्यत्व भावना कथन, ॥ दोहरा ॥ न्यारो पे
 इल्लपंध्यो, संसारी जियद्रव्य, शानी यूं न्यारो लगै, दध

दही घृणगव्य १९ सवइया ३१ सा, पुद्गलजीव काल धर्म
 अधर्म नम एईपद्द्रव्यजू अखंडरूप जानीयै, पुद्गलमूर्-
 त्तिक और है अमूर्त्तिक जीव द्रव्य चेतन अजीव पांच
 मानीयै, अपने स्वभाव धरि रहेहै सवेही द्रव्य पद्यपि
 मिले हैं तोऊ न्यारो पहिचानीयै, योही अन्य भाव जान
 राजजीव न्यारो मान निहचे निगमयां न संसय न आनीयै
 २० न्यारो घन घाम गांमठांम कांम सय मात तात भ्रान
 न्यारा अंनकाल पाइकै, राज अविनासी लग्न घोरासी-
 को घामी कहूं होन न उदासी जगवासी सदभाइकै,
 मिथ्या मन छक्यो बक्यो मिथ्या मेरी २ सय बक्यो है
 विवेकरवि तमो घनठाइकै, पाजीकूं संकलि जैसें बाजीगर
 ऊठजान पल एक मलककूं ख्यालसो दिख्वाइकै २१
 संध्याकालि तरुडार बंटे आय गग कुल रानि पति प्रात
 ऊठि न्यारे २ जान है, लेनहै यसेरा रातपंथी ज्यूं सराह-
 पीच जोरन है प्रीनजोतुं होन न प्रमान है, गइयानके
 संग ग्वाल डोलन है सयदिन आवन प्रदोष गेह इकेलो
 दिखान है, असें अन्यभाव मन आनियेतो राजकवि
 ज्ञानके उद्योन होन अज्ञान विलान है २२ अथ अशुचि
 भावना पष्ठम कथन, ॥ दोहरा ॥ अशुचि मिले यह
 ऊपजै, अशुचिहि पंच्यो पिंड, जेसी माटी होइहै,
 तैसोही है भंड २३ सवइया ३१ सा, मांस हाइचा-
 मनस मेदगुदरसयस मम्रा केस शुक्र रेतपहै पिंड
 रच्यो है, शुचिको न अंस परसंस याकी करे कोन
 घामको सामेला घेला मैलहीमूं मच्यो है, महारुठो
 घूठो दूठ छिनमें अपूठ होन लंपट निपट लोमी लाल-
 चमें लच्यो है, ऐसो राजदेह यांसू कीजिये कहा सनेह
 यांसूं नेहकर नर कहो कोन यच्यो है, २४ अंपर अनूप

अंग होत है मतंग चंग कयहु पतंग भृंग कीटक अकार
 जू, कयहुक घनी निरघनी सुखी दुखी जीव कयहुक
 वेदविप्र कयहु चमारजू, जेसैं नट एक भेष थटत अनेक
 धाट तेसैं एक जीवके अनेक अवतार जू, घनघनाशालि
 भद्र धूलभद्र जंबू बडा न्यागी जे संमारकेजू अभय कु-
 मार जू १४ अथ चतुर्थ एकत्व भाव कथन ॥ दोहरा ॥
 जइतो करताहे नहीं, करना येननराय, जो करना सोइ
 भोगता, यह एकत्व स्वभाव १५ सबइया ३१ सा, कौन तेरे
 माततात कौन तेरे अंगजान कौन भ्रात जान तेरे सप है
 सपारथी, अरथ ग्यदाऊ परलोकके यदाऊहोतधनकूं
 यदाय लेन मिलके धनारथी, ताकी गति कोन बूझे स्वा-
 रथके मोह बूझैं भयमें अरुझे कोऊ नांही परमारथी,
 चेतन विचार विस्त इकेलोनों तूंहेमिस्त उबट चलत आप
 आप होऊ सारथी १६ एक असहार्ह आप करत है पुन्य
 पाप करमकूं मेले आप आपही प्रमाथीजू, स्वारथके काज
 सप मिलत समाजराज वेदनीके उपजन न को संग
 साथी जू, अंतकाल आवै जय आश्वर इकेले सप कहा
 भयो काहूके जू सहृदयहाथी जू, एक भाय मनधर माया
 लोभ परिहर भयेजू बैरागी त्यागी अनिधि अनाथीजू
 १७ तेरोनों न कोऊजीव तूंहिपैनकाको पांदि आयो है
 इकेलो तूं इकेलो फिर जाइयो, काहेकूं विराणेकाज
 निघट कपटराज रहन है आठोंयाम धंधेहीमें
 पाइयो, दुखन सुखन दोऊं साथिहीहे तेरो सोऊ और
 केनकोऊ पुन्यपाप कल पाइयो, करेहैं हरेहैं आप इकेलोही
 पुन्यपाप जीव असहार्ह एक यहै ध्यान ध्याइयो १८,
 अथ पंचम अन्यत्व भावना कथन, ॥ दोहरा ॥ न्यारो पे
 पुद्गलपंघो, संसारी जियद्रव्य, शानी यूं न्यारो लने, दूध

दही घृतगव्य १०, सबइया ३१ सा, पुद्गलजीव काल धर्म
 अधर्म नभ षड्विंशद्रव्यजू अम्बंडरूप जानीयै, पुद्गलमूर्-
 र्तिक और है अमूर्तिक जीव द्रव्य चेतन अजीव पांच
 मानीयै, अपने स्वभाव धरि रहेहै सयेही द्रव्य यद्यपि
 मिले हैं तोऊ न्यारो पहिचानीयै, योंही अन्य भाव जान
 राजजीव न्यारो मान निहचे निगमयां न संसय न आनीयै
 २० न्यारो घन घाम गांमठांम कांम सय मात तात आत
 न्यारा अंमकाल पाइकै, राज अविनासी लख घोरासी-
 को घासी कहूं होत न उदासी जगवासी सदभाइकै,
 मिथ्या मन छक्यो चक्यो मिथ्या मेरी २ सय दक्यो है
 विवेकरवि तमो घनटाइकै, याजीकूं संकेलि जैसें याजीगर
 ऊठजात पल एक ग्वलककूं ग्यालसो दिख्वाइकै २१
 संध्याकालि तरुहार घंटे आय ग्वग कुल रानि पसि प्रात
 ऊठि न्यारं २ जान हैं, लेतहै यसेरा रातपंथी ज्यूं सराह-
 धीच जोरत है मीनजालूं होत न प्रभात है, गइयानके
 संग ग्याल होलन हैं सयदिन आवन प्रदोष गेह इकेलो
 दिख्वात हैं, अंसें अन्यभाव मन आनियेतो राजकवि
 ज्ञानके उद्योत होत अज्ञान विलान है २२ अध अशुचि
 भाधना पष्टम कथन, ॥ दोहरा ॥ अशुचि मिले यह
 ऊपजै, अशुचिहि घंघ्यो पिंड, जेसी माटी होइहै,
 तैसोही हे भंड २३ सबइया ३१ सा, मांस हाड्या-
 मनस मेदगुदरसबस मज्जा केस शुक्र रेतयहै पिंड
 रच्यो है, शुचिको न अंस परसंस याकी करे कोन
 घामको सामेला घेला मैलहीमूं मच्यो है, महारुठो
 छूठो दूठ छिनमें अपूठ होत लंपट निपट लोमी लाल-
 चमें लच्यो है, ऐसो राजदेह यांसू कीजिये कहा सनेह
 यांसू नेहकर नर कहो कोन घच्यो है, २४ अंघर अनूप

अंग होत है मतंग चंग कयहु पतंग मृंग कीटक अकार
 जू, कयहुक धनी निरधनी सुखी दुखी जीव कयहुक
 वेदविप्र कयहु चमारजू, जेसैं नट एक भेष थटत अनेक
 धाट तेसैं एक जीवके अनेक अवतार जू, धन्नघन्नाशालि
 भद्र थूलभद्र जंबू बडा त्यागी जे संसारकेजू अभय कु-
 मार जू १४ अथ चतुर्थ एकत्व भाव कथन ॥ दोहरा ॥
 जडतो करताहे नहीं, करता चेतनराव, जो करता सोइ
 भोगता, यह एकत्व स्वभाव १५ सबइया ३१ सा, कौन तेरे
 माततात कौन तेरे अंगजात कौन भ्रात जान तेरे सय है
 सवारधी, अरथ खटाऊ परलोकके बटाऊहोतधनकुं
 बटाप लेत मिलके धनारधी, माफी गति कोन बूझे स्वा-
 रथके मोह बूझैं भवमें अरुझे कोऊ नांही परमारधी,
 चेतन विचार चित्त इकेलोतो तूहेमिस उबट चलत आप
 आप होऊ सारधी १६ एक असहाई आप करत है पुन्य
 पाप करमकुं मेले आप आपही प्रमाधीजू, स्वारथके काज
 सय मिलत समाजराज वेदनीके उपजत न को संग
 साथी जू, अंतकाल आवै जय आखर इकेले सय कहा
 भयो काहूके जू यहुरथहाधी जू, एक भाय मनधर माया
 लोभ परिहर भयेजू बैरागी त्यागी अनिधि अनाधीजू
 १७ तेरोतो न कोऊजीय तूहिपैनकाको यांहि आयो है
 इकेलो तूं इकेलो फिर जाइयो, काहेकुं विराणेकाज
 निघट कपटराज रहत है आठोंयाम पंचेहीमें
 धाइयो, दुकृत सुकृत दोऊं साथिहौहे तेरो सोऊ और
 केनकोऊ पुन्यपाप फल पाइयो, करेहैं हरेहैं आप इकेलोही
 पुन्यपाप जीव असहाई एक यहै ध्यान ध्याइयो १८,
 अथ पंचम अन्यत्व भावना कथन, ॥ दोहरा ॥ न्यारो पे
 पुद्गलपंघ्यो, संसारी जियद्रव्य, शानी यूं न्यारो लखै, दृष

दही घृतगव्य १९ सवइया ३१ ॥ अथ न-
 अधर्म नभ एईपदद्रव्यज् अर्चयन्तः ॥
 र्तिक और है अमूर्तिक जीव द्रव्य के
 मानीयै, अपने स्वभाव धरि गंदे होने
 मिले हैं तोऊ न्यारो पहिचानी, दोरे
 राजजीव न्यारो मान निहचे निरन्तर
 २० न्यारो घन घाम गांमठांन हांन
 न्यारा अंतकाल पाइकै, राज
 को वासी कहूं होत न उदामी
 मिथ्या मन छक्यो चक्यो मिथ्या
 विवेकरवि तमो घनठाइकै, याउं
 ऊठजात पल एक खलकहं
 संध्याकालि तरुडार घटे आय
 ऊठि न्यारें २ जान है, ऐनहं
 धीच जोरत है प्रीतजालं होत
 संग ग्याल होलन है सपदिन
 दिखान है, अंसैं अन्यभाद
 ज्ञानके उद्योत होत अज्ञान
 भावना पष्टम कथन, ॥ दोह
 ऊपजै, अशुचिहि बंधो
 तैसोही है भंड २३ सवइया
 मनस मेदगुदरसवस मज्ज
 रच्यो है, शुचिको न अंम
 घामको सामेला घेला
 झूठो दूठ छिनमें अपूठ हो
 चमें लच्यो है, ऐसो राखे
 यांसूं नेहकर नर कहो

(र
 ३१
 अथ न-
 तहियेनि-
 त जीर्ण-
 कटितट
 है, ए-
 पांच

कषाय चार दोषके निवास है, राज देश भोजन प्रियाकी
 यात विकथाए अविरति क्रियायोग मिथ्याकर्म पास है,
 आश्रयकी भावनाए भाव दुःखविकराज इनके नियारनही
 ज्ञानको प्रकाश है ३० अथ अष्टम संस्कार भावना कथन,
 ॥ दोहरा ॥ ज्युं कूल आगमराहुमिर, कूके पालके बंध, त्यूंही
 आश्रयरो कियै, संस्कार भाव सुसंध ३१ सा, धरण धरण
 धरे जीवको यत्न करे सोलन कषन अंसे रागरूपना घटे,
 भोजन विशुद्धि गृह होय यो नरसनाके ग्रहन धरन पस्तु
 मन दयामें मदे, कफ मल मूत्र पित्त श्लेष्मको डारियो जु
 अंसी भांति दारें जेमें जंतुतामें नागदं, मनवच काय ती-
 नूं गुप्त करन निज इनहि निश्रेणी साधु मोक्षधाम जे
 पद ३२ प्राणि बंध मृषापथ अदत्त मधुनरुनि परिग्रह
 लोभमूल पानिकको पोषदं, इनको निरोध सोउ संस्कार
 यग्यानियतु इह सुगोहेतु जानि संस्कार संगोप है, संस्कारुं
 प्रीति जाके सोऊ उपदेश योग ओरनहूं उपदेश पृथा
 कंडोपोहं, मोक्षपुरगोनयिष संघटसो संस्कारके मेषनही
 प्रार्णागण जीवनही मोषहं, ३३, संस्कारुं निर करकिनें
 जीव गयेनिरं तारंगें किनही आगे अथ पुनरतुहं, संस्कार
 समान और ज्ञानविज्ञान काल धरनीहं सोऊ जोऊ संस्कार
 तरतुहं, संस्कारको बकर सुदृढ कर्मो हं तन तातुंनो
 करम अरि कहूं नलरतुहं, दयदंत मेनारिज धर्मगधि
 मुनिराज गजमुखमालजसे पानक दलतुहं ३४ अथ न-
 यमी निर्जराभाषना स्वरूप कथन, दोहरा, तातुंनोहिपेनि-
 र्जरा कर्मजुआनमकीन तप जप स्वपकर आपवस जीर्ण-
 करे प्रार्थन ३५ सवइया ३१ सा, कर्मके संगोप कटिनट
 सुलपेट धाम धाम जीन काटतुहं ओटके पहारिहं, प-
 कासन आठोपान पैठनहं टीडिसांघि जारनहं पांड पांघ

पायक प्रसादि, कर्माचरण अथवा दण्ड मौनप्रति नगन
 रज्जु नीर समन मयारिह ज्ञानह मयोगविन निर्जरा
 कामपय ज्ञानविनरनानी तेन निमनारक ३३ जिते
 जगत्सर्मा तोर वायजगम वर्गन अज्ञानीक तेन वही
 निर्जरा अकामम गगमाग सारिगारि विनन वियोग-
 दृश्य भवत्पाम नापदान तमय तामम इत्यादि कष्ट-
 कर सज्जसवस्मापि निर्जरा अज्ञाना हर ज्ञानी इत्या-
 ममे आपवस वागास मकरहर म इ इ विनकनं मि-
 लह शिवमनि तामन ३५ प्रायाजन विनय मित्राय
 ध्यान का इत्यम व वाचन नांही भाति साजसायुजनकं,
 अंतरंग तप मयदेक, यानायन हन विमल यह सदा
 निज मनक, उपवास जनोंदरा गलिहा मभय पुन काय
 केस रमत्याग नीन नाशनर पद यह ब्रह्मनय उभय
 मिल वादश निर्जरा पायक जम पातकर वनक, ३८,
 अथ धर्मभावना दशमा रुचन दंडरा शुद्धधर्म पदको
 अरथ पटित वने ममे भवजन्मे यह जायक वागन मोही
 धर्म ३९, मयट्या ३९ मा दानशाल तप भाव चारोही
 विगजे पाउ विमल विज्ञानदग दयामुख दार्वीह, सो-
 भाको समूहजाको विमद विवेक प्रछ निश्चय व्यवहार
 सार उमे शृंगमार्वा है, संपदाको हेनु दुहु लोकनमे
 सुख देन अमृत श्रवणधार संत वच्छ चार्वीह, अंसी
 कामधेनु चरन विपनतृण राज तेरे चोर निने नीकी
 भांति राखीह ४० धरम अरथ काम नीनवर्ग हिनकाम
 उत्तम उदार सुविचार मनठानी पै, चारु गनिमां हिसार
 मानवको अवतार साधन त्रिवर्गको चतुर चित्त आनीपै,
 तीनोंमें प्रधान बुद्ध कहत धरम शुद्ध अर्थकांमको जुधर्म
 कारण पिछानीपै, राजनर भव पाय धर्म जो करन नाहि

पशु ज्युं विफलनाको जियन घजानीपै ४१ मांणी जिन-
 वांणी जिन्हीनीके जाण पहचानी ज्ञानी घर्मघ्यांणी
 जिन्हें तृसनाकूं तोरीहै, जिनोंकी अमृदना नगड़ा है न-
 योडाजैसे समिति आरुद प्रौदा जैसी प्रौदा गौरीहै, ले-
 तन अदत्ता अभैदांन सुंजूरत्ता भत्ता कथहूं नहोत तत्ता
 मायाकूं भरोरीहै, घर्म भावधारी असे घन २ नरनारी
 इला पुत्र भरनसे घर्मरथ घोरीहै, ४२ अथ इज्ञा-
 रमी लोकस्वरूपभावना कथन, दोहरा, नांयहकाहूनें
 घखो, काहू घखोन आहि, स्वयंसिद्ध यह लोकहै, देखे
 ज्ञानीनाहि ४३ सामराज अरथ पाताल सातराज पुन
 चौद राजलोक गनो आगत है । जीपकी, चौद राजलो-
 ककी सुधिनि भांनि ऐसी आहि उभय हाथ टेके कटि
 ग्रनि जेमे तिपकी, पांमें ऐसी ठौर कहां नाहीं, जहां आ-
 तनको नहींभई परामृनि जरा मृत्यु भीपकी, जाति
 जोनि कुलधान करसे अनंत घेर दीव्यदृष्टि देखे ज्युं वि-
 लोकदृष्टि हीपकी, ४४, देवर भनीजो भ्रात काका सुत
 न्यानी पुन एक बालसंग पदसंपंध सहाने हैं, भ्रात तात
 सुत भरतार दादो सुसरसु पदही पुरुष साथ तानके
 सुताने हैं, पंधय घघू सौनि साम् घघू दादी जननी जु
 इनेनो संपंध निजमातहीके भांते हैं, घैस्या सुतासुत
 जायो कर्म वस, सो उब्याघो मातसुता सुन जायो कर्म
 घसिसो उब्याघो मानसुन सुताराज अठारह नानेहै ४५
 अर्थ: कुपेरसेन बालकसे ६ नाना देवर लगे भर्तारका
 भाईके नाने १ भनीजा लगे भाईका बेटा होणेंसे २ भाई
 लगे सगीमाका जन्मा हुआ इम नाने ३ काका लगे चा-
 पका भाई होणेंसे ४ बेटा लगे शोकका घेटा होणेंसे ५
 पोता लगे सो सोकके जणे घेटेका घेटा होणेंसे ६, अथ

३ कुंवरदत्तमं नाता भाई लगे एकमासं दोनूही जन्मे
 इसवासे १ बाप लगे माकापनी होणेंसे २ शोकका पुत्र
 होणेंसे येदा लगे ३ आपटमसे परणे गड्ड डम नाते भ-
 नार लगे ४ काहेका बाप होणेंसे दादा लगे ५ देवरका
 बाप होणेंसे सुसगा लगे ६ अथ ३ नाते कुंवरमं नामें,
 सो सबध दिग्याने ३ भाटेही वज्र होणेंसे मोजाई लगे
 १ दोनो एक भनोरही सो होणम सोरु लगे २ पसीकी
 माहोणेंसे मास लगे ३ सोरु वरही वज्र होणेंसे वज्र
 लगे ४ काहेरी माहोणेंसे दादी लगे ५ इसकं पेटमें पैदा
 हूँ इस मय मं मायग ३ इसनर १/१ नातकी कथा जं-
 वनस्त्रिमं हूँ इस लोका ये मरुत ३ मारुथही भाई
 विन मारुथ हूँ शरुनाट माना विनुमारुथ भमानाकी
 जादनाई भायमम गजकाज बिज गजगजजेसे भर-
 नर धादथल हाड होन धानाध वरुना जलायो लाव
 मदिरम ब्रह्मदल विरतन भमाना विद्वानम विश्राना है,
 लोकका मरुत प्रेमा जाना विन मांझ भाई हुनियांकं
 छार पार कहायाम गनाई १३ शदशमा इन्द्रभ भायना
 कथन, दोहरा मणिमार्गिक मृतमानिना भोगमयांगभ-
 नेक ये दुल्लभ नहीं जायक दुल्लभ ममहिनि एक ४७
 मयहया ३१ मा धलभयो जलभयो अनिल भगनिभयो
 नर पशु पंवीभयो कलभ कुरगर दवभयो दानव भयो
 नारकी निगोदभयो जलधल नागीभयो भाषण भुयंगरे,
 नरभय धरम श्रवण जिन वचरुचि वन धरुवेकं धीर
 सकति अभंगरे, अंऊधार मुविधार दुल्लभ राजमार
 शिवसुख माधनके उत्तमहै अंगरे ४८ अरे नर नर भय
 पापयोन, येर २ पायो है नो प्रीनिकर बोधि दुल्लभमु, देव
 गुरु धर्मकं परम्वरीके लीजीपन देखियन दरशन राशि

रहै दंभसु, निरंजन देव देव गुरु निरगंध सेव दयामूल
धर्म मदा देव निरारंभसुं, ज्ञानकी जंजीर जर जकर
पकर करि घंघमन गजराज समकिन धंभसुं ४० देव गुरु
धर्मको संयोग अंग चंग अनि पायोतो प्रमाद एक पल-
हीनकी जियै, घचद पुरवधारी ताहकी जो होतख्यारी
बहुल मंसारीकां निगोद मांझि दीजियै कोटी काज हारियै
नकनककी फोडि कहुं घेचिकै मतंग तुंग कहा म्वर लीजियै,
मिथ्या मन विषपान कीजियै नराज कवि योधि सुधारस
श्रुति संपुटकै पीजियै ५० छीपयुगज मुनि शशि घरप
जादिन जनमें पास मादिनकीनो राजकवि यह भावना
विलास ५१ यह नीकै कह जानियै पढ़ियै भाषा शुद्ध
मुखमनोप अनि संपजै बुद्धि नहोय विरुद्ध ५२ इति श्री
भावना विलास पंडित राजसिंह मुनिकृतं संपूर्ण ॥

तीतर छयाल विलार चिरी मकरा मफरी इन मांझि
फसेहैं, घूस छिछंदर यूं छविमां कण भूष दिवारण मांहि
घसेहैं, सँजु कियो अपणे रसकुं अपणे २ रसते हुरसेहैं,
जाघर कुंजु कहै अपणा घर ता घरमें घरके ऊयसे हैं, १,

अथ पांच एक पक्षवादीयोंका मत, छठा सर्वज्ञस्या-
द्वादीका सिद्धांत स्वरूप वर्णन चरचा लिख्यते ।

अरिहंत सिद्धसूरि नमूं उपाध्याय मुनिराज पंचपर-
मेष्ठी नित नमूं सारे आत्मकाज १ जिनवरवांणी सर-
स्वती मनिविस्तारणमाय निहुलोकहितकारणी प्रभु
वांणी सुखदाय २, गुरुगुणसागर आगरु नागर नवल
अनूप कृपा करी मुझ तारियै, पायो जैनस्वरूप ३ प्रणमूं
गुरुपदकमलकुं स्याद्वादको भेद पंचवादी चरचा कहूं

करनाल । हीयु नहीं रगमें, जान जान दरखत पानिपूल
 भान २ धनचर धनपरे पंवी ऊँडे खगमें, एकजिन
 मननय जाणेविन जगजीव कहत है निलोक लोक भूले
 पग २ में, ५, काँटे पोर बंबूलके कोण कर तीक्ष्णता ।
 हंसकी सरलता कपड़ाई वगमें, विनाही स्वभाव मोर
 पंखकोण चितरता कोकिलाको सादर खरभंगकगमें,
 विषधर मिरमणी विष हरै ततकाल पवनको बलभाव
 धिरभावनगमें, एक जिनमननय जाणेविन जगजीव
 कहत निलोक लोक भूले पग २ में, ६, पृथ्वी
 कहिन पुन क्षीनलता जलमाहि तुंपनि रै ऊँड हूँड झाल
 उँट आगमें, मूँड उपशमें पाप हरडविरेख करे रपितपे
 शशी सील सुखन नरकमें, पट्ट द्रव्य छऊँ काय भावा-
 दिक भाव सय विनाही स्वभाव कोड होन नवरगमें,
 एक जिनमननय जाणे विन जगजीव कहत निलोक
 लोक भूले पग २ में, ७, अथ भवितव्यता वादीके
 यथन, भवितव्यवादीकहै सुणारे स्वभाव मूढ़ भवितव्य
 विन फौज काज न सरत है, अथ मोर वसनमें लागत
 है केई लाव केई खिरे केई दाँके अंयके परन है, उदत
 निरन पुन भ्रमन जंगलयिच करत जनन कोड भारी
 नाटरन है, एकजिनमननय जानेपिन जगजीव कहत
 निलोक लोकपचके मरत है, ८, होत धके यसविन पि-
 तव्यो मिलत आय विनाही जमन होनहार नट रत है,
 ब्रह्मदत्तचक्री नैण फोडा है गुवाल तय सोले सहस्र
 देवसें काजन सरत है, झटका लागत केई रण माँहे
 धचे नर नियतके वससास धीरन धरत है, एक जिन-
 मननय जाणे विन जगजीव कहत निलोक लोक पचके
 मरतहै, ९, कोकह सकत है कोयल केसें रहे प्राण, पारधी

तान्यो है तीर सींचाण किरन हैं, पारधीकों नागडस्यो
 सींचाणके लागो बाण उडगई कोयल सो नियन करत
 है, जनम मरण जरा व्याधी रोग भोग जोग सुख दुख
 भूषादिक नियत धरत है, एक जिनमननय जाणें विन
 जगजीव कहन निलोकलोक पचकै मरतहै १०, अथ
 कर्मपादीके वचन, नियन स्वभाव काल तीनही जुगनी
 ताल कर्मका अजब ग्याल कर्म बलवान है, कर्मभी नर-
 क निरयंग नर सुरगनि कर्मके बस ग्रिहुं लोकही हैरान
 है, कर्महीनं पुद्दियं कर्महीनं कद्विमं कर्महीनं पु-
 द्दिहीनं मुरख अज्ञान है, कर्महीनं निरघन किरत है
 धन २ जन २ पास जीव मांगे सुनिधान है, ११ को उक
 पृथ्वी जल अमन अनिल काय कोउक बनसपती फल
 फल पान है, कोउ पोरान लोकमें किरमा अलस्या कीही
 घनेस्या जूं लीन हीही होन विकलान है, कोऊपर करी
 हरी रिच्छ कच्छ मच्छ लग ग्याल ग्याल मोल कोल
 कर्म मेनी स्थानहै, एक जिनमननय जाणें विन जगजीव
 कहतनि लोकलोक भ्रमन अज्ञान है १२ कोउ महा सुंदर
 अनुरूप तेजयं कोउ कृष्णीहृषो सो कुसीयोकुस्थान
 है, कोउच्छप्रपती राजा संठ साहकार लोक कोउ दल-
 दरी नीचलोक शोर स्थानहै, कोउक मीनल पुनवान लोक
 आणमाने कोउअक कोधी लोक माननन धान है, एक
 जिनमननय जाणेंविन जगजीव कहन निलोक लोक
 भ्रमन अज्ञान है, १३, कोउक पहरतहीर नीर जरी
 माल जोही कोउक फाटे टूटे पदहीन पान है, कोउक
 आरोगे भेवा क्षीर भांड मिमटान मीरो पृथी मीरणी
 अनेक पकवान है, कोउकूं मिलेन कूटी कोदराही राप
 म्वादी मूषा लूषा टुकटा न मिले भाजो पान है, एक

जिनमननय जांणे विन सय जीव कहत निलोक लोक
 भ्रमन अज्ञान है, १४, कर्महीन आदेसर जीकं बुधादम
 मास अंतराय रही नहीं मिल्यो अद्यपान है, धर्म-
 मान स्वामीजीके पगपर रांधी खीर करके गुवालेरीस
 खीला रोप्याफान है, तीर्थकर चक्रवर्त्ति हरीहर हलधर
 मंडलीक मलयर खान सुलतान है, एक जिनमननय
 जांणेविन सय जीव कहत निलोक लोक भ्रमन अज्ञान
 है, १५, अथ उद्यमवादी यचन, कहन उद्यमवादी कर्मसें
 न होत कछु होत है उद्यम काम उद्यमही सार है, उ-
 द्यमधी शुभाशुभ कर्म सुख दुख होत उद्यमधी नया
 बंला सीखन तइपार है, लिखत गिणनगीन नाद धिध्र
 उद्यमधी हाट स्वाट पाट पट सरप तइपार है एक जिन-
 मननय जांणे विन सय जीव कहत निलोक लोक हूये
 मझपार है, १६, लेउ घातू निह्नी तेल दधी छणी पट-
 मेल उद्यमधी भिन्न होत धातुनको खार है, उद्यमधी
 हलखंड नाज घोषे धरतीमें उद्यमधी काट खला मांही
 दैतहार है, उद्यमधी तुस दूर करके पीसत पुन उद्यम
 रसोईफार खाय नरनार है, एक जिनमननय जांणेविन
 सय जीव कहत निलोक लोक हूये मझपार है, १७,
 उद्यमधी तपजप नितनेम पांनघ्यांन गृह । वास छांड-
 कर होत अणगार है, घन घाती दूर होत तात है उद्यम
 कर्म अंगज कहीं जै तास कर्म किरतार है, उद्यमसें
 रंकराय घनधान्य योग भोग गढकोट सयकाम उद्यम
 प्रचार है, एक जिनमननय जांणेविन जीव सय कहत
 तिलोक लोक हूये मझपार है, १८, अथ सर्वज्ञ स्यादा-
 दीके यचन, खंचाताण करत है पांचों वादी भिन्न २ जा-
 णतन नपज्ञान कौनतंत सार है, खंचे कोउ एक पक्ष

[illegible]

जिनमननय जाणें विन सय जीव कहत तिलोक लोक
 भ्रमत अज्ञान है, १४, कर्महीन आदेसर जीव दुवादम
 मास अंतराय रही नहीं मिल्यो अन्नपान है, धर्म-
 मान स्वामीजीके पगपर रांधी ग्वीर करके गुवालेरीस
 खीला रोप्याफान है, तीर्थकर चमचर्त्ति हरीहर हलधर
 मंडलीक नलघर ग्वान मुलतान है, एक जिनमननय
 जाणेंविन सय जीव कहत तिलोक लोक भ्रमत अज्ञान
 है, १५, अथ उद्यमवादी यचन, कहन उद्यमवादी कर्मसें
 न होत कहु होत है उद्यम कांम उद्यमही सार है, उ-
 द्यमपी शुभाशुभ कर्म सुख दुख होत उद्यमपी नया
 चेला सीखत तइयार है, लिखन गिणनगीत नाद चित्र
 उद्यमपी हाट खाट पाट पट सरप तइयार है एक जिन-
 मतनय जाणें विन सय जीव कहत तिलोक लोक हूये
 भक्षधार है, १६, छेउ घातु निल्ली तेल दधी लूणी पट-
 मेल उद्यमपी भिन्न होत घातुनको खार है, उद्यमपी
 हलखंडे नाज घोबे घरनीमें उद्यमपी काट खला मांही
 दैतहार है, उद्यमपी तुस दूर करके पीसत पुन उद्यम
 रसोईकर त्राय नरनार है, एक जिनमननय जाणेंविन
 सय जीव कहत तिलोक लोक हूये भक्षधार है, १७,
 उद्यमपी तपजप निसनेम पांनघ्यांन गृह । घास छांड-
 कर होत अणगार है, धन घाती दूर होत तान है उद्यम
 कर्म अंगज कहीं जै तास कर्म किरतार है, उद्यमसें
 रंकराय धनधान्य योग भोग गढकोट सयकांम उद्यम
 प्रचार है, एक जिनमननय जाणेंविन जीव सय कहत
 तिलोक लोक हूये भक्षधार है, १८, अथ सर्वज्ञ स्यादा-
 दीके यचन, खंचाताण करत है पांचों वादी भिन्न २ जा-
 णतन नयज्ञान कौनतंत सार है, खंचे कोउ एक पक्ष

जाणिगे न रक्षनाको मृदनय जाणोचिना जाणे जो गमा
 रहे, हिंसा भांन उद्यो नर करीं जे गुम्जीयाको ताहिको
 उष्टान रतो जेन निमना रहे, एक जिनमननय जाणे
 चिन मय जीव रहन तिलोक लोक द्वये मध्यधार है, १९,
 जेमे काट भवदाने जानी देववाद गिण्यो पांच जिण
 ग्रन्थो निगद्यम जेसो दास्यो जे मरु घाटी तिण कल्यो
 दशद्वारी बांज जेसो गड घाटी कहे नाग कान मूप भा-
 ल्यो है, दन घाटी मसल्यो पंद देव चोतारेसो कहत
 है तिलोक लोक एक पक्ष गल्यो जे आप मन साच
 कहे मज्जनके भाव छद एम जानी एक पक्ष याद दूर
 नाक्यो है, २०, मृणक उष्टान शिक्ष करन प्रश्न एसो
 आगे पीछ छोटा बडा होन इनम जानिये, गुरु कहे
 सांकटी मरगम चले पांच नर आप पीछ छोटा बडा
 पांचे नही जाणिगे रवि जमी जीवा जीव मासू बहुत
 आप बडा पहली पाठ पक्ष इन्गे रुम पहला मानिये,
 आगे पीछ छोटा बडा तिलोक करी जे केम एकेकी थ-
 लाई कर पक्ष नही जाणिगे २१ जेमे पांच अंगलीसैं
 लेने हे कवलमुख देक आणी एकाद देणा नाभिडाइके,
 सेना मिले सर्वही गणांगण मांहेजिम मुभट समूह मिल
 मीनन पडाइके, धनुष पणछ नीर न्यागी रहे जयलग
 मयलग मारे नहीं खेचेंना चडाइके, एमे पांच मिल्यां-
 यिन काम नहीं होन कलु कहन तिलोक एक दीजे नव-
 डाइके २२ तंतु समभाव पदकाल अनुक्रम होन नीपजे
 निपतयस विधन अनेक है, उद्यम हीते तंतुचाय भुक्ता-
 दिक भोगे कर्म पांचुं पदार्थ मिल्यां होनकाज एक है,
 निपतीके यस हलुकर्मी छुईने जीव निकल्यो निगोद
 सेती पुन्यको विशेष है, मानुष जन्म पाय सदगुरु पास

जाय कहत निलोक धैण सुगन विवेक है, २३, भयथित
 तणो परिपाक भयो चेतनके पंडित धीरज उल्लसियों
 निणवार है, भयके सभाव शिवगत गामी मुनिवर
 तपस्या करत अनि ध्यानकर्म ग्वार है, मुर धीर धीर
 भीर तुरत भोजलतीर केवल ब्रसनकर टाले अंधकार
 है, कहत है निलोक कपि पांशु पदारथ जोग शिवपुर
 जाय जीय होत जैजकार है, २४, सम्यत एकोनवीस
 ऊपर गुणतीस वैशाख कृष्ण दशमी तिथि दिन गुरुवार
 कै, नियत स्वभावकाल कर्मको उद्यमवाद पांचोहीको
 मनपक्ष कल्याण विचार कै, आशाविम्व होय मिथ्यामें
 दुष्कृत तस्य सुरतायामें चूक जाणो लीजोथे सुधारके,
 कहत है निलोक कपि स्यादादपचीसी कपी निर्मल होय
 मती मुणविसनारकै, २५, इति पंचवादी एकांत पक्ष
 निराकरण स्यादादस्वरूपवर्णन जैनधर्म न्यायानुसार
 संपूर्ण ॥

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः अथ मध्यमंगलाचरण ॥

अरिहंत पारागुण सिद्ध आठ मूलगुण सूरिके छत्तीस
 गुण शोभाकर राजे हैं, उवझाय शोभने पचीसगुण दु-
 निवीच साधु मुनिराज गुण सत्तावीस छाजे हैं, सबके
 मिलाय घेने एकमो जु आठ भये थापना इनोंकी कर
 माला सुख साजे हैं, ज्ञानादिक तीनका सुमेरु वणाय
 भवि राम कद्वि मारक है सरय पाप भाजे हैं १,

अथ २४ तीर्थंकरोंका गुणवर्णन सबइया ३१ सा
 नाभि मरु देवानंद छोड़दिया सर्वा फंद योगधारी जिन-
 चंद ममता मिटाई है, करीने करमहाण पांम्पाहै अनंत

ज्ञान भविक विमल भाण कुमनि उडाईहै, तरण तारण
 खांम पोहता शिवपुर ठांम तीन लोक ठांम २ कीरत स-
 चाईहै, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान आदि अ-
 रिहंत ध्यांन महा सुखदाई है, १, छोडीनें सरय आय
 जोग लियो जगनाथ सीपल चलायो साथ अमी रस-
 याणीहै, सुण २ रावराण साचो मनलीयो जाण आया
 निस जिनआण किरिया प्रनाणी है, चालनाख्या कर्म
 पंस मूल नहीं राख्यो अंस उत्तर परमहंस पांम्या निर-
 पाणी है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान अजित
 जिनंद ध्यांन महा सुखदानी है, २, धीमण धीमणजम
 आगनामं गिणेणम तनखिण कियो नेम तजे राजकाज
 है, धानिया करम घाय केवल गिनान पाय उपगारी जि-
 नराज पांधी धर्म पाजहै, जीय घणा कीपारद क्षपकनि-
 श्रेणी थद पांमिया सुगन गद अखिचल राजहै, भणे मु-
 निचंद्र भाण सुणहो विवेकवान संभय जिनंद ध्यांन अ-
 मृत जिहाज है, ३, दंभीनें अधिकरूप पर संमाधरी भूप
 करी चित्त रथं पार पार बंदणा, जगनें अधिर जाण
 सुपनो सींइयारो भाण भयहर भगवांन तोडा मोह कं-
 दणा, अल्वट थारित्र पाल मोक्ष गया कर्म टाल सांभ-
 ना मदाई काल लिया सुखकंदणा, भणे मुनिचंद्र भाण
 सुणहो विवेकवान अंगमें हृदाम आण बंदो अभिनंदणा
 ४ मुमनि मुमनिघार कुमनने दीवी टार मुमनि भजन
 मार जिम गुण पानहै, मुमनिमें रखा शूल मुमनिरा
 फल्ग्या फूल मुमनि भूषण मूल दीटां दुखजान है, मुमनि
 दानार मूर अंधकार कियो दूर मुमनिरा रणतूर बाजे
 दिनरात है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान सु-
 मनिरा किया धान मुमनही आनहै, ५, हींगलू वरण

न लाल मणी दिनरात जोगनि
 जरिदहै, तप जप स्वपकर पद
 केवलवर हुया पर मिदहै, मुनि
 नपर काम स्रंस करम नाम
 मणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विदेह
 ज्यांन किया नचनिदहै, ६, मोह
 पोषे जिनराय घंटा करम घन
 भोग तज कीच मार लियो मोह
 बीच गाजै ज्युं सादल है, राख
 राखै रुख शिवपुर पांम्या मुम
 मुनिचंद्र भाण सुणहो विदेह
 महासुख मूल है ७, घंटा
 नेह उसम चारिघ छंद नते
 आप भारी तेजपर ताप मार
 फेरीहै, सुरनर करै संघ
 देव पाजे जसभरी है, ८
 कथान चंदाप्रभु जिन
 सीधरापनंद देही पद
 अणगार है करीनं कर
 मिया केवल पद जग
 मेट दियो मिथ्यामति
 पार है, भणे मुनिचंद्र
 जिनंद ध्यान किंद
 गयो मानानणे हा
 मायाप है, जग
 भोग परिहर न
 जगने जीवनलकी

दीयो
 कथान
 ट मंड
 अमृत
 ज्योग
 १ श्रद्धि-
 करमकाट
 शिक्षकोहै,
 १६, यपदै
 तर यत्तीस
 पदमंड
 नविध रिद
 मुख प्यार
 कुंभुजिनंद-
 नज इतारुडा
 छिनयैक-
 गीनाम रहे
 ननवर अ-
 न सुण
 तेह है,
 ररि हरे
 न तणो
 त है, घटमें
 लाल
 कथान

घो पारकी घो अदभूत लाभ लीधो अनोपम ज्ञान दीधो
 दीनके दयाल है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान
 धर्मनाथ ध्यान धरो निरे भवजाल है, १५, खट खंड
 सिरदार घोमठ हजार नार हयगय परिवार अखूट
 भंडार है, अनुत्तर कामभोग आय मिले पुण्ययोग
 क्षमा २ करे लोग कीरन अपार है, एसी ऋद्धि-
 तणो धाट तजलीनी गिय घाट आट्टही करमकाट
 हुवा सिद्धसार है, चंद्रभाण चिनधार शिक्षकटै,
 गिनकार संननाथ संनसार जपो जैजकार है, १६, बचदै
 रतनसार अदभुत गुणकार नरवर अज्ञाकार परीस
 हजार है, पोहस हजार सुर अज्ञाकारी संतपुर पदखंड
 नरवर साराही सिरदार है नाटक बत्तीसविध रिद्ध
 सिद्ध नबनिद्ध सहु छोडी हुवा मिद्ध लीया सुख प्यार
 है, भणे मुनि चंद्रभाण सुण हो विवेकवान कुंघुजिनंद-
 ध्यान तारत संसार है, १७, बडअसील गप्याज इतारूडा
 गजराज पियादल सधमाज छिनवैक रोड है, छिनवैक-
 रोडगांम चौसठ हजार घांम पासवान दूणीतांम रहे
 कर जोड है, एसी ऋद्धितजकर जोगलिया जिनवर अ-
 जर अमर पुर गये करम नोड है, भणे मुनिचंद्रभाण सुण
 हो विवेकवान अरिनाथ ध्यान कियां मिटे करम कोड है,
 १८, विरकन रक्षा आप जगको न लागो पाप परि हरै
 सहताप पंटा घरम पोत है, दयावंत खनदंत गुण तणो
 नहीं अंत उपगारी अरिहंत, टाली मिथ्या छोट है, घटमें
 गिनान घाल काढीया करमसाल घरममें रहै लाल लीनी
 शिव जोत है, भणे मुनि चंद्रभाण सुणहो विवेकवान मल्लि
 जिन ध्यान किया निरमल होन है १९, घीसमा जिनंद
 राय सांवलीमूरतकाय थारित्रमुं चिसलाय तजेठाट है,

है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान शीतल जिनंद
 ध्यान टाले भवताप है १०, ज्ञान घोड़े भगवान बढा
 महा बलवान शील शैल्या सावधान समकित शैल है,
 गीरज कटारी धार तपसारी तरवार गुणारी गुरज सार
 पाप दिया पेलहै, जीन हृदं जिनराय मुर नर लागा पाप
 गुणनि विराज्या जाय सदा सुख रेलहै, भणे मुनिचंद्र
 भाण सुणहो विवेकवान अंगन जिनंद ध्यान आप सुख
 पेलहै, ११, वासुदेव जापापुन शिवपुर दिया गृन आप
 घणा अदभूत मंथर कपाय है, अठ लख दशवास ली-
 लामणि गृह्याम परहरे मोहफाम तजे लोभ लायहै,
 धरनिं शुक्ल ध्यान धाम्यापद निरवाण सुरनर रायराण
 बंदेभिर नाय है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान
 वासुदेव जापापुन महा सुणदाय है १२, विमल विमल
 धंग अमल कमलनेण मकल जीवारा मैण दीठा जागेण-
 महै, सुमना मिरहै शोभ लाभै नहीं मूल लोभ समुदर
 जुं अण शोभ निरमल नेमहै, सुरनर काज मार जनम
 मरण जार निरमल निराकार लिया सुखपेम है, भणे मु-
 निचंद्र भाण सुणहो विवेकवान विमल विमल धंग चि-
 नामणि नेमहै, १३, अजोघ्या गुरीना ईस आयु यम
 लक्ष्मीम जोगलियो जगदीश दयादिल आणीहै, काम
 कुंभ जेम माम मारी या जगन काम जीव घणा ठाम २
 किया गुणवाणी है, सुखदाई सुरनर पारमजु गुणकर
 अजर अमरपुर घणा निरवाणी है, भणे मुनिचंद्र भाण
 सुणहो विवेकवान अंगन जिनंद ध्यान शिवकी निमाणी
 है १४, धर्मनाथ धर्मचार कीयो घणो उपगार उपदेश
 दियो पार मोटा किट पालहै, उवाछा अंतर नेन दिया
 घणा मावधेन पर उपगारहैन बांधी धर्मपाल है, धर्मधे

सचार गुण तणो नहीं पार मेरी बुद्धि अनुसार कीया
ये ब्रह्माण है, सबइया पचवीस भाया गुण जगदीशभ-
भणें गुणे नितदीस करन कल्याण है, संयन अठारेपास
पचावन माघमास बुद्धि पांचम फले आस पार भला
भाण है, भणे मुनि चंद्रभाण सुणहो विवेकवान चोवीस
जिनंद ध्यान महामुख ग्वाण है, इति चउवीस जिन-
स्तुति श्रीप्यपंथी चंद्रभाणजीकृत संपूर्णम् ॥

[अथ मुनिगुण ३२ सबइया ३१ सा]

॥ पापपंथ परिहरे मोक्षपंथ पगधरे अभिमान नहीं करे
निचाकुं निचारी है, संसारको छोड़यो संग आलस नहीं
है अंग कर्मासुं करे जंग मोटा उपगारी है, मनमांहे नि-
रमल जेहवो गंगाको जल काटे है करम दल नयतत्य
धारी है, संजमकी करे खप धारे भेदे तपेंतप एसे अण-
गारताकुं घंदना हमारी है १ ज्ञानकरी भरपूर विकधासुं
रहे दूर तपस्या करण सूर मोटा अणगारी है, तारण
तरण ज्याज आतमाका सारे काज दोष सेती आणे
लाज गुणारा भंडारी है, छोड़ी सब खोटी मन थोली
राखे समकिन निरयथ थोले सत्त शूट परिहारी है, देख
सुद्ध उपदेशा घालत है दया में रेस एसा अणगार ताकुं
घंदना हमारी है, २ तन सहे शीतताप जिन जीरो जपे
जाप कर्म मल देवे काप बहुत विचारी है, छोड़दियो
धन धान ध्यावे है शुक्ल ध्यान सधार है सावधान कु-
मति विहारी है, सुनाघर समघार नकरे देही की सार
शील पाले खड्ग धार विषय दूरवारी है, राग द्वेष मल
दोष निरमल होवे धोष एसा अणगारताकुं घंदना ह-
मारी है, ३ क्रियाको कथाण कीध दयातणा बंध दीध

माचरी पण्ड मीध बजोन करारी है, नपम्याका किया
 बाण टप्या निडाण जाण बाण्या है मधुगी बाण घ्यांन
 सी कटारी है, समरिन मेल् झाल जांन घोडे चढया
 लाल धोरज की करी टाल क्षमा नर्यारी है शीलमे
 ग्यालटे लार कम्मांसु करे गट एमे अणगारनाक वंदना
 हमारी है, ४ परीमा उपना रीर ह्वै नहीं दिलगीर
 मैदां रहे मर्यार डेपन दिगारी है समता नांही शरीर
 पर जीवां जाणे रीर सजिल न पांच नीर पाप परिहारी
 है, मारण कम्म मीर नपम्याका बांच नीर गवै नहीं नक-
 मीर आनमाक नारी है मान पंच राखी मीर कोड़ी
 नहीं राखे नीर एमे अणगारनाक वंदना हमारी है, ५
 अमल आचार पाले दोष मथ करे टाले जासण मरण
 जाले समताक मारी है नप करी ननगाले नारी सांमो
 नहीं नाले विषे दृष्टि पाछी बाले विशुद्ध विचारी है,
 छोहदियो रंग नाद करे नहीं परमाद चवै अनुभो को
 म्याद उद्यन विहारी है बस करे नन मन बाले है करम
 वन एमे अणगारनाक वंदना हमारी है ६ ज्ञान ध्यांन
 रहे लीन जमुनाके मांहे मान प्रवचन रस पान शुद्ध गु-
 णधारी है, डट्टी पाच बसकीनटाच्या घणा पर्यान देव
 गुरु धम्म तीन विशुद्ध विचारी है, देहाने पाइन क्षीण
 ह्वै नहीं ग्विण तीन कम्म कांटे छीन छीन धम्मके बेपारी
 है, यधानथ्य पंध जिन मुगतका मुन दिन एमे अणगार
 नाक वंदना हमारी है, ७ जिन जीको लीयो धम्म मेट
 दियां मिध्या नम कांस भोग दिया बस नजी रुद्धि
 मारी है, माकर काकर मम गाल योल्यां खावै गम दीना
 है आनम दम क्षमा गुण भारी है, वाईस परीमा मम
 सहे मुनि एकदम जाको कामुं करे जम कुगति विहारी

हैं मिट्टां तमें रहे रम चाले नहीं धम धम एसा मुनिराज
 ताकूं बंदना हमारी है, ८ मुगनि कालेइ मग जोपरमेले
 पग मन मन रामे दग तजी सप जारी है, ज्ञान प्यांन
 रहे लग गुणारो नहीं ऐधनग उपदेश देये जग कुमनि
 विमारी है, दुर्जन नर धग गालपोल्यां मुन्व अग हुये
 नहीं धग धग खमना अपारी है, तपस्याको सेल्यो गगग
 मारण करम दग ऐसे अणगार ताकूं बंदना हमारी है,
 ९ निरवध पोले येण सकल जीवारां सैण चारधमें पाये
 येन आनमा सुधारी है, निरवध सेवे लेण बसराये नि-
 जनेण नारी सप जाणे येण शुद्ध ब्रह्मचारी है, साथो
 जाणो मन जैन बीजा सह माने फेन उपदेश देये ऐन
 जग हितकारी है, प्यांन घरे दिन रैण समजाणे घरी
 सैण ऐसे अणगार ताकूं बंदना हमारी है १० करणी
 करे कठिन दुरबल करे मन निरे है कर मरन थोकड़ी
 घदारी है, अशुद्ध न लेवे अन्न कुकथा न देये कस घूट
 समजाणे धन समना तो सारी है, मारिये दुसट मन
 गाये सप शुद्ध गण हटे नांही कीर्त्त धन महिमा बधारी
 है विलंपन करे खिन ज्ञान भणे भिन भिन ऐसे अण-
 गार ताकूं बंदना हमारी है, ११ अकल पहोन ऊंठी
 साथो पंथ लियो डूंदी रान दिन ताकी हुंठी प्रसुजी सि-
 कारी है, ज्ञान तरणी घणी पीक भिन्नरपाडे तीक सदा
 रहे निरभीक माया सप टारी है, बया लीम दोष दार
 निरदोष लेवे अहार संजम रो यहें भार लडे नलिगारी
 है, तप तेज रहे दीप परीषहकूं लेवे जीप अमे अणगार
 ताकूं बंदना हमारी है, १२ दिलसाफ निसदिन भजन है
 भगवन मिथ्या सेनी दूर मन मुनि गुणधारी है, अशुद्ध
 न ग्याये अन तप कर दहेतन कोडी नहीं राखे धन उत्ती

मानसी पणल मीध वज्जोन रुगरी है, नपम्याका किया
 बाण दुर्ग्या निजाण जाण बाज्या है मधुरी बाण ध्यांन
 री रुदारी है, समस्तिन मेन् जाल जान पोहे चढ्या
 नाल धीरज की करी दाल क्षमा नग्यारी है शीलसे
 न्यान्हे नार कस्मांसु करे गरु एसे अणगागनाक वंदना
 हमारी है, ४ परीमा उयनां गीर ह्रुव नहीं दिलगीर
 मैदां रहे सरसीर देवन दिगारी है समना नांही शरीर
 पर जीवां जाणे पीर सनिच न पांचे नीर पाष परिहारी
 है, मारण कर्म नीर नपम्याका बाधे नीर गन्वे नहीं नक-
 सीर आतमाकं नारी है मान पंचे राखी नीर कोड़ी
 नहीं गन्वे नीर एसे अणगागनाक वंदना हमारी है, ५
 अय्येह आचार पाले दोष सब दुरे दाले जायण मरण
 जाले समनाकं मारी है, नष रुगी ननगाले नारी मांमो
 नहीं नाले विषे दृष्टि पाछी वालं विशुद्ध विचारी है,
 छोहदियो रग नाद करे नहीं परमाद चने अनुभो को
 स्याद उशन विहारी है, वस करे नन मन वाले है कर्म
 यन एसे अणगागनाक वंदना हमारी है, ६ जान ध्यांन
 रहे लीन जमुनाके माहे मान प्रवचन रस पान शुद्ध गु-
 णधारी है, इट्टी पांचे वसकीनडाद्या घणा परवीन देव
 गुरु धम्म नीन विशुद्ध विचारी है, देहीने पाइन क्षीण
 ह्रुव नहीं म्णिण नीन कर्म काटे लीन लीन धम्मके पेपारी
 है, यधानध्य पंध जिन मुगनका मुन दिन एसे अणगार
 ताकं वंदना हमारी है, ७ जिन जीको लीपो धम्म मेद
 दियो मिध्या तम काम भोग दिया वस नजी रुद्धि
 मारी है, साकर काकर सम गाल योल्यां म्वाये गम दीना
 है आतम दम क्षमा गुण भारी है, वाईस परीमा सम
 सहे मुनि एकदम जाको कामुं करे जम कुगनि बिड़ारी

तजी कपट धंधरासगेरी है, विचरत योगघट नभपर जे
मनट तपें लही भयतट आनमा उजेंरी है, घणो साफ
करी घट रहै जिन नामरट, ऐसा अण० १८, ज्ञान घोडे
अमधार हया सन्त अणगार सिमायना बाजासार विधि-
सुं पजायनै, संजम सिनाह दोष अधिक रक्षा छ ओष
दया आउष अनोष कर मैं संभायनै, दान झील तप
भाय पारों मोटा अमराय साथे हया सम भाय मन मैं
उमायनै, मुगनि किल्लोर मांष जंगकरी पैमे जाप, ऐसा
अण० १९, काटत करमदल छोडदीया मय छल परिहरे
फूल फल जोयें नहीं आरसी अनुकूल प्रतिकूल परीसहा
पर पल ऊपना रहे अचल सोही काज सारसी, मेटे मोह
मिथ्या मल ग्यानतणी अटकल सीमाई ने परघल संसा
सब टारसी, आणीनै संतोष जल मेट दीधी लोभ झल
ऐसा गुरुपारो जीव तिरें सोही तारसी, २० संसार
नीन जीलील सिद्धांतमें करी झील साथै मन पालै सील,
नहीं जोयें नारसी, दुरयल करी देह गिरया गुणारा गेह
न्याती हूं ती तज्यो नेह माया जाणै छारसी, आतमांरा
ढालें दोष कर मारो करै शोष भगनराडफ मुनी पैगाइ
पजारसी दाताखूंम रंकराय सह सेती समभाय एसा
अणगार सही तिरें सोही तारसी, २१, भाय नींद गई
भाग जंबू जेम उठया जाग विधि सुंलीयो घैराग छती
कद्वि छोडनै, निमी घणी तजी नाग रंचकन धरै राग तेम
जगदियो त्याग मायादल मोडनै, अन्तर बुझाई आग
लपलेस नहीं लाग दिलरा मेटण दाग तपैतन तोडना,
पास करी मन बाग मालत मुगत भाग ऐसा अणगार
इस जपुं कर जोडनै, २२, झीणो जिन मत झाल सोधि-
या भीतर साल मुनी भए तज माल चित जाणै चन्दणं,

ऋद्धि छांडी है, धरत धरम धन छांडे नहीं एक छिन
 गौतम ओपमगिन धीर गुणधारी है, भलो उपदेश भन
 जुगतिसुं तारे जन ऐसे अणगार ताकूं बंदना हमारी है,
 १३ तजय चंपेल तेल मान सब दियो मेल विपरूप विपे
 खेल उपरधी उपाडी है, बधारे धर्म देल परीसाकूं लेवे
 झेल खेलत उत्तम खेल साचा सुविचारी है, इंद्रियाकूं
 देवे गोप क्षमासुं रखा है ओप करे नहीं मूलकोप गिरया
 अपारी है, सदा रहै निरलेप कर्म्मोंकूं देवे लेप ऐसे अ-
 णागार ताकूं बंदना हमारी है, १४ भगवंत ज्ञानभेद,
 सुरत लगाई ठेठ, मिथ्या मन दीयो भेद, अखंड आचारी
 है, शशि जिम दीसे सोम हृथै नांही प्रति लोम संधारों
 करे छै भोम दया अधिकारी है, दिग्याडत सुद्धराह स-
 कल जीवानां नाह भेद देवे भवदाह आतमा सुधारी है,
 धिरकत रहे सदा लोभ न धरे कदा ऐसे अणगार ताकूं
 बंदना हमारी है, १५ दिलसाफ निसदिन भजत है भ-
 गवन मिथ्या सुर नाणे मन एसी इकतारी है, अधिक
 न व्यावै अन तप करी दहै तन कोडी एक नहीं फन
 छनी ऋद्धि छारी है, धारत धरम धन छोडे नहीं एक
 छिन गोसुन ओपमगिन धीर गुणधारी है, भलो उपदेश
 भन जुगत सुंतारे जन ऐसे अणगार० १६ मिथ्या मोह
 उनमूल हिंसा तजी लघु धूल झूठ नहीं थोलै मूल तजी
 सब घोरी है, परिहखो मैयुन, नवविष तज्यो धन राते
 नहीं भय्ये अन धरमका घोरी है, सुगुरूकी पाले सीख
 कुपंडै न भरे पीख भमरा ज्युं लेवै भीख तजी सब जोरी
 है, भिन्नदभाम्ये भेद मूल नहीं करै स्नेह, ऐसे अण० १७
 पर छन परगट भारे नहीं काय पट कूडसंख देत कट
 सन समसेरी है, बरजीने मनबट उनमूले मद अटकायासे

रक्षाट घाँ, शिवापुर घाट आंणै नहीं मद आठ निरम-
 नेम है, घन घर तजी घाट परदल में घाट आणै
 ही अघ घाट मुर अन्न मीम है, दुरमन दीवी दाट
 या दया मया माट फिर करै नरघाट हीयो ठाठो हेम
 क्षमना गजाना घाट कर्म रिपु देखै काट पेमा अण-
 तार ताकुं मेरी तमनीम है, २८. महु मेर दीवी मं-
 कीही कारी फक फक घर जीने मन बक रेड दीवी री-
 सहं, पर हर काम एक करै नांही फेर कंज रागदेष करी
 रंक बाट दे कलीमहं, अरीनणो नोयें अंक टाठो नहीं
 बरैटंक देवहं सुग तटंक जयजगदीमहं, अंजे मंजे नहीं
 अंज मोहं जेम दूध मंज नमो मह नर नार अंजे मुनी
 ईमहं, २९. समक्षित हिय शुद्ध बाहुन घट भट बुद्ध गीट
 जेम नजी गिद्ध मनना मिदायनै, दिहमाक जेम दूध नि-
 रमन गुणनिष विद्या नमै विष विष आटम उदायनै,
 भाग देन मोह नद काग नहीं छोपे कद देन क्या करै
 हद करी है कदायनै, पूजने परम पद रिपुकर देनरद
 देमा अमलार ताकुं बंदु निर नांवे, ३०. सुभाई नीनर
 काल कागदीने मोहजाय निदलनर बल दान मुनी
 बल जेम है, मया नहीं गमै नृप किमरी मैं पौने
 कृद भवि जयकनी दुर दाटै निप्या छोन है, अंगयी
 छल्लम छोट लल्लम छोर छोर जिनवर नमो जेम करन
 लल्लम ! वन मुनन मंदि और बंज करै नांदि पेमे
 अल्लम ! ते इनागी इंदोन है, ३१. जगननी नजी बुद्ध
 १. बुद्ध नर बने नबोदद अनंदन पान है,
 नीन नीनो जेम दूध जेम नंतवान नरनीक
 मोन है, ३२. रुही रीन प्रह्वीमुं घरी
 १. नान मोन है, रिपु ज-

लग्यो ज्ञान रंगलाल चालै ऋपनणी चाल सखरा लेवै
 सवाल नखरनि कंदणं, अनोपम ज्ञान आल खेलत उ-
 त्तम ख्याल वेग शिव करे भाल नमी नाभिनंदणं, घण
 दढ घाव घाल पापरिपु दैतपाल ऐसा अणगार ताकूं
 बार२वंदणं, २३ अङ्गे धरी उछरंग सुंदरी को तजै संग
 भाव नहीं करै भंग कुल सोभ करसी, आगम अरथ
 अंग चित मांहै धरै चंग ज्ञान जिसो तोय गंग दया मग
 दरसी, राचत सज्जम रंग अरिहंत धरै अंग जोरावर करी
 जंग पाप पर हरसी, लीयां फिरै जैनलिंग रहै सदा एक-
 रंग ऐसा अणगार इस वेग शिववरसी, २४, सिद्धान्त
 का पैणसुणी माया नज हुआ मुनी गिरवा यहोत गुनी
 अंगमें उल्लासता, भिन्न२ज्ञान भणी थोखा गुण लेतधुनी
 दया करतारै दुनी भला पैण भासता, हरखत पाप हनी
 घटमें अकाल घणी, धरै जिन राजघणी दुरमनि घासता,
 गीत नाद तुछ गिणी, बाल दैतकाम भणी ऐसा अण-
 गार ऐसे सुख लहै सासता, २५, उरसैं गयो अन्धेर ग्र-
 न्धरा सदीपी गेर काहि नाहि धरै फेर खूर पीर सतमें,
 मन दढ जेममेर शत्रुअघ पर सेर हणत है हेर हेर मुनी
 जिन मन मैं, साही सत्त समसेर घोर काल लीयो घेर
 जमहूकूं कियो जेर चतुराई चित्तमें, भगवन् पैण भेर
 यजायत्त घेर घेर ऐसा अणगार इस गछै शिवगत मैं,
 २६, परम घरम पांम बरजत भाव धाम हणने हियारी
 हांम ओर तजै दांमकूं, गच्छत नगर गांम ठहरै नहीं
 एकठांम जतना सूं राखै जाम कामी करै कामकूं, घोर
 नार कीरी घांम तप करी टालै तांम निसदिन सिरनाम
 समरत सांमकूं, मूरपणे संगराम करीनैं सुधारै काम
 अैसा अणगार धे सिधावै शिव धामकूं, २७, कुमन जं-

जीरकाट वहै शिवपुर वाट आणै नहीं मद आठ निरम-
 ल नेम है, व्रत धर तजी खाट परदत्त सेवै पाट आणै
 नहीं अथ चाट सुर अन्त सीम है, दुरमत दीवी दाट
 मया दया तणा माट धिर करै नरधाट हीयो ठाढो हेम
 है क्षमता खजाना खाट कर्म रिपु देवै काट ऐसा अण-
 गार ताकुं मेरी तसलीम है, २८, सहु मेट दीवी संक
 फीही कारी फक फक घर जीनें मन बक रेड दीवी री-
 सकूं, पर हर काम पक करै नांही फेर कंख रागटेष करी
 रंक काट दे कलीसकूं, अरीनणो खोचै अंक टालो नहीं
 करैदंक देनहै मुग तडंक जपैजगदीसकूं, अंजे मंजे नहीं
 अंग्व सोहै जेम दूध संख नमो सह नर नार असे मुनी
 ईसकूं, २९, समकित हिय शुद्ध यहुत घट भई बुद्ध रीट
 जेम तजी रिद्ध ममता मिटायनै, दिलसाफ जेम दूध नि-
 रमल गुणनिध विद्या भणै विध विध आलस उडायनै,
 मार दैत मोह मद फार नहीं छोपे कद हेत कथा कहै
 हृद काफी है कपायनै, पूजीने परम पद रिपुकर देतरद
 पेसा अणगार ताकुं बंदू सिर नांयवै, ३०, बुझाई भीतर
 झाल फापदीयो मोहजाल सिद्धन्तर चल डाल खुली
 ज्ञान जोत है, माया नहीं राखे भूल किमही मैं थोलै
 कूड भवि जीवतणी दूर टालै मिथ्या छोट है, अंगपी
 आलस छोड गांमपुर ठोर ठोर जिनवर तणो जोर करत
 उद्योत है, सुरत मुगत मांहि और बंछा करै नांहि ऐसे
 अणगार ताकुं हमारी टंडोत है, ३१ जगनरी तजी बुद्ध
 आतमांसं करै बुद्ध तार यानें भवोदद्ध अखंडत पोत है,
 सण जेम देतसीख मीठो जेम दूध ईग्व तंतयान तहतीक
 मिथ्या तम खोत है, रानदिन रूटी रीत प्रमुजीसुं धरी
 प्रीत गावै रूडा गुणगीत तज्या सब तोत है, विचरै ज-

[अथ वैराग्य भजन]

[illegible]

[4th Floor East Deck]

۱۰
 ۹
 ۸
 ۷
 ۶
 ۵
 ۴
 ۳
 ۲
 ۱

२, बलदेवकी बाय सुणी कृष्णराय सखीयनसें जाय यह
 फुर माया, परणावो नेम कृष्ण घोलाएम सखीघरके पेम
 मन हुलसाया, किरसनकी पान किये परमान नेमीकूं
 आणके मिलमाया, होलीमें फाग खेले घरके राग सय
 सखी लाग व्याह मनाया, उग्रसेण राय जोकी कीना
 लाय क्या जान सझाई हृदभारी राजुलसी ना० ३,
 मिल छपन कोड जादवकी जोड नेमी बांध मोड रथपर
 बढ़िया, बांटे तोरण जाय सुण पशुबोंकी हाय दया चि-
 तमें लाय रथ फेर दिया, तजके संसार चढ़गये गिरनार
 सुमतीकूं धार सुघरस पीया कहे राजुलसती नवभयके
 पती तुम छोडो मनी क्या गुना किया, मन छोडो हाथ
 मुझै लैयो साथ तुम दीनानाथ हो उपगारी राजुलसी
 नार० ४, बरसी दान दिया बनमें संजम लीया काया
 सकल कीया अपणाजीया, धनराजुल नार संजमकूं धार
 रहे नेमि तार समझाय दिया, इंद्रियोंकूं जीत तज जगकी
 रीन प्रभूखूं प्रीन कर ज्ञान लिया, थोपन दिन जान प्रभु
 पहली आन लई शिवधान शुद्ध फांम किया, कहै कनी-
 राम भज आठूं याम प्रभूका नाम ले चित्तधारी राजुलसी
 नार दीर्घा० ५, इति पदं ॥

[श्रीपार्श्वनाथजीरी लावणी ढेर अलखके लावणीमें,]

॥ पास जिन ऐसा हेहो पास जिन ऐसा हेवोहो मया
 देव मेरा पास पास निरखूं धरूंमें ध्यान सदा तेरा, देर
 अश्वसेन हेराजा हेहो अश्वसेन राजा हेवो घटे नथ घारी
 सकलकला गुण खान जिनो घर घामादे नारी, तीन ज्ञानों-
 से हेहो तीन ज्ञानोंसे आधे उदर मानारे सुपना दश
 और चार देख माता हरसी नारे राणी राजासें हेहो राणी

राजासं कहती सुपनानिण बेला पास पास नितरदूँ घरं
 में ध्यान सदा तेरा १ टेर, बनारस नगरी हेहोव० हेहो
 प्रभु आप जनम लीया, चोसठ इंदर छपन कुमारी जनम
 महोछव कीया, नीलवरण काया हेहोनी० देखीनें हुलसे
 मेरा हीया, कमठ बिडार नागकुं ताखो घरणंदर कीया,
 सबी मन मोहे होकांइ दरस पास केरा, पास० २, तीस
 बरसां लग हेहो तीस बरसां लग प्रभु रहै घरमांही,
 घरसी दांन प्रभु देकर लीनो संजम सुखदार्ह, याईस प-
 रीसा हेहोपा० प्रभु खचिम लाये, तप जप करणी करके
 प्रभु केवल पद पाये, करम खपाकर दिया शिवपुरमें डेरा
 पास० ३, दासकी अरजी हेहोदा०, प्रभु सुणिषो जिन
 राया, किरपा करके दीजो मुझकुं शिवरूपी भापा, जि-
 नंद गुणगाया हेहोजि० सय काहूके मन भाया, ओर
 देय सय दिया छोड़ पारस चित लाया, कनीराम कहता
 प्रभु मेरो भवकेरा, पास० ४, इति पदं ॥

[लावणी दूसरी नेमनाथजीकी]

॥ प्रभुनेमनाथ तजगये साथ मेंकहुं कयलग बात सखी
 कहै राजुलनार मेरे जिनसं प्यार में जाऊं नेमके साथ
 सखी, टेर, थे आठ भवोंके सजन मेरे करगये गमन उत
 पान सखी, ना आप आये ना पानी लिम्बीना रखी कुछ
 लोकात सखी, हुये थारेभास करै सबी हास जा दिनसं
 घडी परानसखी, फेरोंकी बार तजगये प्यार मन मार
 मार पिसनान सखी, छुप कहांसं रहूं, दुखकासे कहूं
 मन देखत पान लजान सखी, कहै राजुलनार मेरे जि-
 णसं प्यार में जाऊं नेमके साथ सखी, १, मोहोकी मदी
 में सूती पडी थी जोषनमें मदमात सखी, अब आपा

सुझा मेरे दिलकुं बुझा अप निसंक गिरिकुं जात सखी,
 रस्तेके पीच भच रहाकीच थी विर खाकत घरसात सखी,
 भीजे हैं चीर घरसे हैं नीर सती चीर सुकाणे जात
 सखी रहनेम मुला ज्ञान घ्यांन डुला यो देखे उघाडा
 गात सखी कहेरा० २ रह नेम थोल नहीं तेरे तोल है
 अदसुन रूप विक्षात समी, घरमांही रहो फिर कांसुच
 हो सुख विलसो मेरे साथ सखी, कहै सती पिछाण
 सुणहो सुजाण तेरे दिलकुं तूं समझातो जती, संजमकुं
 धार फिर थंछे नार थिक्कार सुझे हैं सात जती, सुण सती
 पैण खुलगये नैण रहनेम ठिकाणे आत सखी रामु० ३,
 रहनेमि धीर होगये धीर तैं तार दिया मुझ मात सखी
 केवल उपाय शिषपुरकुं जाय करगये नाम विक्षात
 सखी, समी भय सुधार रहनेमि तार हुई ब्रह्मरूप सा-
 क्षात सखी, दाखला दिया धन उसका जिपा सुण समझे
 उसम जात सखी, पीकानेर गुलजार सेहर पे राम मुनि
 छंद गात सखी रामु० ४, इति पदं ॥

[अथ श्रीसीमंघर स्वामीका स्तवन लिख्यते]

॥ महा विदेहमें थोथो आरो जिहां बिराजो आप भरत
 क्षेत्रमें कसंजीपंदना जप सुं थारोजाप में तो दरसनकर-
 सृंजी में तो सेवा करसृंजी म्हारेरे सतगुरुजीरीमें तो सेवा
 करसृंजी, १, सेवाकरसुं दरशनकरसुं जिकोदि हाडो
 धन, कपातो जांणे केवल ज्ञानी, के जांणे भारोमन म्हे-
 तोद० २, हंस घणादि नारी हुंनी मुझहि बढेमें तेज आ-
 वणरी भारी आसंग होती, तो इन करतो जेज म्हेतोद० ३,
 स्वामीजीतो माहरो साहय म्हे स्वामीजीरोदाश बसररहा
 भारे हियडे भीतर ज्युं फूटनमें बास, म्हेतोद०, ४, स्वामी

जीरी मुरत मुरत घाली लागे मोग निर मंतारा नैणन
 घापै, पाणी मीठी होय म्हंतोद० ५, म्यामी जीनो सो-
 घन वरणा दिप २ करनी देह नैणा दीठां लागे मीठा
 ज्यांरीकर सुंसैय, म्हंतोद० ६, अंतर जामीरा वारणा लेऊं
 ग्याडामें लग्नवार करणा मागर किरपाकी जो भवमागरधी
 तार म्हंतोद० ७, म्यामीजीनो म्हारं मनमें, व्याप्या सगली
 देह, रुंम रुंममें थम रहामारं, ज्युं वादलमें मेह, म्हंतोद०
 ८, दूर दिसायर म्हारा साहय, मिलियां आवै मन्न,
 पपइयो पाणीनं तरसे जूनरसे म्हारो मन्न, म्हंतोद० ९,
 म्हारो मनडो आवै जावै, जहां बैठा जगनाथ, भाग्यर
 भीतर कोही न गिणुं, नहीं गिणुं दिनरान, म्हंतोद० १०,
 म्यामीजी तो मिलियां पीछे, रंगमें पडगयो पास, म्यामी
 जीरे आगल करता, सुणसी सय अरदास, म्हंतोद० ११,
 म्हारेनं जिनवरजी सरग्या नहीं कोइ जगमें देय, जिन-
 वरजी तो साचा साहय ज्यांरीकरसुं सेय म्हंतोद० १२,
 ओर देय म्हारे दाय न आवै, जीता रागनं देय कपि रा-
 यचंद इम कहे, केवल शानी एक म्हंतोद० १३, समन
 अठारे घरस छतीसे रेवाड रह्या च्यार रात सीमंधर मि-
 दरजी आगे जोड्या दोनूं हाथ म्हंतोद० १४, इति पदं ॥

[अथ सीमंधरजीरो दूसरो स्तवन लिख्यते]

॥ श्रीसीमंधरसांम इकचित थंदू हो धेकर जोडनें पूरप-
 देसे हो प्रभुजी परवला नगरी पुंटरपुर सुख ठाम
 धेकर जोडी हो आवक वीनवै श्रीसीमंधर स्वाम इक-
 चित थंदू हो धेकर जोडनें, १, चौतीस अतिशय हो प्रभु
 जी शोभता घाणीपन रे ऊपर बीश एक सहस लक्षण
 हो प्रभुजी आगला जीता रागनेंरीस इकचि० २, काया

गाया, सुण प्यारे जद जीन ~~आँखें~~
 ही आया, [मेली,] देयता मुन ~~हैं~~
 पणाये, पैस्याके संगही ~~पार~~
 लगेल बूरण पैस्या ताई नाह ~~हैं~~
 जिमकेज० ५, पैस्या की नो ~~हैं~~
 पहीन पिस्ताप, अब कन्या ~~हैं~~
 न भाय, कन्या मोल जो मेरे ~~हैं~~
 माह, घला सेंठजी उस कन्या ~~हैं~~
 सुण प्यारे घलाजी कहें ~~हैं~~
 प्यारे पापक कहें मोनइया ~~हैं~~
 प्यारे एक लाम मोन इया ~~हैं~~
 कन्याकूं सेंठ सेंजारे इत ~~हैं~~
 पपन उषारे, भायार सेंठ ~~हैं~~
 आपक मेरे धरमका है ~~हैं~~
 घाला जीहूं लेकर सेंठ ~~हैं~~
 उस पापकहूं सेंठनें ~~हैं~~
 कुटम कपीला सेंठनें ~~हैं~~
 कर मांजी सबहूं पपन ~~हैं~~
 हूं पूरी सेंठ पणार्, ~~हैं~~
 तुमी जदलाई, मुन ~~हैं~~
 मांही, [मेली,] मांनर ~~हैं~~
 माला, मुन ऊपर ~~हैं~~
 घला सेंठजी भाया ~~हैं~~
 जिमकेज० ७ अजो ~~हैं~~
 इहां से आय, अजो ~~हैं~~
 पोपाय, अजो ~~हैं~~
 पाय, परन ~~हैं~~

र
 प्या
 लं प-
 मुनीरं,
 वण लगी
 लोग तो मय
 एक लोग नहीं
 मुन प्यारे मुनि-
 ला मुन प्यारे
 प्यारे पीछा तो
 पंदनपानाजी
 नीले निर मोही,
 उदगारी ५०

चाय, सुण प्यारे खोले हे पिनाका मैल चरण हाथोंका,
 सुण प्यारे मैल खोलने छटाकेस माथाका, सुण प्यारे
 माथासं केस लटका दो दो हाथोंका झेला, घनाजी केस
 सवारा, आंख्या आडे सुंदारा, सेठाणी पाप विचारा,
 धनदत्तजी सामाभारा, ये मेरी सोकडली होगी मने
 निकाले घर सुंदार, जिनकेज० ८, सेठसिघाया गांम
 अजी, सेठाणी मन उठियो पाप, रीस करी चंदनवाला
 पर, मूँदा पर दी एक दो थाप, पकड़ कतरणी माथो
 मूँखो, सभी केस कर डाल्या साफ, हाथ हथकड़ी पां-
 योंमें घेडी मूँद दई कोठामें आप, सुण, प्यारे चंदन-
 वालाकूँ मूँदी कोठा मांही, सुण प्यारे सेठाणी तो या
 अपणेपी हरसि घाई, सुण प्यारे चंदनवाला पर एसी
 आफन आई, [झेला], म्हें केसी करी कमाई, आ पूर्य जन-
 मके मांही, म्हेंधी राजाकी बाई, अब हाटोहाट बिकाई,
 जेसा बांधा जेसा भोगे जीव, अब क्यूँ झांके आल जं-
 जाल, जिनकेज० ९, घणाजी बांसें बैरमें बांध्यो, घणाजी
 थोक्कं दुखी करा बैर भाय ये जीव समझले, येतो ढाला
 नहीं दरा, महा अघोरमें पाप कीया था वृक्ष सताया
 दरादरा, रतन हींडोलेमें झूलेपी बहतो सुख सय रखा
 घरा, सुण प्यारे चंदनवालाजी अपना मन समझाती
 सुण प्यारे करने लाखों पचखाण ज्ञान गुण गाती, सुण
 प्यारे, इस संकटमें वो जरान हींघभरानी, [झेला,] जद
 सेठ गांमसे आया, घरताला जटिया पाया, जद ताला
 सेठ खोलाया पाडोसण हाल सुनाया, सेठाणी तो
 पीहर गई चंदनवाला पर कर तकरार, जिनकेज० १०,
 माहावीर सामी प्रभूजी एसो अभिग्रह लीनो घर तेरा
 जोग मिले इक दोठां, जिनके हाथसं बहकं अहार, रा-

जाकीतो कन्या होवै, मोल विकाणी बीच बजार, हाथ
 हथकड़ी पांवां घेडी, सिर मूंडा हो एसी नार, सुण प्यारे
 काछडो लग्यो तैलेको पारणो होवै, सुण प्यारे सूपडे
 आहार उडदोंका चाकला जोवै सुण प्यारे सुद्ध परणामें
 देहलीमें घेटी रोवै, एक तो पग देहली भाई, इक पग
 बाहर हो भाई, आ औसी मिले जोगवाई, नहीं मिले
 मो लेणो नाई: इतना जोग नहीं जो मिल छव महीना
 सुग तें लेखूं आहार जिनकेज० ११, धनजी कहै चंदण-
 पाला तैलेका पारना ले तूं कर, हाजर है उडदोंका चा-
 कला, विन घरतण लाउं क्यों कर, आमा सामा लग्या
 देखनं, ओर घरतण नहीं आयो निजर पदरो सूपडो
 देख्यो धनजी लिया चाकला उसमें भर सुण प्यारे सूप-
 डे माई उडदोंका चाकला लीना सुण प्यारे धनजी
 जाके चंदणपालाकूं दीना, सुण प्यारे, चंदणपाला हा-
 थोंमें सूपडा लीना, [मिला,] चंचन तेरा तोडाऊ जाकर
 लुहारकूं लाऊ मेरे मनमें में पिस्ताऊं, क्या गुण मूलाका
 गाऊं, महावीर स्वामी प्रभु करते गोचरी आनिकले ध-
 नजीकें ठार जिनकेज० १२, आपा देख्या सती मुनीकूं,
 मन इनका हो गया हरिया, आहार बहरावण लगी
 मुनीकूं महा सती सुंदर तिरिया, ओर जोग तो सय
 मिला पिण नेणोंमें जल नहीं भरिया, एक जोग नहीं
 मिला जिणीसुं वीर प्रभू पाछा फिरिया, सुण प्यारे मुनि-
 राज फिर गया आहार आप नहीं लीना सुण प्यारे
 चंदनपाला जिस घटी रोदन कीना सुण प्यारे पीछा तो
 फिरो महाराज यूं हेल्य दीना, [मिला,] चंदणपालाजी
 रोई, ये नैण बरस रहे दोई, पीछा तो फिरो निर मोही,
 मार तो संको नहीं सोई, दयावंत पर उपगारी भगवान

जाकीनो कन्या होवै, मोल बिकाणी घीच बजार, हाथ
 हथकटी पांयों पैड़ी, सिर मूंडा हो एसी नार, सुण प्यारे
 काछडो लग्यो तैलेको पारणो होवै, सुण प्यारे सुपडे
 आहार उडदोका बाकला जोवै सुण प्यारे सुद्ध परणामें
 देहलीमें पैठी रोवै, एक तो पग देहली भाई, इक पग
 बाहर हो भाई, आ औसी मिले जोगबाई, नहीं मिले
 तो लेंगो नाई; इतना जोग नहीं जो मिल छय महीना
 भुग ते लेंखुं आहार जिनकेज० ११, घनजी कहै चंदण-
 पाला तैलेका पारना ले तूं कर, हाजर है उडदोका बा-
 कला, पिन घरतण लाउं क्यों कर, आमा सामा लग्या
 देखनैं, ओर घरतण नहीं आयो निजर पटरो सुपडो
 देख्यो घनजी लिया बाकला उसमें भर सुण प्यारे सु-
 पडे मांहे उडदोका बाकला लीना सुण प्यारे धन्नाजी
 जाके चंदणबालाफूं दीना, सुण प्यारे, चंदणपाला हा-
 थोंमें सुपडा लीना, [झिला,] पंचन तेरा तोडाऊ जाकर
 लुहारफूं छांऊ मेरे मनमें में बिस्ताऊं, क्या गुण मूलाका
 गाऊं, महावीर स्वामी प्रभु करते गोचरी आनिकले ध-
 नजीकें द्वार जिनकेज० १२, आया देख्या सती मुनीफूं,
 मन इनका हो गया हरिया, आहार बहरायण लगी
 सुनीफूं महा सती सुंदर तिरिया, ओर जोग तो सप
 मिला पिण नेंणोंमें जल नहीं भरिया, एक जोग नहीं
 मिला जिणीसुं धीर प्रभू पाछा फिरिया, सुण प्यारे मुनि-
 राज फिर गया आहार आप नहीं लीना सुण प्यारे
 चंदनबाला जिस घटी रोदन कीना सुण प्यारे पीछा तो
 फिरो ग्दाराज यूं हेल्ला दीना, [झेला,] चंदणबालाजी
 रोई, ये नैण घरस रहे दोई, पीछा तो फिरो निर मोही,
 मारें तो संको नहीं सोई, दयावंत पर उपगारी भगवान

मैं संघाती, मैं मूलाका गुण गाती, मुझकूं नहीं कष्ट
 नानी हुआ कैद पदवी पानी, सेठानीकूं सेठ बुलाई
 गई मूला हो लाचार, जिनकेज० १६, आवत देखी
 मूलाकूं चंदणपाला सांझी दोहा, करी बंदना पड़ी घर-
 गमें ऊमी भई हाथ न जोडा, तेरा गुन नहीं मूलं माता
 करमोंका बंधन तोडा, क्षमा घरममें धारन कीना राग
 छेप सारा छोटा, सुण प्यारे, मैं ओगण गारी तूं गुणकी
 सागर है, सुण प्यारे. अप करो पारणो तूं सय गुनकी आग-
 रहे सुण प्यारे नगरीयाकोसंघी करदी उजागर है, झेला हुई
 मनमें घणी खुसाली, जद मूलाकें संग चाली, भोजनकी
 पुरसी धाली, पारणो करो गुणवाली, कखो पारणो चंद-
 णपाला घनजीकैघर मंगलाचार जिनकेज० १७, खोल
 ओरा देखे मूला रतनोंका भरिया भंडार उछय चंदण-
 पालाका मूलाकर रही धारमवार, बोही पायक ओर
 बोही बैस्या केर आया घनजीकैघर, इस कन्याकूं मोल
 लईमें इसघनपर मेरा इखल्यार सुण प्यारे पायक पै
 घनजीकूं बचन सुनाया, सुण प्यारे, ए रतनपर सिया
 जिस पर मेरा दाया, सुण प्यारे इस कन्याकूं तो मैं
 जहरके लाया, झेला मूलाक है बैस्या झूठी, तने मिले न
 कोही फूटी, पायक तेरी किम्मत रुठी पर्युं पिये जहर-
 की घूंरी, मूला ओर पायक बैस्या इन तीनोंके होरही
 तकरार, जिनकेज० १८, इतनेमें हलकारा राजका घन-
 जीकैघर गाय, छिपकरके ऊमा हलकारा सय
 लगी लाय, बैस्या ओर पायककूं पक-
 चेही मांय, लगे पूछने राजा इनकूं
 लाय, सुण प्यारे, चंपा नगरीका
 प्यारे, बैसी घनजीकै

धर्म संघाती, मैं मूलाका गुण गाती, मुझकूं नहीं कष्ट
 यतानी हुआ कैद पदवी पानी, सेठानीकूं सेठ बुलाई
 आई मूला हो लाचार, जिनकेज० १६, आवत देखी
 मूलाकूं चंदणपाला सांझी दोहा, करी चंदना पटी घर-
 नमें ऊभी भई हाथ न जोड़ा, तेरा गुन नहीं भूलूं माता
 करमोंका पंघन तोड़ा, क्षमा घरममें धारन कीना राग
 छेप सारा छोड़ा, सुण प्यारे, मैं ओगण गारी तूं गुणकी
 सागर है, सुण प्यारे. अब करो पारणो तूं सय गुनकी आग-
 रहें सुण प्यारे नगरीयाकोसंपी करदी उजागर है, झेला हुई
 मनमें घणी खुसाली, जद मूलाके संग चाली, भोजनकी
 पुरसी चाली, पारणो करो गुणचाली, कखो पारणो चंद-
 णपाला घनजीकैघर मंगलाचार जिनकेज० १७, खोल
 ओरा देखे मूला रतनोंका भरिया भंडार उछय चंदण-
 पालाका मूलाकर रही पारमवार, बोही पायक ओर
 बोही वैस्या फेर आया घनजीकैद्वार, इस कन्याकूं मोल
 लईमें इसघनपर मेरा इखलार सुण प्यारे पायक पै
 घनजीकूं यचन सुनाया, सुण प्यारे, व रतनपर सिया
 जिस पर मेरा दाया, सुण प्यारे इस कन्याकूं तो मैं
 जहरके लाया, झेला मूलाक है वैस्या झूठी, तने मिले न
 कोही फूटी, पायक तेरो किसत रुठी पयंपिये जहर-
 की घूटी, मूला ओर पायक वैस्या इन तीनोंके होरही
 तकरार, जिनकेज० १८, इतनेमें हलकारा राजका घन-
 जीकैघर पहुंचौ आय, छिपकरके ऊभा हलकारा सय
 सुणी घात यह कान लगाय, वैस्या ओर पायककूं पक-
 डकं ले गया देख कचेही मांय, लगे पूछने राजा इनकूं
 कैसें खड़ा किया है लाय, सुण प्यारे, चंपा नगरीका
 राजाजीकी बाई, सुण प्यारे, मैं हरलाया वैची घनजीकै

मनीकी मृणी पृकार, जिनकेज० १३, मुण करुणाका
 वचन फिर भगवान मनी पर निजर पड़ी, देख रखा
 भगवान मनीके दोनु नेणमें लगी झड़ी, जो धारासो
 जोग मिल गया आहार बहिराया उमी पड़ी, धन २
 चंदणवाला महा मनीयोमें आय हो मनी चड़ी, मुण
 प्यारे उस वल्ल मनीया देवन कारज माग, मुण प्यारे
 उमी वल्ल मनी मिणगार पमा ने धाग, मुण प्यारे
 मिहामण बैरी दोन जाय पमाग [झेला] बोचांमुं दान
 लगी देण भगवान लग ३ लगे देवता लगे हैं केणे, शुभ
 दान लगा ३ बैरी बला दान दिया बला दान दिया करे
 देवता जेजेकार विनोवन० १० माटाचारं कोट रत्नोंकी
 विरवा हूँ पणा भाग राता बजा देव दुदुभी ओर
 पण वनरा उट्टि हूँ पणा वान हणदा परमापा
 मृमा हूँ दानिया मारा जामा अपरगार मनीके द्वार
 जाय मय नरनाग मुण प्यार भगवान अभिग्रह
 सीया देवता जाण मुण प्यार मयह मुणनाहिनरे
 जोग वयाणे मुण प्यार देवताह इहणमें जाण भव्य
 पिराणे, [झेला] रसाजा पाला भाया वरं बडाहगाम
 पाया मन माटे अचरज लाया पमा क्या दान दि-
 राया भानेगं दग्गणकरण वनजीकेपरमयसंमार,
 जिनकेज० १० चंदणवाला हगो पारणां अपना कारज
 मार दिया वन ० पुरी है बटभागन धनजीकानांमउ-
 जाल दिया, ३ बट भागण कीना येनो अपने कुलकुं
 नार दिया, राग देय अहकार ईरमा चंदणवाला मार
 दिया मुणप्यारं चंदणवाला कहै अरजी एक मुणाऊं,
 मुणप्यारं पहली मेरी मानाका दग्गण पाऊं, मुण प्यारे
 दग्गण कर पहली पीछे आहार चुकाऊं, [झेला.] माना है

धर्म संघाती, मैं मूलाका गुण गाती, मुझकूं नहीं कष्ट
 यतानी हुआ कैद पदवी पानी, सेठाणीकूं सेठ बुलाई
 आई मूला हो लाचार, जिनकेज० १६, आवत देखी
 मूलाकूं चंदणवाला सांझमी दोहा, करी चंदना पदी घर-
 णमें ऊर्मी भई हाथ न जोड़ा, तेरा गुन नहीं मूला माता
 फरमोका धंधन तोड़ा, क्षमा धरममें धारन कीना राग
 डेप मारा छोड़ा, सुण प्यारे, मैं ओगण गारी तूं गुणकी
 सागर है, सुण प्यारे, अथ करो पारणो तूं मय गुणकी आग-
 रहै सुण प्यारे नगरीयाकोसंधी करदी उजागर है, झेला हुई
 मनमें घणी खुमाली, जद मूलाकै संग चाली, भोजनकी
 पुरसी धाली, पारणो करो गुणवाली, करगे पारणो चंद-
 णवाला धनजीकैपर मंगलाचार जिनकेज० १७, खोल
 ओरा देखे मूला रननोंका भरिया भंडार उछव चंदण-
 वालाका मूलाकर रही पारमवार, थोड़ी पायक ओर
 थोड़ी बैस्या केर आपा धनजीकेदार, इम कन्याकूं मोल
 लईमें इमधनपर मेरा इगल्यार सुण प्यारे पायक पै
 धनजीकूं धन सुनाया, सुण प्यारे, ए रननपर मिया
 जिन पर मेरा दाया, सुण प्यारे इम कन्याकूं तो मैंई
 जहरके लाया, झेला मूलाक है बैस्या झूठी, तने मिले न
 कोटी कूटी, पायक तेरी किस्मत झूठी कयूंपिये जहर-
 की पूंटी, मूला और पायक बैस्या इन तीनोंके दोरही
 तकरार, जिनकेज० १८, इतनेमें हटकारा राजका धन-
 जीकैपर पहुंचौ आप, छिपकरके ऊमा हलकारा मय
 सुणी बात यह कान लगाय, बैस्या ओर पायककूं पक-
 टके ले गया देख कचेही मांप, लगे दूधने राजा इनकूं
 कैसे मरि किया है लाय, सुण प्यारे, चंदा नगरीका
 राजाजीकी पार्ह, सुण प्यारे, मैं हरदाया बैसी धनजीकै

ताई, सुणप्यारे, पायक राजाकूं एसी घात सुणाई,
 [झेला,] कन्या भाणेजी हमारी, पायक आसंग क्या
 धारी, इतनेमें भीड़ भई भारी, गई वैस्या निजर चोरारी
 पायक अपणो ओसर देखकै निजर चोर कै भग गयो
 वार, जिनकेज० १९, दधियाहन राजाजी पाछा आया
 है चंपा नगरी, नहीं राणी नहीं पुत्री महलमें भूप करी
 चिंता जयरी, राजाजी परजाकूं कहै अथ वात सुणो पर-
 जासगरी, म्हारो दुखतो भूल गयो पिण धारी घणी
 चिंता लगरी, सुण प्यारे, नहीं मेरी चंदणवाला नहीं
 मेरी राणी, सुण प्यारे, घो गई किधर धेपी कोई जाती
 जाणी सुण प्यारे परजा कहै राजा राणीकी खबर क-
 राणी, [झेला,] एक सेठ कहै चिठी आई, राजाकूं यांच
 सुणाई, धन चंदणवालायाई, है नगरकोसंपीमांही,
 चंदनवालाजीके हाथ भगवान दान बहलो ततकार जि-
 नकेज० २०, चंदणवाला दान दियो आ खबर पोहचगई
 षडी २ दूर, दधियाहनराजा बोला, कन्यासुंमिलणो
 जाय जरूर, नगरकोशांभी आपाराजा हरख हुआ
 मनमें भरपूर, जाय मिला पुत्रीसैं चंदणवालाके मुखवरसे
 नूर, सुण प्यारे, पुत्रीको देख राजाकोहीयो भर आयो
 सुण प्यारे, गदगद वाणी हो गई नैणजलछायो, सुण
 प्यारे, राजा कहै पुत्री अथ जीव सुख पायो, [झेला,] सुण
 चंदणवाला प्यारी, पदमावनी माना धारी, धे सांमल
 रहीके न्यारी, सोमाथी घात बतारी, वर्त्तमान बरनो सो
 पुत्री राजाकहै कहो ततकार जिनकेज० २१, पुत्री कहै
 सुणो पिताजी होणहार है समरथवान, आप कटै हूं
 कटै मेरीमानानें नजदिया वनमें प्राण, बीच बजारै हूं
 बेचाणी कटै रह्यो यो मान गुमान घना सेठ पुत्री कर

लापा घणो बघायो म्हारो मानं सुण प्यारे राजा पुत्रीसँ
 सुणी हकीगन सारी, सुणप्यारे, राजा कहें चंपापुरीकं
 चलो मेरी पिपारी सुणप्यारे पुत्री राजासँ एसी अरज-
 गुजारी, [झेला,] में एसो अभि ब्रह्मलीनो, संसार सवी
 तज दीनो, ओ जोग मिल्यो रंगमीनो, म्हारो मन में
 हृदकीनो, जद केवल भगवनकूं ऊपजै जद में लंग्गा संज-
 मभार, जिनके ज० २२, घन्ना सेठजी धनका धेला, भर
 राजाकी भेट करी, चंदण वाला मिली पितासँ, मनकी
 यानें कही सगरी, धन्य भाग मिलगई पितासँ म्हारे
 मन एसी लगरी, दधिबाहन राजाजी पीछा आय गया
 चंपानगरी सुणप्यारे, राजाजी कहें चिंताधी म्हारे मनमें
 सुणप्यारे राणीकी चिंता घणी लगी थी तनमें, सुण-
 प्यारे पुत्रीसँ मिला जय चिंता मिटगई छिनमें, [झेला,]
 पुत्री तो हुई बहभागी, बैरागमें इछालागी संसार तुरत
 जिन त्यागी धन पिरालय दया जागी, दधिबाहन राजा
 कहें पुत्री मातपिताकूं दिया उजार जिनके ज० २३,
 पारा परस साढाछव महीना छद मसत भगवानं रया
 इझारे वर्ष पचवीस दिन इतना नपस्या में धीन गया,
 इझारा भास उगणीस दिनोंका इतरा आप पारणा कीया,
 फिर केवल भगवानकूं उपजा घणा जीधांकूं तार दिया,
 सुणप्यारे, चंदण वाला भगवानके लागी थरणा, सुण-
 प्यारे मोहें दिक्षादो म्हाराज देर नहीं करणा, सुणप्यारे
 संसार छोड में लीया आपका सरणा, [झेला,] दीक्षा लै
 जनम सुधारा, ये पंच माहा व्रत धारा, सुत्तरकी रीतसँ
 पारा, महा सतीज कारज सारा, छत्तीस हजार सत्वोंन
 चंदण वालासँ लीया संजमभार जिनके ज० २४, उग-
 णीसे गुण घास साल भादू महीना एकम बुधवार, सु-

नाई सुणाव्यास पायक राजाक गमी यान सुणाई,
 [यत्ना] कन्या भाग्यास रमारी पायक आसंग क्या
 भारी उतनमे बीर बर भारी गटे बैस्या निजर चोरारी
 पायक जपणा सोमर हर्मर निजर चोर के भग गयो
 बार जिनके ज० १० श्रीवाहन राजाजी पाछा आया
 हे चपा नमरी नरी गण नरा पत्री मज्जलमे भूप करी
 चिता चररा राजाजी परजोर हरे अथ यान सुणो पर-
 जामगरा र्यागे दानना भय गयो पिण धांगी घणी
 चिता लमरी मण प्यार नरा मरी चंदणवाला नहीं
 मेरी राणी मण प्यार यो गट फिर येवी कोई जानी
 जानी सुण प्यार परजा हरे गता राणीकी खबर क-
 राणी [यत्ना] एक मर ३२ चिरा भाटे राजाकें बांच
 सुणाटे इन चंदणवालावाट के नगरकोमेंधीमांही,
 चंदनधालाजाई या न भगवान दान बहसो ननकार जि-
 नके ज० २० चंदणवाला दान दिया आ खबर पोहचगई
 बरी ३३ इर इरियाहनराजा बोला कन्यामुंमिलणो
 जाय जरु नगरकाशावा आगाराजा हरख हुआ
 मनम भरपर जारमिला पत्रामे चंदणवालाके मुखवरसे
 नर, सुण प्यार पुत्रीको देख राजाकोईयो भर आयो
 सुण प्यार गटगट बाणी हो गट नैणजलछायो, सुण
 प्यार राजा कहे पत्री अथ जीव सुख पायो, [अन्ता,] सुण
 चंदणवाला प्यारी, पदमावनी माना धारी, थे सांमल
 रहीके प्यारी सोमार्थी यान बनारी वर्त्तमान बरनोसो
 पुत्री राजाकहे कहो ननकार जिनके ज० २१, पुत्री कहै
 सुणो पिताजी हांणहार है समरधवान, आप कठे हूं
 कठे मेरीभाताने नजदिया वनमे प्राण, बीच बजारे हूं
 बेचाणी कठे रथो यो मान गुमान भला संठ पुत्री कर

लाया घणो बधायो म्हारो मानं सुण प्यारे राजा पुत्रीसँ
 सुणी हकीगत सारी, सुणप्यारे, राजा कहे चंपापुरीकूँ
 चलो मेरी पियारी सुणप्यारे पुत्री राजासँ गसी अरज-
 गुजारी, [हेला,] में एसो अभि ग्रहलीनो, संसार सधी
 नज दीनो, ओ जोग मिल्यो रंगभीनो, म्हारो मन में
 ददकीनो, जद केवल भगवनकूँ उपजै जद में लूंगा संज-
 मभार, जिनके ज० २२, घद्या सेठजी धनका धेला, भर
 राजाकी भेट करी, चंदण वाला मिली पितासँ, मनकी
 यानें कही सगरी, धन्य भाग मिलगई पिनासँ म्हारो
 मन गसी लगरी, दधिषाहन राजाजी पीछा आय गया
 चंपानगरी सुणप्यारे, राजाजी कहै चिंताधी म्हारो मनमें
 सुणप्यारे राणीकी चिंता घणी लगी थी तनमें, सुण-
 प्यारे पुत्रीसँ मिला जय चिंता मिटगई छिनमें, [हेला,]
 पुत्री तो हुई यहभागी, यैरागमें इछालागी संसार तुरत
 जिन त्यागी धन पिरालय दया जागी, दधिषाहन राजा
 कहै पुत्री भातपिताकूँ दिया उतार जिनके ज० २३,
 यारा घरस साढाछय महीना छद भसत भगवानं रया
 इजारे वर्ष पचवीस दिन इतना तपस्या में धीत गया,
 इशारा मास उगणीस दिनोंका इतरा आप पारणा कीया,
 फिर केवल भगवानकूँ उपजा घणा जीयांकूँ तार दिया,
 सुणप्यारे, चंदण वाला भगवानके लागी चरणा, सुण-
 प्यारे मोहो दिक्षादो म्हाराज देर नहीं करणा, सुणप्यारे
 संसार छोड में लीया आपका सरणा, [हेला,] दीक्षा लै
 जनम सुधारा, ये पंच माहा व्रत धारा, सुत्तरकी रीतसँ
 पारा, महा मनीज कारज सारा, छत्तीस हजार सत्योंन
 चंदण वालासँ लीया संजमभार जिनके ज० २४, उग-
 णीसे गुण चास साल भादू महीना एकम बुधवार, सु-

रतरांम विरामण गाया चंदण यालाजीका अधिकार,
 पांच महा व्रतधारी मुनीकूं करूं बंदणा बारमथार, धन
 जायदकी रख भोमका जैन धरमका भरा भंडार, सुण-
 प्यारे अठारे पापोंकूं त्यागे बडा वो त्यागी, सुणप्यारे
 ७ पंच महाव्रत पाले चोही बैरागी, सुणप्यारे ये पाईस
 परीमा सहै मोही बडभागी, [श्लो०] ये महासती बडभा-
 गन, चंदण याला बैरागन, यो तवन सतीको धन धन,
 गुनीपेममें कियो बरनन, धनयो हे जैन धरमकूं धार लैवै
 अपना जनम सुधार जिनके ज० २५, इति पदं ॥

[अथ बैराज लावणी लिख्यते]

॥ देवत भूली ख्याल तमासा बाजी गरका है खलका
 यो संसार धुं बेंसा बादल ओस बूंद पिजली धमका,
 [दे०] सतगुरु शीघ्रतं माने क्युं नी जनम मरणका, दुख
 मिटना, दांनशील तपभाव आराधो, संसार समदका
 फंद कटना, संवर पोसा करो सामायक सुप्रसिद्धतप-
 रचित धरता, धन्याण बांणी सुणोरे सरधा पाप घटे जय
 पुन्य बधना, तयनसिद्धायां बोलो थोकडा नउं पदारथ
 मुख्यकरता, जाणपणे आ समकित फरस्यां पापकरमसुं
 रहै डरता इती बुद्ध जो नहीं हूवे तो नोकार मंग्रहिरदे
 धरता, भाव बढायां भवने छेदे मन बंछिन सय सिद्ध
 करता [उच्चावणी] चवदै पूरव विद्यासारी, भगवंत
 भाग्यो यो अधिकारी, अनंत निरयंच निरिया नरनारी,
 सरधा शुद्ध पांमे हितकारी, नोकार जप्यां उंचीगन
 पांमें सियरमणी सुख है तयका, यो संसार धुं० १, ४-
 थवी अप या तेऊ बाऊ धनस्पती या अस काया, छऊं
 कापानें मार रह्यो है आरंभ कर २ हरखाया, छेदन भे-

दन करस घासना गालीदे दे धमकाया, जिकेजिकेनें
 हुब तूं देवें घेर जीवासुं विसाया, झूठ चोरी मैधुन सेवा
 परनारीसुं बिलमाया, खाद भोग सुखरसना पोखी पर-
 भय चिंता नहीं लाया, कोडी २ माया जोडी लालच
 लोभमें यहु छाया, आमा तृष्णा भेटी नांही करना है
 भाया माया, (उडावणी) कूड कपड छल छेदर करता
 कोडीमटे तूं जा लटना, जोड २ घरमें धन घरता भायां
 कुटुंबमें ग्योटा करता, जनममरण ये घुरा जगनमें ज्यूं
 कपेजीया हमका, यो संमार० २, प्रीयमान अहंकार
 भरा है, रामदेपमें रंगराता, जालफामी दगारे फटका
 अनेक हुधर तूं चहना, मैणा मोसा देवें लोकानें सा-
 चेंनें कूडा करना, बडो आदमी बजें लोकामें मिध्यान
 तुमको मुहायता, पाप अठारे कथक्य पांघे मोह करममें
 मदमाता, अनेक बल तूं लेवें करावें पापकी पोट मांघे
 धरना, मानपिना सय कुट्य कपीला पेदा लुगाई तैरा
 धन खाना, पापशरम तूं पांघे एकलो नरक निगोदमें पड-
 जाना, [उडावणी] सय मुनलयकी मीन मगाई, पिना-
 मथारथ कर लडाई, घणा बल्लभ जो घाले घाई, पाप-
 उदे पेर नहीं कोई साई, सागर पल्योपम होना आउग्या
 मूट जाय आत्म दमका योमंमार० ३, म्हारा म्हारा
 कररगो मूरख धारा मय पेयणका है, कनककामनी कू-
 टमकपीला जमीघर देखणका है, ज्युंवडाउ धामो नियो
 पंखी पंथपयाणा है, मरखी होनो म्हारे मूरख आवर
 परभव जाणा है, मानपिना मय कूटम कपीला मिटीया
 जूं अयाणा है, बिछह जाय सय जूआ २ मोहजाल मुर-
 झाणा है, जरदा मुपारी ग्यानपांनमें मूंडां दिन हलाणा
 है, ग्याम पीवें गण्यां मारे योही जनम गमाणा है [उडा-

आनमा ज्ञानीवचन पकड़ो रस्ता, नकसी हु० १, पाच प्रकारे काम भोगनूं सेवे सेवावै सारा करना, शब्दवरण गंधरूप फरसतूं जहर स्वायकै कयूं मरता, आछी भूँडी कथा लोकारी करनां आनम भारी करना, केने मरावै केने चिसरावै हरख २ आनंद धरना, आंखवटै ओर धं-बल पावै, आपरस्त मुन्चकिम पड़ता, रोग सोग दुख कलह दालिदर दुखमें दुख पैदा करना, [उढावणी] धारी गहारी करतां दिन जावै, आमा सामा भाठा मि-हायै, सुनमें दुखतूं पैर घम्रायै, ज्युं दीपकमें पटे पनंगा घेनन दुरगति कयूं पड़ना, नकसी० २, ईतरौ तूं क्या मरावै, अणहंनका चिसराना है, पुन्यपाप जो थांथा जी-घनें बैसाही फल पाना है, किणनें माया दीयी भोगणने कोई रुखवाली करना है, जस अपजम जो लिग्या कर-ममें जैसा करज बनाना है, पाप अठारे सेंधाजीवरे इणमें सपही फसना है, स्वाद घाद मुखकाम भोगमें कूचापु-सोंका करना है, [उढावणी] रुख २ पाप थांथे तूं सोरा, उदै आपां भोगना दौरा, लखबोरासी धुगने फोडा, आकधोर ओर तुंया निपोली पापफल कडया लगना, नकसी० ३, विषाक मूत्रनें मिरगा लोदो देखो पाप उदै आपा, हाथ पांथ मुख आकार नांही राजा घर वेदा जाया, जीमण पाणी एकही सुरमें झाडा नाहा उणमें लाया, जो नदीको टोट मुमारे इनखा खेउन घकापा, नरक सराया दुख जिनभाखा मलमूत्रमें लपट रहा, अत्यंत दुर्गंध जगा गंधावै भवरे मांही ढकारहा, [उढा-वणी] गाड़ी भरियो आहार करावै, उण भवरेमें कोई घन जावै, जो जावै तो मुरछा आवै, विचित्रगति कर-मोंकी भाखी ज्ञानीवचन तूं रहडरता, नकसी० ४, गो-

जोयकै, ज्ञानी दंघपिण इम कछो निणमें मन जाणरे नि-
 टभर झटकै, प्राण पाराया तूं मती लुंठकै, जैसुम्न पायै
 धारे जीवनो, मिण २ आऊवो जाये छे झटकै, निण २
 को कर जायसी छटकै, चेनहो चेनहो मानवी ३, सुगम
 भाय मुणावै सत्यकै, आदि अनादरो छोनहीं अंतकै,
 भय २ मांहे तूं मदफियो, नवघाटी उलांवीनिं आयो दु-
 र्गम मानव भय पायकै, ऊंचनीच फुल ऊपनो सुनरमें
 चाली घणी धानकै, ओ म्हारो पापनं पाम्हारी मायकै,
 मोह मायामें फस रह्यो, मोह मित्र्या घणा रागने छेपकै,
 छारली उत्पन्न इण विधनूं देगकै, चेनहो चेनहो मानवी
 ४, नरनें नारीनो दुबारे मंजोगकै, भोगयनां मंमारना
 भोगकै, उत्पन्न जोय जीय आपणी, विस्तार भागसी
 पंदरे मांहिकै, जिण जगामें तूं ऊपनो आयकै, सांकट
 मरीररो पांधणो, नीचो है ममक ऊंचा है पापकै, छानी
 कने है मोह समापकै, नेत्र कने रहै झटिपां, आयनं
 ऊपनो उदरमाहार शुभ्र निक धरणरो कीपोनं आहारकै,
 अयनो मेगी करे रे हजारकै, धार रे धार दयाधर्म भा-
 रकै, चेनहो चेनहो मानवी ५, अशुचि जगामें ऊपनो
 जीयकै, हाथेरो नयमाम नणी न्यायकै, बसपेट ज्युं
 झटकी रपो, मानानें धुपाकै बेदानं भृगुकै, निमदिन
 भोगियो है घणो दुस्वकै, सुप्र आपारांगमें कछो, गर-
 भनं दुखरो किणारे निषोदकै, मुई सांमटी मादार्मान
 पगेदकै, अगनवरण कीयी आकरी, पांपदीयी भेनो
 सकल शरीरकै, नेसुं गरनमें हूवै अटगुणी पीडकै, सुन-
 रमें भागरपा महापीरकै, चेनहो चेनहो मानवी ६, मी-
 हारे पानक पामटं टाटकै, बयदे सोपटे नांग्रियो पाटकै,
 अटगुणी बेदनागरभमें जनननां पिन कोटगुणी पट

गाला रूपेरापालकै, मोहगी मिठाईने चावल दालकै,
 भोजन नव २ भांतरां, गींघीयो दाखपाणी पीयो ठारकै,
 मनवांरा घले पेटीजी पारकै, वसतमंगावै निका तुरत
 तइपारकै, कमी नहीं कोई धानरी, केलगर्भ हुंती ज्यांरी
 कायकै, पादल जिमगई चिलायकै, सुख जो भोगीपाहै
 भरपूरकै, देही ज्यांरी देखनां हुयगई धूढकै, चेतहो
 चेतहो मानवी १२, सोवनरा सिंहासण हींडोलाजी खा-
 टकै, विरदायली देवेछै चारण भाटकै, गिदरा डुले चायु-
 रमांनी ओटकै, जां नर नरानें काल करगयो चोटकै, पो-
 ह्या नरक दुयारे घूजै होटकै, लीजो सील दयानणी
 ओटकै, चोधाने चंदण तेल चंपेलकै, नारी मिली जांणे
 मोहन बैलकै, चालती चालें हंसगज गेलकै, भरतार
 जोडी मिली तो भणी कंचनवरणी हुती ज्यांरी देहकै,
 निणमांहे थल जल होयगई खेहकै, प्रीतम पदमणीने
 दे गयो छेहकै, साहिय राखता अधकोस नेहकै, कारभो
 जोयनकारभी देहकै, इमजांणी धरमसुं तूं राखजे नेहकै,
 चेतहो चेतहो मानवी १३, रमणी पिणराचरही संसारकै,
 नितनया करती सिणगारकै, इंद्रतणी जांणे अपछरा,
 दासी उभी रहती ये कर जोडकै, एक बुलायै तो दश
 आवै दोडकै, सेज पैठी रहती सुंदरी थापती धीडानें
 छंधनी फूलकै, कंननें पालीजी बसमानकै, हुकम घरनें
 हलायती, पेठा बहनें कुडुंय परचारकै, लोपे नहीं कोई
 तेनी कारकै, पूरपलादेखोरे पुन्यपर कारकै, पांम्या सुख
 संसारना, नितनय करती कपडां रीज लूसकै, गहणारा
 दन्धा कपडारी मंजूसकै, कामणीकनें गिणनी नहीं इती-
 सदाई लीलविलासकै, एक दिन समान जाणनी मासकै,
 निण याईरो निकल गयो सासकै, जाय मसाणायें कर-

सेना भरतारकै, जक्षरी जशमें गया, निजरा देखतां
भोगवी नारकै, छवतो पुरुष एकया नारकै, सानोईज-
णारो हुयोरे संहारकै, नरक गया घणा जावसी, परनारी
रोमोटोरे पापकै, जीधनें जोम्यो परमव स्ररापकै, चैन-
हो० १८, इसटी सांभल भगवननी पाणकै, केइपर
चेनिया चनुर मुजाणकै, परनारी धुर परिहरे आयक घन
लीयाछै पारकै, साचीजी पांमेछै समकित सारकै, पडि-
हमणाने पोसरकरै, सूर्यजी पालेछै जिनवर आणकै,
तनेहुसी देवविमाणकै, चैनहो० १९, केइयक साधारा
करै गुणग्रामकै, केहीक करै दरसनमूं कामकै, केहीक
घमणामुणे सदा केहीक नहीं सकेछै आप पिणभावना
राखेछै मनरे मांहिकै, तो पण गरज सरै घणी, केहीक
छोट दिया घरधारकै, केहीपक लीनोछै संजम भारकै,
भुगन गया घणा जावसी, इम परुपियो श्रीपृद्धमानकै,
शालमदरनें संभालो जो सुख विपाकमें चाल्योछै पा-
ठकै, कुमर सुयाह पांध्या पुन्यरा ठाठकै, चैनहो० २०,
अधर जाणजो आऊखो इसकै, अधिर जाण जो कारमी
देहकै, अधिर जोपन घन जाणजो, अधिर जाण जो पो
परवारकै, इम जांणीनें टाहो लीजो धैलारकै, दीजीपै
दांन तजिये अभिमानकै, ममना टालीनें घ्याइपै घ्या-
नकै, ज्ञान रतन जनन राखियै, मांन टालनें विनय जो-
कीजकै, सीयलपार्टीनें सोजस लीजकै, तपस्या करीनें
करम क्षय करो, करमारो यंघछै फिर घन लोभकै, तेहने
जीर्नीपांसु हुवै मोलकै चैनहो० २१, घरमपर भावै जावै
देवलोककै, मन गमना जठे मिले, थोककै रतन जडत घर
आंगणो, नाटक पडरछा यसीस प्रकारकै, कोडगमे देही-
तणा मुख भोगवै, करेजेयधारे धेइ धेई करे घणा, चोसठ

मणरा हुचैजठै मोतीकै, लाग रही जठै, शिगमिग जोनकै,
 पल सागरना आऊखा जुज लग रही जरानें भूलकै,
 आवागमण आगलगी इसी लगादूं धारे हेत जुगनतो वेगी
 मिल जाचैतनं मुगतकै, जठेरे सुखसै सासता चवद राज
 लोक ऊपर जाणकै, सिद्धसिद्धाछै तेहनो नांमकै, आवा
 गमण जठै नहीं ओ उपदेश कह्योछै एमकै, शुभ चित्त तूं
 राखजै पेमकै, गुण उपजसी अनि घणा नरनारी मनि कर-
 जो छेपकै, जो तुमें चावोछो जीवनं चैनकै, सीख सावकर
 मानं जो एमकै, चेतहो चैनहो मानवी २२, इतिपदं ॥

[अथ सात विसनकी लावणी]

॥ सात विसनमन सेवो कोइ, सय शुण उपो नरनार,
 इण सेव्यां कुण २ हुन्वपाया, सो कहं एक तार, एक चि-
 त्तसुं शुणिया सेनी, जय निकलेगा सारजी, मतसेवो
 कोइ विसन घुराछै परनिम्य देखलो, [देर,] पांड्य राजा
 मोटा राजवी, सूरधीर जोधार कृष्णशरीखा सायक
 थांहै, पोनै पल अपार, जूवै रमणरै, मांह नैस कांह,
 हारी द्रोपदा नारजी, मत २, तीनगंडरा साहवास कांह,
 रावण राज माहाराय, सनी सीताकुं लेकर आयो, बै
 ठो लंक गमाय, फीट २ हूवो मुल करै मांही, घका नर-
 कमें खापजी, मत ३, सेठ माकंदीतणाहीकरा, जिन
 रखनै जिनपाल, मदन कीवीजक्ष देवता, लिया आपरी
 लार, देवी देव्य जिनरिम्य डिगीपो तव, नाग्य दीपो तत-
 कालजी मत० ४, मांस आहारी नरवैपापी, करै जीबांरी
 घान, दांदा ज्युं चरतारहैसकांह, नहीं गिणै दीनरान,
 परमयमांहें, हूसी म्वरावी नहीं, चालै कोइ साथजी,
 मत० ५, विषय विकाररा विकल हूवोडा, रमै येस्यासुं

प्यार, नरकामांहें घणीज पड़सी, ज्युं जूलांरीमार, अग्नि
 परणी पूतलीसधारें, चांपसी हीचै मझार मत० ६, म-
 दरापान पीयनै उझ, हो ज्यावै मनमांहै, लाज धीहणा
 मानवीस फीरै, गली २ के मांह, सातविस्न इह सेवै
 जिनोंका, जनम अक्खारथ जायजी, मत० ७, चोरी करै
 पारकीस कांह, कुलनै दाग लगावै, राजादंडै लोकीक
 भंडै, फिद् २, घणो घोयावै, पांह पकड बैद्यामें नाखै,
 कोरडांरी मार लगावै जी, मत० ८, संवन उगणीसै गुणता-
 लीसै, माहावदीमझार, उदयचंदगुरु आज्ञासेनी, जोड-
 करी चितलाय, अपिहजारी बीनचैस कांहि विसन तज्यां
 सुख पायजी, मत० ९, इतिपदं ॥

[अथ धर्म वजाजकी लावणी]

॥ कसो मांन पजाजी सट्ठगुदै पूंजी मांह दुकानजी,
 [टेर.] काया रूप नगरकै मांही, घैरागमालमो जाय रज
 मिध्यामत पाहर कढायो, शुद्धभाव पाल विष्टाय हो
 कसो० १, जिनपाणीको गजलै भारी, जरा फर्क मन
 जाण, माप २ तमें सनगुरदेवै, मतकर खेचानाणहो कसो०
 २, जीवदयाका मुखमलभारी, रेसमहै संतोष, दृष्ट्यल
 जीणसमता तपोसरे, ज्ञान दांमदै रोकै कसो० ३, तप-
 स्याको बंदागरभारी, साटी झीलकी जाण, एसा व्या-
 पार करो घेतनजी, मिले तुझे निर्घाणजी कसो० ४, इतिपदं ॥

[तेरा पंथीयोंके चरचाकी लावणी]

॥ सङ्गति परतनी परा अग्रविबदल गंगधरा ये काउ ॥

॥ सदा मोहै नृत्रलगे प्यारा जिनोंसे होना निसनारा,

[अथ धूलभद्रजीकी लावणी]

॥ धूलभद्रजी कियो चोमासो दुफर २ चित्रशाला,
 प्रनियोयी पारे व्रत दीया समझाई पैदपावाला, [देर,] ज्ञा-
 नभंडारा खोल्या मुनिवर हैनजुगनकर समझावै, लख-
 चौरासी जीवाजोनिआ गतीचार कह पनलावै, तिर्यच
 नारकी ओर देवता मनुष्यगतिया कहलावै, कृत्यो काल
 अनंतनिगोदे मुरत छेदो नहीं आवै, [उढावणी] हेयो
 अजाण आंघो मिथ्यात्वी कहलावै, हेयो उजड पढ़ता
 जिन मारग मुनिलावै, कामभोग चिप जहर सरीखा
 विपाक फल मतखा आला, प्रनियो० १, जीवाजीव पुन्य
 पाप घनाया, आश्रव संपरचिनलाया, निर्जरायं अरु
 मोक्षभेदनय भिन्न २ कर घतलाया, पृथ्वी अप्प ओर
 तेऊपाऊ बनस्पती ओर तसकाया, छडंकायाका नांव
 घनाया उणकै घटमें विठलाया [उढावणी] हेयो ब्रस
 धावर सुद्धन घादर घोले, हेयो परजापना अपरजापना
 खोले, पाप अठारै सय समझाया जन्ममरणका भय
 आला प्रनियो० २, अष्टकर्मका भेद सुणाया प्रकृती
 ओर न्यारे २ समकित पांमी व्रत आदरिया पारे व्रत
 उन सुद्ध प्यारे, मोहछाक ममताने मारे तपजप करणी
 अयकारे, पक्षीघनंतर हुई श्रावगा समझगई यो सयसारे,
 हेयो दानशील तप भायफेर आराधै, हेवा सम्यर पोसा
 फेर सामायकसाधै, पटिकमणो घाकरै रोजीनां नेमधर्म
 पाले आला, प्रति० ३, व्रनपाले दोषण टाले तपजप सं-
 जम न्यप करता, पाईसपरीसा सेवै मुनीसर पारे भावना
 चित्त धरता, मद्य वचन काया वसकीनी पांशुं इंद्री
 थिर करता, चार कपाप आठमद त्यागी इच्छा रहत

सर देव घरमें जायै पूछागाछा करै शोकसी आहार
 मृदूनो बैलायै, जिसवर मुनिवर हाथ जो फरमैं सो चढ-
 भागी कहलायै [उदावणी] हेवो उपयोगमहित यसकी
 काया आनमहुं, हेवो धनधन मुनिवर भारैं अपने दमहुं,
 हे मैं जाउं बलिहारी सीस नमाउं उनहुं, साधु करणी-
 पार उन्नरणी क्षमानणा गुण हैं सवाया, वीका० २, राज
 मलजी छालचंदजी मगन चांद मुनि तपधारैं, गधूजी
 दीवान कजोही गंभीर मलजी मुम्भकारैं, आठ मुनिः संग
 आया पूजक इजा माफक रहै नारैं, माहा सनियां महा-
 राज पिराजैं सात टाणासैं अधिकारैं, सोनार्जी जिवणाजी
 कहियै पान कवर बिद्या धारैं, सिणगारांजी पेमकय-
 रजी सो भाग भूरांजीरी बलिहारैं, [उदावणी] हेवो
 स्तनर भेदे संजमका गुण छाजैं, हेवो तपस्या करकै देग्यो
 सिंघ ज्युं गाजैं, हेवो धरम करैं सो सब निर्जराकै काजैं,
 आश्रय रोकैं संपरमां हैं तप जपमें नहीं सरमायैं, वी-
 काने० ३, अनाचार धं वावन टालै नबकलपी बिहार करैं,
 पार भावना भावै मुनीसर नववाइ सुद्ध मनमें धरैं,
 दोनुं बन्धत बन्धाण घाचता अष्ट कर्मासुं मृष लरै, हेत
 जुगन दृष्टांत सबइया भिन्न भिन्न भिन्न करकै खपर पडै
 समनी परमती आवैं परिषदा पुन्यवंत दया धरम करैं,
 जिनवर पांणी अमिय समानी आराध्यां दुग्ध दूर करैं
 [उदावणी] हे गुण यहोत गुरूका केणेमें नहीं आने,
 हेवो छोडा जगन जंजाल भविकुं समझाने हेवो निज
 गुणपाने सो शिव पुरहुं जाने, तेज करण गुण करैं जि-
 यांरा ज्ञान ध्यान हुवा चितचाया वीका० ५ इति पदं ॥

किरिया पाले शुद्ध आचारे वे पंच महाव्रत मेरुसम सि-
 रघारे महाराज भव्यजीवां मन भायाजी, शिव० ३,
 फिर केईयरसांलग ज्ञान गुरांसैं लीना महाराज सालसो
 यावन जाणोजी, क्या कानी सुदिके मांह सहर रतलाम-
 पिछाणोजी, मुनि विनयवैया वध कर साता उपजाई,
 महाराज पूज्य मन अनिहरखाणोजी, हे लेयो पूज्यपद
 आज स्वयं मुन इम फुर माणोजी, [उढावणी] जय
 गुरु आग्रहसैं पूजपद मुनि लीनो, पूज मस्तक हाथ रग्व
 दित उपदेश यहू दीनो, मुनि शुद्ध भावसैं अमृत सम-
 रस भीनो, चारों संघ सन्मुख भोलावण यहू दीनो,
 महाराज चौध पूज्य स्वर्ग सिधायाजी, शिवला० ४, मु-
 निसम भाव शानि मूरत है प्यारी, महाराज संप गुण
 अघको पायाजी, ये भक्त बच्छल मुनिराज सर्वकों
 अधिक सुहायाजी, रतलाम सहर चडमासो पूरण करकै
 महाराज फेर इंदोर सिधायाजी, केई गांम नगर पुर
 बिचर यहू उपगार करायाजी, [उढावणी] मुनि जहां
 जावै जहां सयकों लागै प्यारे, क्या अमृत बांणी मूरनि
 मोहन गारे, मुनि जहां बिचरै जहां करै यहूत उपगारे,
 तपस्या सामायक पोषध व्रत यहूपारे महाराज भव्य
 मन यहू हुलसायाजी शिव० ५, फेर साल अठावन नये
 सहर पधाखा महाराज जहांमें दरशण पायाजी कांई
 रोम २ हर स्वाय दीया मेरा उमटायाजी, उस वावतधी
 मेरे मनमें गुण कथ गाऊं महाराज दिलमेरा ललचा-
 याजी पिण धिरता नहीं थी जिससैं नहीं कुछ गुण कथ
 गायाजी [उढावणी] अघ दीन दयाल दयानिधि तुम
 हो मेरे अघ रखो हमारी लाज सरण हुंतेरे, कृपाकर का-
 दोलख चौरासी फेरे, दरशण कर पीछा आया फिर

गायत्री शिवला० ९, फिर साल नेसठे रतलाम आप
 पधारे महाराज आविक आविका मनभायाजी, की
 चउमासेकी अरज पूज्यसें आण मनायाजी ये वचन पू-
 ज्यका अमृतसम नित यरसै, महाराज सुणन सहुमन
 ललचायाजी, दिवान मुसही ओरराज अहलकार केई
 आयाजी, [उटायणी] जहां मुसलमानकेई वग्याण सु-
 णवा आये, उपदेश पूज्यका सुण कर बहु हरखाये,
 जहामद मांसका त्याग किया शुद्ध भायै, फिर ठाकुर
 पचेटे काकूं मिकार छुटाये, महाराज जैन परभावक था-
 याजी, शिवलाल० १०, फिरकर चोमासोभाण पुरे पधारे,
 महाराज भव्य जीय बहु हरखायाजी, एक ठाकुरको
 समझाय वदद सेरा यचायाजी, फिरकेई जाल मछयांका
 बंध करयाये, महाराज अनिसय गुण अधिका पायाजी,
 कांई मूरत देख दिलमस्त हुयै घरम चितलायाजी, [उ-
 टायणी] जो वग्याण सुणवा एक बार कोई जायै, फिर
 नहीं कहणेका काम तुरत चल आयै, उपदेश सुणके
 दिल उनका हुलसायै, करे आपसुं पद्यवाण त्याग मन
 भायै महाराज आपका गुण बहु छायाजी, शिवला० ११,
 फिर कौटेसें अजमेर जो आप पधारे महाराज नय ठा-
 नेसें आयाजी, बहु हाव भावके साथ चोमासो जाण
 मनायाजी, अजमेर पधाला सुणके झटमें आया महाराज
 दरशण कर प्रज्ञ थायाजी हूबो हरख दिये उल्लास जोड
 कथ गुणमें गायत्री [उटायणी] कहे लालकनइया
 धीकानेरकावासी, अजमेर लावणी जोडकै गाई खासी,
 चोसठे साल असाढ एकमसुदि भासी सय आवक
 आविका सुणकै हुआ हुलासी, महाराज पूज्यका जन्मस-

तो गुणपार आवै नाई, जेसैं पंगु चढे गिरपै मनमें हरख
आनंद लाई, सुण चैराग पांमें लावणी कनीं राम कहै
सुखदाई उगणीसै पचासे चोभासो भीनासर सुखकारी
है, रुघना० ५, इति पदं ॥

[पूज श्री उदयचंदजी महर्षिजीरी लावणी]

॥ कर लै पूज चरणका ध्यान जिणासुं पांमें सुख नि-
धान, [देर,] मुरघर देश मालयै मांही जनम भोम सुधान
उज्ज्वल वंश उजागर ऊपना उदय चंद भूभान, करले०
१, देख अनंत असार जगतनें, विपकी बेल समान, सम
किनसेल संभाही सुरां, ऊठ खडेमै दान, करले० २,
ज्ञान नुरीपर चढ कर बैठा, सुमती साज पलाण, तप
तरवार ढाल धीरजकी करता अष्ट करमकी हांण, करले०
३, आदित्यजेम उद्योग करत है, मिथ्या भेटन जान,
हेत उपदेश देत सुखकारी, उपगारी पद प्राण, करले०
४, परंपरागत पद आचारज सोहत गुणकी खाण, मुनी
सारांमें वृद्ध विराजै योही इंद्र विधान करले० ५, देश २
का नरनें नारी, धरना धरणा ध्यान, पुन्यवंत यह भाग
हमारा, मिलिया दरद्राण, आन, क० ६, चारु संगके
धीच विराजै पंडितपणा बखाण, भरी सभातो एसी दीपै,
जाणे फूलण श्रीजिनवाण, क० ७, देव गुरुधरम परसादे
सदा जोत जगान हीरालाल कहै पूजजी दिन २ चढते
पान, करले० ८, इति पदं, ॥

[अथ हुकम मुनीजीकी लावणी]

॥ हुकम मुनी दीपै जगमांही मुरवीर हो रखा ऋषी
सर तपस्याके मांही, [देर,] कोटे कानीसुं आपा मुनीसर

प्यप्यारा, है कायासरीर सुंदराकार लगे बहु प्यारा है क्या
 छोटी घबमें प्रगटे हैं गुण सारा, सतसंगत साधोंकी
 करके सीमा ज्ञान अपरम पारी, पद० १, उगणीसैं अड-
 तीसे सालमें रत्नपुर लागे प्यारी, असाढ़ सुदनम्मजाण
 मंगलवार आण मुनि दीक्षाधारी, पूज उदयचंदजीकेपासैं
 महा धरत शुद्ध उधारी, रत्न चंदजी गुरु किया चरण
 चित्तदिया यह आज्ञाकारी, [उढायणी] है क्या शुद्ध
 मन चित्तसैं संजम मुनि परलीना, है क्या तजा जगत
 जंजाल दया चित्तदीना, है क्या अल्प दिनोंमें ज्ञान
 ध्यान रंग भीना, विनय विवेक नेकगुण प्रगटे क्षमा गुण-
 पर तिलजारी, पद० २, पंचमहाव्रत सूधा पालै तप जप
 संजम खप करता, दोष ययालीस टार लेवै शुद्ध आहार
 भावना चित्त धरता, धारे भेदे तपस्या करके अष्ट करमकूं
 बहरता, पालै शुद्ध आचार सूत्र अनुसार पापसैं वै ड-
 रता [उढायणी] है क्या सतरे भेदे संजम मुनिवर
 पाले, है क्या पापीस परीसाजीत दोष सहृ टाले, हैक्या
 नयकलपी विहार मुलकमें भालै, बहु बरसां लग पुज्य
 पासमें सुत्र उद्यमकीनो भारी, पद० ३, गांमनगर पुर-
 पाटण विचरे महापाल विरमचारी, नवचाहसील पार
 लोपै नहींकार जगमें महिमा सारी, गुण सत्ताईस दीपे
 मुनीसर कहूं कहांलग विस्तारी, तीन करणमें योग पाले
 शुद्धयोग निज आत्मकूं उज्यारी [उढायणी,] है क्या
 स्वमती परमती पूछै परदान आई, है क्या हेतजुगत दृष्टां-
 तसैं दै समझाई, हैक्या न्यायनीतकी रीतसैं दै पैठाई,
 यचन जिनोका सरघे सोही पांमें भयजलसैं पारी पद०
 ४, मुशालालजी महागुणधारी घालचंदजी परउपगारी,
 लालचंदजी मुनिजाण हुकम गुण खाण चंद आनमतारी,

प्यारे, महामोहन घेन्द्रसरय परबदा घरमें ज्युं भमृन धारे
 है शादलजी महाराजपै मुनीसर मोटा, है गार्गी भैयाकरे
 नरनार उमीपै महीं टोटा, हैलिया महार्यारका ओटा,
 पट्टिमणा और बोल धोकरा मीरै पायां और भापा,
 धीरज० ६, पांच महामन अंजी पालै मुत्र मिदान भण-
 नासारा, पांच सुमनी नीन मनगुमी बुद्धवार जो विम्वारा,
 पांचुं इंद्रागोपै मुनीसर पटरम छोटा मय मारा, पो-
 षणपाणी र्पायै मुनीसर माध मारग गंट पाता, हैये न-
 तरे भेदे संजम मुनियर पाले, हैये नयकल्पी पिहार मु-
 लकमें मालै, हैये बावन अनाथार टाले, पालपरूपै पर-
 भय बिना जनम मरणका भय लाया थी० ३, दोष
 पपालीम टाले मुनीसर आहार गुह्यमो घेलापै, पारे
 भेदे करे तपस्या आठ करमानें उठावै, पारे भायना
 भायै मुनीसर मर्षा जिनंसर पेघायै, निरयरा भापा बोले
 मुनीसर धरम उपदेष्टामें पिलघायै, हैये मझ्या संधारो
 सदा पलेयणा करता, हैये बाईस परीसागहे पापमें ड-
 रना, हैलिया मुक्तिमारगका रसना, हरिया भापा और
 पणणा उपयोग महिन बसकरी कापा, धीर० ४, त्यागी
 धैरागी नहीं मवादी निरा बुलाया जावै नहीं, अयसर
 देवकर घरमें जावै अजाणतयसुं आवै सही, पूछा गाछा
 पारे थोकरा माला गोली करे नहीं, अचिस बस्तुये लेवै
 बालपती दोषण लागेसो लेवै नहीं, हैये जिसपर उस
 पदभाग पहरण मुनि जावै, हैये हरवे चित्तहुलास आ-
 हार बहरायै हैयो भवसागरनिर जावै, चित्त पिस पात्र
 संजोग मुम्कल भवि जीयांकै मनभाया थी० ५, सीपल
 पालै नयवाहसुं क्षमा गवहगकुं हाथ लहा, आठकर मानें
 मारहटाया धरमधूसां बाजरहा, गुण सत्ताईम दीपे मु-

घरता, पापरूप रज दूरै हरता, जनम मरण ओर जरा
तीनोंका भय घटमें लाया, भवि० ३, नववाड शीलपाल
आठ प्रवचन चिनलाया, चार कपाय आठमद त्यागी
रागद्वेष उपशमाविया, घारे भेदे करै तपस्या जिसका
पार नाहीं, घडी तपस्या करी जिनोंनें कहूं कठाताई
[उडावणी] सोले पारणे सोले करिया, दिन घत्तीस अ-
भिग्रह शुद्ध फलिया, धोवण आगार इता तप करिया,
छुटकर तपस्या करी जिस्सीकी गिणती नहीं लाया, भवि०
४, सयादयाद इंदरी सय जीता समता चित्तधारी, धन्य
पुरुष रसना घस करता जिन पुरुषोंकी बलिहारी, पूज
पधावा बीकानेरमें हुवा उपगार भारी, सम्यर पोसा-
दया समायां नहीं आवै पारी, [उडावणी] बायोंमें त-
पस्या हुई भारी, कहां लग महिमा कहूं जिपांरी, जिन
घरकी चाहूं बलिहारी, पांच महीना सुखसैं बीता आ-
नंद बहुत पाया, भवि० ५, दोनूं यखत यखाण देवे जद
अमृतधारा बरसै भविजीय पिराणी सुण २ हरखै सम-
कित्त शुद्ध फरसैं, भयनी परमती पृष्ठ परसन दै उत्तर
सुधन्याय, कोहूमानै फोऊ नहीं मानै सय परसम भाव,
[उडावणी] न्याय नीत सय चित्तधरे हैं, पक्षपात दूर करे
हैं, जो पुरुषोंका काज सरे हैं, एसे मुनीकै धरण भेटते
दुरगति विरलाया भवि० ६, गनचंदजी गुणवान जिनोंकी
महिमा हृदछाया, कोट जिभासैं करूं गुणतो पार नहीं
पाया, बुनीलालजी चोखे चित्तसैं छोडी जगमाया, दो-
घठाणासैं कियो चोमासो भविजीव मन भाया, [उडा-
वणी] कनीराम मन उछरंग आया, बुधसारू अलप गुण
गाया, पेम मगन हुई मेरी काया, उगणीसे सैनालीस-
साल काती सुदि नवम गाया, भविजी० इति पदं ॥

रजअप सुणो हमारीरे, [टेर,] हीराटालजी पिता आपकै,
 साकरपाई मान, कडयड गांममें जनम लिपो सिरे, गां-
 धीपांरी जात लागती सपकुं प्यारीरे, श्रीकर्म० १, उग-
 णीसे गुणचालीसमें, रतनचंदजी गुरुकीना आसोज
 सुदि तेरसदिन मंगल, संजमके रंगभीनां, छोददी ममता
 सारीरे श्रीक० २, सनरे भेदे संजमधारी, दोष बघालीस
 टाले, ज्ञान ध्यान क्षमागुण भारी, जिन मारग उजवाले,
 लोभ ममताहुं मारीरे श्री० ३, ज्ञान ध्यान भणनेतणो
 सरे, उद्यम करे दिनरात, घरम ध्यानमें दिन गमेसरे
 काई, नहीं दूसरी पात, मुनी मोटा उपगारीरे, श्रीक०
 ४, धीकानेरका आयक आयिका, एककरे अरदास, चो-
 मासेरो कल्पजिकोस काई, करो धीकाणेवास, अरजली
 जो अवधारीरे, श्रीक० ५, कजोडी मलजी है गुणधंता,
 जुहारमलजी छाजै, सुरजमलजी मांगीलालजी, धर्म-
 ध्यानमें गाजै, मुनीसर सप गुणधारीरे, श्रीक० ६, धर्म-
 ध्यानका ठाठ घणेरा, तपस्या हुई अतिभारी दोनुं पावते
 बख्ताण बांचता मूरतमोहन गारीरे सुणे है सप नरना-
 रीरे श्रीक० ७, महासनियां उगणीस विराजै, अधिक
 अधिक गुण दीपै, ज्ञान ध्यान ओर करे थोकडा, आठ
 कर्म्ममें जीपै, तपस्या इण विधधारीरे, श्रीक० ८, रंग-
 जीकी धापांजीतो, नवठाणासुं सोवै, घूलांजीतो इक-
 सठकीना और घणी तपस्या होवै, करदिया अगता
 जारीरे, श्रीक० ९, खेतांजीकी लीछमांजीकै, थोक सैती-
 सको कीनो, सुगन कवरजी पानकवरजी, दोइकनीस
 जलीनो आठ ठाणा सुखकारीरे, श्रीक० १०, रतनकवर
 समुदापमें सिरे, सिरदाराजीरी चेटी, फनैकवरजी करी
 अठाई ठाणा दोष रहेली, सनियां सोभैसारीरे, श्री०

लावै सुंझतो आहार घन २ भाग उसीका जिसका हाथ
 फरसाया, अ० ६, हेजी पंचमहाव्रतधारी मुनिःकों, बंदन
 करूं त्रिकाल, समकिन होवै निरमलीस काई, पावै मं-
 गलमाल, अनार्थी मुनिसैं श्रेणिक समकिन पाया अरे०
 ७, चार मुनिःजी संग आपकै, तपसी ओर गुणधान
 कजोड़ी मलजी जुहारी लालजी अर कमलजी गुणखान,
 हेक्या मांगीलालजी चपल बुद्धि दरसाया अरे० ८,
 उगणीसे छसठकै मांही, धीकाणे चोमास, चोमासो
 फेर करो कलपतो आ सयकी अरदास, हेक्या आवड
 माहानमा छंद जोडकर गाया अरे हार० ९, इतिपद ॥

[अथ लावणी ऋषि करमचंदजीकी तीजी.]

[आलाप,] करजोडकै धीनती करूं, चरणामें शीघ्र
 न मापकै, गुरु गुणवरणन करूं, अज्ञा बडोंकी लापके १,
 मातपिता ओर जनमनगरी, कहताहूं समझायकै, कोण
 गाममें लीनी दीक्षा थोकहूंमें गायकै २, साधुसंतकी करे
 सेवा, धो नर धनुर सुजाण है, जो उनोंकी करे निंदा, धो
 मूरख नादान है ३, चार २ करताहूं अरजी तुमारे चर-
 णमें ध्यान है, करो चोमासो कलपतो अब अरज लेवो
 मान है ४,

पदकापाके पीर मुनीसर पंचमहाव्रतके धारी धीका-
 नेरमें फियो है चोमासो करमचंदजी मुनि उपगारी [टेर]
 अवल हकीगत कहूं आपकी पांच मुनिसंग आपे है,
 राजमलजी जुहारीलालजी, घनराज मन भापे है, मूर-
 जमलजी मांगीलालजी एकसे एक सवापे है, विनयवंत
 सभी संतोंहूं लल २ सीस नमापे है [उडावणी] हेथे
 पंचमहाव्रत पालो उत्तम हैं किरिया, हेसुद्ध पालो शील

सुखशाता गुणसनाईस दीपे मुनीका क्षमारास पाना,
 दोष वयालीस टाल मुनीसर निरदोषण लाता निरदो-
 षण लाना सयकू हितकारीरे गुरुशुभकारीरे, १, पंचम-
 हावन पाले मोटका जिन आज्ञाअनुसार दानदयाका
 मारग यनायै मुमती गुपनीघार दोष वग्यनको बन्नाण
 देव पाले शुद्ध आधार मुनी ब्रह्मचारीरे गुरुमुखकारीरे,
 २, मन यचन काया बसकर लीनी रागद्वेषको मार पारे
 भेदे करे तपस्या नवकल्पी करे विहार पारे भायना
 भायै मुनीसर निरवध पाले विचार क्षमासुखकारीरे
 गुरुमुखकारीरे, ३, कजोड़ी मलजी जुवारीलालजी मुनि-
 घर हितकारी, मूरजमल ओर मांगीलालजी, पांदो नर-
 नारी, पोल थोकडा सीमणकेरा आदेश करे भारी आ-
 नमको तारीरे गुरुमुखकारीरे, ४, आवक आविका अरज
 करन है, मुनिघर मुणलेणा, कलपेसो थोमास थीकाणे
 दरशण नित देणा, तेजकरण हे शरण आपकी भेटे गुरु-
 चरणा, अलप बुध माहारीरे गुरुमुखकारीरे, ५, इतिपद॥

[अथ लावणी शोभालालजी ऋषीकी ।]

॥ अथ आज्ञा नगदोष्ट विवर्त्तने ॥

॥ अरिहंत सिद्ध आचार्या उवझाया मुनीराजरे पंचप-
 रमेठी निननमूं तारण नरणजिहाजरे १, गुणयनके गुण
 गावनां पूरे जोमनकी पाजरे उत्कृष्ट रस उत्पन्न हुवै
 सारै थोसगला काजरे दौदगुणीका गुण कोई गावैगा
 दुखदरिद्र गमावैगा फल मनबंछिन पावैगा पार सागरसें
 लंघावैगा जीव मृद् काय न ह्णावैगा धर्म अहिंसा
 यतावैगा भक्ती गुरुकी जो करावैगा विधीमें सीसन

रक्षा आपसही, विनयभक्ति अपार नेकप्रकार करकै यहु
 ज्ञानलही, पूज्य श्रीमुम्ब प्रशंसा आपकी सुणीसो मुझसँ
 नजाय कही, मुझजिम्मा हेएक गुण अनेक पारकैसँ जो
 पही, [उढायणी] हेकोडकवी मिल गुणकरै कोई आ-
 पका, हेसुरपनीनल हेपारसोई आपका, हेगुदक्रिया ज्ञान
 है दोई आपका, पंचमहाग्रन पालन विचरै दोपसह दूरां
 टारी, ज्ञान० ४, पांचे मुममी सोहं मुनीसर ग्रणगुसीकै
 भंडारी, पदकायाके पीर ज्ञान गुणधीर सम दम छम
 गुणभारी, मयबाडशील पाळे मुनीसर दशविध जतीघ-
 र्मके धारी, अष्टमदको गार कपाय चार टार निजातम
 उजवारी, [उढायणी] हे मुनिचरण करण गुणधार सुणो
 नरनारी, हेदोष बैनालीस टार लेवै शुद्ध आहारी, हेपूज
 आणावरतै राखे घणो विचारी, पडिलेहण प्रतिक्रमण
 हमेसां मुपेक्षांम करता मारी ज्ञान० ५, सूत्रभगवती
 पद्मवणादी भाष विविधमुनि पुरमावै, हेनजुगत दृष्टांत
 देवै यहु संत भिन्न २ कर समझावै, अमृत समपाणी
 हमेसां दोनुंयम्बत मुनि बरसावै, सुणकै मस्त होजाय
 भव्य हरवाय भजा आनंदपावै, [उढायणी] हेमुनिनय
 निक्षेपा सप्तभंशादी जाणै, हेकरे न्यायसहित परमाण
 पक्ष नहींटाणे, हेपूछे प्रपण उत्तर देवै सूत्रप्रमाणै, त्याग
 संघ यहु हुवा वीकाणै तपस्याका नहीं आवै पारी, ज्ञान०
 ६, जाल अटमठ चोमासो वीकाणे गोभामुनिकी हृद-
 टाई मुनि देविचंद गेवर उमंग एनि श्रद्धि छिटकाई, आ-
 रजियां तेबीस ठाणैसँ ग्रण समुदायकी सुग्वदाई, करै
 तपस्या घणी स्वर्गकी अणी जनम भफलपाई [उढायणी]
 हेअपलाल कन्हइया छंद जोडकै गावै, हेसप साथ सं-
 तोंको लुल २ सीम नमावै, हेमुसपंडित प्ररोपेही अरज

सुभाव सरल माहा गुणखाणी, हेआगम अनुसारे घचन
 कहै सुखदानी, भिन्न २ ज्ञान सीखावै सयकं घचन जि-
 नोंका हँ पाळा, दुष्कर० ३, तीजांजी महाराजकी महिमा
 कहं सुणो सय नरनारी, सोहतीस भाव अहो निस जि-
 नका क्षमातणा गुण है भारी, नरम घचन निरदोष
 पोसता राखे घणो दिल विचारी, रातदिवस करै ज्ञानका
 उधम कहं कहाँलग विस्तारी, [उढावणी] हेक्या सोन-
 कंवर छगनांजी जीवणांजी सोहै, हेक्या पेमाजी यगता
 घरांजी मन मोहै, हेमाणकभूरांजी राजकंवर गुण होवै,
 हरखांजी महाराज ग्याराजी पारे ठाणा शोभे आला,
 दुष्कर० ४, नंदकवरजीकें टोलेमें गुणवंती सनियां सारी,
 एकएकसँ अधिक गुणोंमें विद्यावंत है अधिकारी, किरि-
 या पातर सरल स्वभावी सरय सती महागुणधारी, को-
 डजिहा गुण करे हो जिनूँका नहीं आवै उनका पारी,
 [उढावणी] हेक्या आघड महातमा छंद जोड गाता है,
 हेदुख जावै दूर फेर सुखसंपत्त पाता है, हेक्या आघक
 आविका दरश सदा चाता है उगणीसे ओर साठसा-
 लमें जोडकरी अनिरसाला, दुष्कर० ५, इति पदं ॥

[अथ साधपणेकी लावणी लिख्यते ।]

॥ कायामें ज्ञान कर घरा ध्यानं जिन जिगकी माया
 छोडदिपा, होगया साध सय छोड चाद जिन समता
 रस भरपूर पीया, [टेर,] झुठे मातसय घ्रात घ्रात पे सय
 स्यारधके जानलिया, परभूसँ प्रीत तज जगकी रीत श्री-
 जिन मारग पहचान लिया, भजते अरिहंत रहते एहंन
 जिन चित मनसेती ध्यान किया, होगया० १, तज हिंन्हा

तपना तेरारे, श्रीते० ४, घडे नागकूं काढउपाखा, मेल्या
 स्वर्ग महार, पद्मापति धरणेंदर हूवा, सुणा मंत्र नवकार,
 उठालिया तापसडेरारे, श्रीने० ५, कमठमर हुआ मेघ-
 माली, प्रभुहुये अणगार, मेहवरसाये प्रभु न चलिये
 रचिया फैनहजार, कमठ मन मया अछेरारे श्रीते० ६,
 धरणेंदर पदमावनी सरे, आसण अधर उठाय, उपसरग
 टाल्या प्रभुजीका, आया जिणदिसि जाय, गावै गुण प्रभु-
 फेरारे श्री० ७, पारस केवल पांमिया सिरे, तीरय धाप्या-
 चार, साधसाधयी आवक आविका इसमें फरक नसार
 जगतमें किया उजेरारे श्री० ८, चलते नागकूं जिम तुम
 ताखो, तिम प्रभु मुझतार, हिमन मलसुत कनीरामकी
 अरजीये अचधार, मेटमव २ का फेरारे श्रीने० ९, इति पदं॥

[अथ मुक्तिमार्गकी दुकरता ढाल]

॥ मुगतिरो मारग दोहलो जीया चतुर सुजाण, [देर,]
 घृषयी काया नहीं छेदिये, जाणो निज मातसमान, अ-
 सथावरयासोवसे, घणाजीया हंदीखाण, मु० १, पाणी-
 बिना परजा डुले, आसा करेरे राजान, जंचो मुखकर
 जोबना, किरपा करो भगवान, मु० २, बेघेरे फरजान
 आपरा, तोपिण नहीं मिलेधान घसको खाप धरती पडे,
 ऊभा तजदै प्राण, मु० ३, तेऊ कापारो शसनर आफरो,
 घायू देघेरे बघाय, उढता पढेरे पतंगिया, जीव घणा
 जलजाय, मु० ४, तेऊ घाजतो नीमखो, मानवभव नहीं
 पाय, निखेरे जायै निर्यचमें, घणो दुस्त्रियोरे पाय, मु० ५,

१ [घेडार पार्श्वय वरिचने एक नग लहरेने जघलहेकु बरना देवा सेव है
 वाय नरको रितावर बरवे है हलवरो पठ बदकना है मनवे नहीं.]

कर पांघियो, श्री श्रीकृष्णमुरार, आज्ञा दीधी आणंदसु,
 लेवो संजमभार, मु० २१, सादी पारे घरसां लगै, झुझ्या
 श्रीवीरजिनंद, जीवदयारो सिर सेहरो, पांघ्यो त्रिसला-
 रेनंद, मु० २२, कालोरे मुखकीयो चोरनो, फेखो नगरम-
 झार, समुद्र पाल ते देवनें, लीनो संजमभार, मु० २३,
 हिंस्यामे चोरीरी नियमा कही, लुंटे जीवांतणां धुंद, कु-
 गुस्तो भरमावियो, होरखो अंधाधुंद, मु० २४, करण
 मुनीसर इमभणे, पालोवरत अखंड, जीवदयारो धर्मआ-
 दरो, भाख्यो श्रीभगवंत, मु० २५, इति पदं ॥

[अथ श्रावककरणीकी सिन्नाय]

॥ श्रावक नाम धरायनें, एहयाकरै अकाज, निणनें
 समझु अद्वतां, मनमें आय लाज, [१, ढाल,] पांदू सोले
 जिनसो०, अंडामारीनें घटियां उडावै, सुदरी यदि फरीने
 दीखावै, त्यागे नहीं पारकी नारो, ते श्रावक किम उतर
 पारो, १, परनारीनें रहै तकना, जिम ग्रहण मांदि मंगना
 फिरता, यधन पदै अनिविकारो, २, ते०, मुख ग्यायने
 पेटभरै, विसयास देयनें घाम करै, ढाले धर्म निंद सं-
 सारो, ३, ते०, नीर अछाप्या मांदि पदै, भैमा जिम
 पैसांनिं रोल करै, पलै पीवणरो नहीं परिहारो ४, ते०,
 कंदमूल भवैनें तकै मूला, यहू बीजारांध करै होला,
 पलै पोरभवै छटसंहारो, ५, ते०, पलै गेररमेनें पालै
 अछता, परनार तकै रातुं फिरता, सपटैनो ग्यावै मारो,
 ६, ते०, अछताक जिपा मांदि मिलै, कयड़ी माटै पै-
 जार पलै, ओ उत्तमरो नहीं आचारो, ७, ते०, हुफो
 पीवैनें मदमांस भवै, रात्री भोजन निशदिवस तकै,

आपै आछीतरै, बांधे पेटनी पाल, ओमारग नहीं साधरो
 [आंकड़ी,] घेटा यह मायापना, असत्रीन भरतार, सास्र
 यह सगातणा, कहै समाचार, २ ओ०, लाभ अलाम
 भावै पले, जोतपनै जोय, जनममरण यतायदै दोष
 तीसरो होय, ३ ओ०, जात जणावै आपरी, दीनदया
 मणोपाय, आहार नभावै पातरै, मूंदोदै कुमलाय, ४
 ओ०, ओपय भैपज करै, यलेदेवै सराय, कोयकरी लड-
 विष लिये, ज्ञानी कछो पाप, ५ ओ०, मान माया लोभ
 करी, हवा दोषण दश, पहिला पछेनै साधे, करै घणो-
 जस, ६ ओ०, चारणदै विरदावली, भोजगनै भाट, अ-
 णदीयां ओगुणकरै, थोथो पैठो पाट, ७ ओ०, विद्या
 फोर कामण करै, यलै मंत्रनै चूर्न, संजोगमेलै सर्वधा,
 इसटां करै खून, ८ ओ०, उसासणारा दोषण, गलावै,
 गर्भ, उत्तम ए नहीं आदरै, साधूटालै सर्व्व, ९ ओ०,
 रसनाना लंपटीधका, मेलै आहार संजोग, आछो मि-
 लियां राजी हूवै, भूंडो मिलियां सोग, १० ओ०, ताक
 २ जावै गोचरी, लावै ताजामाल, उवास व्रत करै नही,
 कुंदा घणरछा लाल, ११ ओ०, रसनारा गिरधीधका,
 आरामें जाय, लघुता लागे लोकमें, निंया घर्मनी धाय,
 १२ ओ०, उणदिन जायसकै नहीं, रहै रातरा ध्यान,
 प्रभाते जावै तेदियो, स्युंपायो ज्ञान, १३ ओ०, भारी
 आहार भलीतरै, खावै ठंडोठार, भांगेवाड तोल्यांधका,
 पीछै हूवै भांड, १४ ओ०, बेसवार भला घालिया, भलो
 दीपो बघार, तीषण आछीतरै कियो, यले कहै छमकार,
 १५ ओ०, घावलदालमें धी घणो, सरायने खाय, चारि-
 त्रनै करै कोयलो, कछो सूत्तरमांय, १६ ओ०, निरसो
 आहार तीषणबले, नहीं मिरचनै लुंण, चारित्रमें निकले

समझकें देवो साहिब, गऊ बहुत डरती, गरीब ओर
 लाचार दीनमें, दूध पिलाकें सुख करती, ५, मेरा दुखमें
 कहूं किसीपै, कोणसुणै अरजी, ज्ञानी होयसो ज्ञानसें
 समझै, और सर्पी गरजी, ६, दूध पिलाती पूत्र जनमती,
 दुनियां पाटणकुं, जमी दारका करुं गुजारा, हासल रा-
 जाकुं ७, वैद्यकग्रंथ पढ़ा जो पूरा, मेरीकदर जाणै, शोथ
 संग्रहणी अजीर्ण खोवै, मेरी छाछ स्याणै, ८, रक्तपित्त
 दही शिम्बरन सेनी, अनीसार जावै, नैश्वरोग सय और
 रनोंपी, घास नास पावै, ९, सर्पी रोगपर दवा घृनकी,
 दवा संग बणनी, बादी पित्त सय रोग मिटावै, पसा में
 सुणनी, १०, दवा शुद्ध गोबरसें केई, गोमूत्रसें होनी,
 पांहु सोप गोमूत्रसें मिटता, जहर केई खोनी, ११, दूध
 दही घृत छाछ विगारनर, किसीकें नहीं सरता, सुप्तसें
 पल और मुझकों मारै, पसा जुटम करता, १२, दूध दही
 पी घरमें बरतै, छाछज पैदनकुं, इतने सुख मेरे संगरहतै,
 लष्ट पुष्ट तनकुं, १३, गाढी रथके पूत्र जूनतै, खेती करन-
 नकुं, इंधन ओर घरकी करै शोभा, गोबर नीपनकुं, १४,
 सुपनीके शिर चमर होलावै, शोभा बहुत करती, मैंअ-
 थला लाचार होयकर, सरणा हियेधरती, १५, इनि
 गौअरजी पदं ॥

[अथ प्रसस्ति ॥]

॥ समझिन कैलक्षण यही गुणका ग्राहक होय, जैसेकुं
 जैसा समझ, रसै विरोधनकोय, १, सम परिणामी ज्ञानका
 कपलग करुं पम्बान, अन्यमनी शुभगुण धरै, बोभी-
 नीका जाण, २, धनकण कंचन सय तजै, निष्ठाविकषा

त्याग, जिन आज्ञामें चलनजो, सोही संतवड भाग, ३; उगणीमै अडमठमें, बुधजन किया विचार, संपवडै जिन धर्ममें, नो होवै जयकार, ४, माने कर्त्ता तो कहा, नहीं मै कहा विशेष, मनमाने मानेविगर, नगई ममतारेख, ५; धर्म अनादि जैनका, देवपूज अरिहंत, शुद्धदेत उपदेशसो माधु बजैमहंत, ६, मृयादिकमें जो कहा, नय निक्षेपामूल, म्याछाद रुचि जय बडै, यही धर्म अनुकूल, ७, गोले छा-गांथीप्रवर, बींझराज सुननेक, मोहणलाल पूनमशशि, बडभागी मुखिवेक, ८, इनके कहणेसैं किया, संग्रहपाठक राम, छपायके परगट किया, तद्गतोंके काम, ९, बा-चक जीवण प्रेमचंद, अमरचंद गुणरास, बीकानेर मरुदे-शर्म, विद्याशाल प्रकाश, १०, जैसा जिसने रचदिया, मोहान्दिया मुजाण, अगर अशुद्धि होयतो मुक्त दोषण मतजाण ११, यायां भाया पदनही, मनमें हरवित होय अधिक ओछ लिखने रहा, मिच्छामि दुषडमोय १२, इति॥
